RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 जुलाई 2023
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 जुलाई 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 07
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 92
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक

पाक्षिक

“

तुम्हारे कहने का लहजा तय करता है कि
तुम्हें सम्मानित किया जाए या तिरस्कृत।

तुम मुझे पत्थर दो, मैं तुम्हें हीरा दूँगा।

कोई भी कार्य कठिन नहीं है। तुम नहीं तो
तुम्हारा कोई दूसरा भाई उसे सम्पन्न करेगा।
अब तक जितने भी सम्पन्न कार्यों को
देख रहे हो, वे मानव मन की ही
उपज हैं। अतः सब संभव है।

–आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

ज्ञान सार

अपरिग्रह

परिग्गहनिविट्ठाणं, वेरं तेसिं पवड्ढई।

-सूत्रकृतांग (1/9/3)

जो परिग्रह (संग्रह वृत्ति) में व्यस्त हैं, वे संसार में अपने प्रति वैर ही बढ़ाते हैं।

Those who are given to encumbrance only increase animosity towards themselves.

नत्थि एरिसो पासा पडिबंधो अत्थि, सव्वजीवाणं सव्वलोए।

-प्रश्नव्याकरण (1/5)

संसार में परिग्रह के समान प्राणियों के लिए दूसरा कोई जाल एवं बन्धन नहीं है।

There is no bondage and no trap, for the living beings, as strong as encumbrance.

जे सिया सन्निहिकामे, गिही पव्वइए न से

-दशवैकालिक (6/19)

जो सदा संग्रह की भावना रखता है वह साधु नहीं, किंतु साधुवेश में गृहस्थ ही है।

The monk who is given to accumulation is not a monk but a householder only.

सर्वभावेषुमूर्च्छायास्त्यागः स्यादपरिग्रहः।

-त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित

सभी पदार्थों पर से आसक्ति हटा लेना ही अपरिग्रह व्रत है।

The essence of the vow of non-encumbrance is in giving up attachment towards everything.

अतिरेगं अहिगरणं।

-ओघनिर्युक्ति (745)

आवश्यकता से अधिक एवं अनुपयोगी उपकरण (सामग्री) रखना अधिकरण (क्लेशप्रद एवं दोषरूप) हो जाते हैं।

To keep useless and unnecessary equipage becomes (flawed and miserable) encumbrance.

गंथोऽगंथो व मओ मुच्छा मुच्छाहि निच्छयओ।

-विशेषावश्यकभाष्य (2573)

निश्चयदृष्टि से विश्व की प्रत्येक वस्तु परिग्रह भी है और अपरिग्रह भी। यदि मूर्छा है तो परिग्रह है, मूर्छा नहीं है तो परिग्रह नहीं है।

From the absolute standpoint everything is encumbering and non-encumbering as well. It is encumbering if there is attachment and non-encumbering if there is not.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

अनुक्रमणिका

राम चमकते भानु समाना

स्थायी स्तम्भ

जीवनी : Five Deekshas Instead of Four – संकलित..... 08
धर्मदेशना : आहार की शुद्धि से साधना... – आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा..... 10
धर्मदेशना : जैसा खाए अन्न – आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा..... 15
ज्ञान-सार : ऐसी वाणी बोलिए – संकलित..... 19
ज्ञान-सार : श्रीमद् भगवती सूत्र – कंचन कांकरिया..... 21
तत्त्व-ज्ञान : मनुष्य के भेद – संकलित..... 22
गुरुचरण विहार – महेश नाहटा..... 77

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनन्दकुमारी – संकलित..... 23
धोवन पानी – नेहा सखलेचा..... 25
गोचरी-विवेक – प्रो. सुमेरचन्द जैन..... 26
वैज्ञानिक दृष्टि से.... – पदमचन्द गाँधी..... 65
धोवन पानी विवेक – कान्ता जैन (बैद)..... 70
गोचरी विवेक – डॉ. आभाकिरण गांधी..... 72
चारित्रात्माओं को आहार.... – संकलित..... 74

भक्ति-रस

मेरे राम – चार्वी जैन..... 14
धोवन पानी : कुछ नारे – डॉ. दिलीप धींग..... 28

चातुर्मास सूची

चातुर्मास सूची – 2023 29

जहरीला आहार साधु न ग्रहे

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

किसी भी राष्ट्र के प्रमुख व्यक्ति, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि कहीं भी जाते हैं तो उनके ठहरने के स्थान की, भोजन की पहले जाँच होती है। उसके बाद उन्हें ठहराया जाता है एवं भोजन करवाया जाता है। ऐसा नहीं होता कि कोई आ जाए और कुछ भी परोस दे। जब राष्ट्र के प्रमुख व्यक्तियों के लिए यह प्रयत्न किया जाता है तो सृष्टि के प्रमुख व्यक्तियों के लिए क्या सावधानी नहीं रखी जानी चाहिए?

संत, सृष्टि के सबसे प्रमुख हैं। संतों को अपनी साधुता के लिए सदैव सावधान रहना चाहिए। उसे जहरीला भोजन कभी नहीं करना चाहिए। जहर दो प्रकार के हैं- 1. द्रव्य विष है, जो तन को नष्ट करता है। 2. भाव विष है, जिससे साधुता का नाश होता है। साधु को दूसरे प्रकार के विष से सावधान रहना चाहिए। वह मुख्य रूप से चार प्रकार का है-

1. **आधाकर्मी-** साधु के लिए बनाया हुआ भोजन।
2. **औद्देशिक-** किसी विवक्षित साधु के लिए बनाया गया भोजन अन्य साधु ग्रहण करे।
3. **पूतिकर्म-** शुद्धाहार में थोड़ा-सा भी आधाकर्म से दूषित आहार का अंश मिल गया हो। उदाहरण के रूप में साधु निमित्त से रोटियाँ बनाई, उन पर घी लगाया, उन्हें घी से चुपड़ा गया। उन रोटियों को चुपड़ने से कुछ अंश घी में मिल गया। उस घी को दूध में डाल दे, हलवा बना दे, खिचड़ी आदि में उस घी का चम्मच भी डाल दे तो वह सारा भोजन पूतिकर्म कहा जाता है। वह भी साधु के लिए वर्जित है।
4. **मिश्रजात-** गृहस्थ और साधु के लिए एक साथ बना हुआ। उदाहरण- रोज रोटी बनाते हैं, आज बाटियाँ-खिचड़ी बना लेते हैं। हम भी खा लेंगे और संतों को भी बहरा देंगे। ये चारों प्रकार के आहार मेहरबानी करके साधु को नहीं बहराना (देना) चाहिए। साधु शुद्ध रहेगा तो धर्म का शुद्ध प्रवाह चलता रहेगा। साधु को ही यदि दूषित कर दिया तो धर्म का शुद्ध स्वरूप लुप्त होने के कगार पर होगा। संतों को भी चाहिए कि कोई राजी हो या नाराज, वह भिक्षा ग्रहण करने से पहले अवश्य पूछा करे कि यह भोजन किसने बनाया, किसके लिए बनाया? ऐसी आज्ञा शास्त्र देता है- **'कस्सट्ठा केण वा कडं'**।

अतः गवेषणा करते हुए किसी के मुलायजे में न आए। शुद्धाहार ही ग्रहण करे।

03.01.2017, पौष शुक्ल 5, मंगलवार

साभार- उपांशु

❀❀❀

सुनहरी कलम से...

चातुर्मास : आत्म उत्थान का काल

साधु-साध्वी मार्गशीर्ष से आषाढ़ तक यानी आठ मास ग्रामनुग्राम विचरण करते हुए अपनी संयम साधना करते हैं और सावन मास से कार्तिक मास तक, ये चार मास तीर्थंकर भगवन्तों की आज्ञानुसार किसी एक स्थान पर विराजते हैं क्योंकि इन चार मास में कई प्रकार से त्रस एवं स्थावर जीवों की उत्पत्ति होती है, विचरण करने से इन जीवों की विराधना की संभावना रहती है, अतः इन जीवों की रक्षा के लिए साधु-साध्वी इन चार मास में एक ही स्थान पर विराजते हैं, ये चार मास का समय **''चातुर्मास''** कहलाता है।

इस वर्ष का चातुर्मास प्रारम्भ हो चुका है, साधु-साध्वी आचार्य भगवन् की आज्ञा से स्वीकृत चातुर्मासिक प्रवास स्थल पर पहुँच चुके हैं।

चातुर्मास के समय हमें चार मास का सान्निध्य प्राप्त होता है, यह समय हमारे आत्म कल्याण के लिए बड़ा ही लाभप्रद हो सकता है क्योंकि चार मास निरन्तर सान्निध्य मिल पाना पुण्यवानी से ही सम्भव है, वरना सन्तों के दर्शन मात्र भी दुर्लभ होते हैं।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में फिर आध।
तुलसी संगत साधु की, कटे कोटि अपराध।।

तुलसीदास जी के शब्दों में- एक घड़ी, नहीं तो उससे से भी आधी या फिर उससे भी आधी घड़ी, इतना सा सान्निध्य सन्तों का मिलने से भी करोड़ों पाप कट सकते हैं तो फिर चार मास में हम कितने पापों को काट सकते हैं, यह सोचने का विषय है।

हमारे घर पर मेहमान आते हैं, हम कितने प्रसन्न होते हैं, उनकी कितनी खातिरदारी करते हैं, मेहमान या अतिथि के लिए हम अच्छी से अच्छी व्यवस्था करते हैं।

यहाँ श्रावक के बारहवें अणुव्रत में अतिथि शब्द **''साधु-साध्वी''** के लिए प्रयुक्त हुआ है। सामान्य या विशिष्ट अतिथियों के लिए बहुत तैयारियाँ करते हैं लेकिन इन पंच महाव्रतधारी अतिथियों के लिए हमें कुछ भी विशिष्ट तैयारी नहीं करनी पड़ती। हमारे घर जो कुछ भोजन, पानी हमारे लिए बनता है, उसमें से ही कुछ मात्रा में ये ग्रहण करते हैं, आवश्यकता रहती है इसमें हमारे विवेक की।

तीर्थंकर भगवन्तों ने श्रावक-श्राविका को साधु-साध्वियों के **''अम्मा-पिया''** अर्थात् माता-पिता की उपमा दी है। माता-पिता का क्या कर्त्तव्य होता है? क्या जिम्मेदारी होती है? हमारी सन्तान के जन्म से शुरु होती हुई जिम्मेदारी सदा बनी रहती है तो साधु-साध्वियों के प्रति भी हम इसी तरह सजग रहें।

साधु-साध्वी के गोचरी के लिए हमें सदैव मन में भाव रखना चाहिए कि आज साधु-साध्वी को आहार

बहराकर फिर मैं स्वयं भोजन करूँगा। साधु-साध्वी के लिए हमें कभी अपनी नियत समय से आगे या पीछे भोजन नहीं बनाना चाहिए, अधिक मात्रा में नहीं बनाना चाहिए और न ही उनके लिए विशिष्ट पदार्थ बनाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से वह भोजन उनके लिए दूषित माना जाता है, वह आहार उनके संयमी जीवन के लिए विष समान माना जाता है।

ऐसे कौन माता-पिता होंगे जो अपनी संतान को विषमय भोजन खिलाते होंगे? (जवाब होगा- कोई नहीं)। तो फिर हम साधु-साध्वियों को दूषित आहार क्यों बहराएँ? दूषित आहार उनके लिए विष समान होता है जो उनको संयम से भ्रष्ट करता है, अतः यहाँ अपने **''अम्मा-पिया''** उपमा को सार्थक करते हुए शुद्ध और निर्दोष आहार ही बहराने के लिए संकल्पित रहें।

साधुओं के गोचरी पधारते समय हम स्वयं एवं सभी परिजन अपने आपको सूझता रखें, द्रव्य को सूझता रखें, संयमी जीवन साधनामय होता है, अतः जितनी मात्रा की साधुओं को आवश्यकता हो उतनी ही मात्रा में बहराने का विवेक रखें, अधिक बहराने की भावना अवश्य रखें लेकिन साधुओं की आवश्यकता को जरूर समझने का प्रयास रखें।

चातुर्मास में ज्ञान सीखने की लालसा अवश्य रखें लेकिन यह जरूर ध्यान रखें कि हमारे ज्ञान सीखने के निमित्त से साधुओं को किसी तरह की बाधा न पहुँचे, उनके समय की अनुकूलतानुसार ही अपना ज्ञान वर्धन करें। संयमी जीवन में कई तरह की दैनिक या नियमित साधना, कार्य अनिवार्य रूप से करने होते हैं, अतः उनमें साधुओं की अनुकूलता का विशेष विवेक रखें।

वे संघ बड़े पुण्यवान है जिन्हें चातुर्मास का लाभ मिला, इस वर्ष तो उनका पुण्य सवाया है क्योंकि चातुर्मास भी चार के बजाय पाँच मास का यानी सवाया है। प्राप्त दुर्लभ अवसर का सभी विवेकपूर्वक लाभ लेवें तो चातुर्मास काल ही नहीं, हम कई भव को सुधार सकते हैं।

- सह-सम्पादिका

❀❀❀

हार्दिक बधाई

वीर पिता श्री नरेन्द्र जी गाँधी, जावद
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
के राष्ट्रीय अध्यक्ष (सत्र 2023–2025)
पद पर मनोनीत हुए।

श्रीमती पुष्पा जी मेहता, चित्तौड़गढ़
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
की राष्ट्रीय अध्यक्षा (सत्र 2023–2025)
पद पर पुनः मनोनीत हुईं।

FIVE DEEKSHAS INSTEAD OF FOUR

– Golden Glimpses of ACHARYA SHRI HUKMICHANDJI M.SA.

Continued from 15-16 June 2023 :

Dear children!

Lalchand ji paid homage to Pujya Shri's feet and clarified to the people that the fifth person is Salagram Ji Agarwal. "I took care of his upbringing as my son because he lost his parents in childhood, but until yesterday, he did not say anything on this matter.

Lalchand ji told them the entire incident of how the barber played a role in igniting the flame of vairagya in Salagram ji. How some unknown inspiration arose in his mind, and he immediately came to me after getting his head shaved and said that he also wishes to take Deeksha, and has decided to stay with us for the rest of his life."

"Having seen his firm resolution, I have adorned him in Deeksharthi's clothes. Now, I humbly request at the feet of Pujyashri that by considering him as my son along with Kewalchand, please bless them with Deeksha with my permission."

Upon hearing the words of the aspirant Lalchandji and assessing the firm conviction of Salagram ji, Pujyashri imparted the samayik conduct to all five of them per the rules. The entire Deeksha mandap reverberated with the shouts of these five newly initiated sages.

After the "Achar Vishuddhi Mahotsav" the English translated series of "Pujya Hukmesh" is presented below to make the readers aware about the life of Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa.

As soon as the five new Deeksharthi were to be declared as disciples of Muni Shri Shivlal ji M.Sa.; Muni Shri Shivlal ji M.Sa. immediately made a request saying, **"Oh Lord! From today onwards I wish to take an oath to not any disciples under me just like you."**

Then pujyashri declared that Muni Shri Chaturbhuj ji M.Sa. (Singholi) would be the guru of Muni Shri Shardul Singh ji M.Sa. and Bade Lalchand ji M.Sa. (Lodha), Chhote Lalchand ji M.Sa. (Daga) would be in the lineage of Muni Shri Harakchand ji (Sanjeetwale), and Shri Kewal Muni ji M.Sa. and Salagram ji M.Sa. would be in the lineage of their father, Muni Lalchand ji M.Sa.

PROCLAMATION

Dear children! At that very moment, respected Shriji blessed the new Deeksharthis and addressed the assembled Sangh - " 'I did not separate from Gurudev to create a new sampraday. My sole purpose was to preserve the Sadhu-life as asserted by Tirthankar-deities by following the righteous code of conduct as mentioned in the aagams.'

'Upon observing the contrary behavior of some sadhus of the Sangha, I appealed to Gurudev and the other leading sadhu-sadhvis for their correction in the practice of Deeksha. However, when no readiness was seen in anyone, I firmly resolved to follow the prescribed code of conduct and, and after informing Gurudev, embarked on a solitary retreat from Kota. Sometime later, Muni Shri Dayalchand Ji M.Sa. came to me. I informed him about the matter concerning the prescribed code of conduct as well, and when he approved of such behavior, I considered keeping him as a companion.'

'After that, when Muni Shri Shivalal Ji M.Sa. took Deeksha in Ratlam, I made him a disciple in the spiritual lineage of Muni Shri Dayal Ji M.Sa. and renounced myself off making disciples under my line. Along with him, Sadhvi Rangu Ji M.Sa. and Shri Kheta Ji M.Sa. also became supportive of this revolution with their disciples.

I give all credit for the involvement of the sadhu-sadhvis (female ascetics) in this revolution to Muni Shri Shivalal Ji M.Sa. It is due to his dedication and efforts that the chariot of this revolution is continuously moving forward. Therefore, I hold Muni Shri Shivalal Ji M.Sa. responsible for the sheltering, protection, and continuation of this entire Sangh. He should be regarded as the 'Acharya' of this Sangh and, by keeping me free from other responsibilities of the community, support me in my spiritual practice."

With this promising sentiment...

As soon as Pujya Shri Ji expressed these words, at that moment, Muni Shri Shivalal Ji M.Sa. stood up from his place and began to offer reverence and submitted a request to Pujya Shri Ji, saying, "Gurudev! I am ready to fulfill every command of yours and bear all the responsibilities, but I will always consider you as the Acharya (spiritual leader)."

After hearing this, the Sangh also offered reverence to Pujya Shri Ji and first hailed Acharya Shri Hukmichand Ji M.Sa. and then hailed Pujya Shri Shivalal Ji M.Sa. as the Yuva Acharya (Youth Acharya), and draped him with a symbolic shawl. Along with him, the entire responsibility of the Sadhvi Rangu ji M.Sa.'s Sangh was assigned to Rangu Ji M.Sa., and the burden of Sadhvi Khetaji M.Sa.'s Sangh was entrusted to Khetaji so that there would be no interference of sadhus in the management of the sadhvis.

In this way, by rearranging the Sangh, a systematic establishment of the Sadhumargi Sangh was accomplished. Subsequently, they listened to the Mangal Paath from Pujya Acharya Hukmesh, and then, followed by lunch and other activities during the Deeksha ceremony, everyone started their respective journeys in their directions.

Continued...

आहार की शुद्धि से साधना में विशुद्धि

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालालजी म.सा.

विमल जिन दीठा लोयण आज.....

इस जीवन में सबसे बड़ी यदि कोई आवश्यकता है तो वह इस जीवन की विमलता है। इस विमल स्वरूप को प्राप्त करने के लिए ही बड़े-बड़े महात्माओं ने संसार का परित्याग किया तथा वे कठोरतम आत्म-साधना में प्रवृत्त हुए। कई योगियों ने योग के माध्यम से इस विमलता का वरण करने का प्रयास किया। जितने भी साधक एवं जितने भी योगी इस विश्व के अन्दर आध्यात्मिकता के नाम से जो कुछ भी पुरुषार्थ करते हैं, उस पुरुषार्थ के पीछे इसी विमलता का ही उद्देश्य होता है तथा वास्तव में यही उद्देश्य होना चाहिए।

कइयों का यह उद्देश्य होता भी है, लेकिन उनमें से कई विमलता के स्वरूप को वस्तुतः समझ नहीं पाते हैं। कहने की दृष्टि से वे यही कहेंगे कि उनकी साधना विमलता की प्राप्ति के लिए है, लेकिन वे ज्ञानदृष्टि से यह निश्चय नहीं कर सकते हैं कि वे जो साधना कर रहे हैं, वह वास्तव में विमलता की साधना है या नहीं? लेकिन साधना यदि शुद्ध लक्ष्य के साथ बनती है तो उससे विमलता का स्वरूप प्राप्त हो सकता है। यदि लक्ष्य वास्तविक रूप में स्थिर नहीं है तो साधना भी स्थिर नहीं बनती है। योग साधना की दृष्टि से गुफाओं में ध्यान लगाया जा सकता है, प्राणायाम आदि की प्रक्रियाएँ की जा सकती हैं, लेकिन इतने मात्र से विमलता नहीं आ जाती है। प्राणायाम भी एक प्रकार की कला है और स्वासोच्छ्वास को साधने की एक पद्धति है। जब इस रूप में स्वासोच्छ्वास की क्रियाएँ की जाती हैं तो उनसे मन की एकाग्रता सधती है और उस प्राप्त एकाग्रता के बल पर आत्मसाधना के मार्ग पर प्रगति की जा सकती है।

यदि कोई साधक या साधु साधना में प्रवृत्त होता है तो उसमें आहार या भोजन भी एक सहायक तत्त्व होता है क्योंकि साधना के लिए शरीर का माध्यम आवश्यक है तो शरीर के निर्वहन के लिए आहार आवश्यक है। भोजन सीधा शरीर में पहुँचता है, लेकिन वह अपनी विभिन्न प्रक्रियाओं के जरिए मन को भी प्रभावित करता है तथा मन का प्रभाव जीवन की समस्त वृत्तियों एवं प्रवृत्तियों पर पड़े बिना नहीं रहता है। यदि भोजन अशुद्ध अथवा तामसिक होता है तो उससे मन में अशुद्धता एवं विषमता व्याप्त होती है। भोजन चलाचल की वृत्ति पैदा करने वाला होता है तो मन में अवश्य ही चंचलता फैल जाएगी और भोजन उत्तेजना पैदा करने वाला है तो मन उत्तेजित हो जाएगा। इसके विपरीत यदि भोजन शुद्ध एवं सात्विक है तो उसके प्रभाव से मन में भी नैतिकता एवं सदाशयता का उदय होगा। यद्यपि भोजन का सीधा सम्बन्ध शरीर के साथ होता है, लेकिन परोक्ष में उसका उतना ही सम्बन्ध मन के साथ में भी होता है। मन की गतिविधि से तदनुसार भोजन ग्रहण किया जाता है। दूसरे शब्दों में मुख्य रूप से मन ही

पोषण करता है जिसमें द्रव्य मन और भाव मन दोनों संयुक्त होते हैं। इसलिए मन की शुद्धि के लिए साधु को निर्दोष विधि से शुद्ध एवं सात्विक आहार ही ग्रहण करना चाहिए।

शुद्ध आहार तो शुद्ध मन और शुद्ध मन तो शुद्ध साधना

शास्त्रकारों ने संकेत दिया है-

''आहार-मिच्छे मियमेसणिज्जं.....।''

इसमें पहला शब्द है- आहार-मिच्छे अर्थात् आहार के बिना यह शरीर नहीं चलता है और यदि शरीर नहीं चलता तो मन नहीं सध सकता तथा वह धर्म-साधना का सबल माध्यम नहीं बन सकता। यह भी सही है कि मन के सधे बिना आत्मसाधना नहीं सध सकती इसलिए शास्त्रकारों ने संकेत दिया है कि मूल को पकड़ो। यदि मूल को ठीक तरह से समझ लोगे और उसके अनुसार आचरण करोगे तो आगे सफलता मिलेगी। यदि वर्णमाला का अभ्यास एक बालक ठीक तरह से कर लेता है तो फिर उसको बड़े-बड़े ग्रंथों को भी पढ़ लेने में कोई कठिनाई नहीं आएगी। आगे से आगे की परीक्षाओं में भी उसको सफलता मिलती जाएगी।

आहार की दृष्टि से शास्त्रकारों ने साधुओं के लिए जो निर्देश दिये हैं, उन पर कल कुछ विवेचन किया गया था और आज उसको और स्पष्ट किया जा रहा है। साधुओं को आहार के सम्बन्ध में 110 दोष टालने का निर्देश दिया गया हैं।

शास्त्रकारों ने इतना बारीक दृष्टिकोण आहार के सम्बन्ध में क्यों अपनाया है?

कभी साधारण व्यक्ति सोचता है कि साधु-भिक्षा लेने किसी के घर पहुँचता है, वहाँ असावधानी से बहिन सब्जी आदि किसी सचित्त पदार्थ को छू लेती है और वह साधु उस भिक्षा को छोड़कर चला जाता है। उस बहिन को कितना दु:ख होता है - इसका विचार क्यों नहीं किया जाता है? छोटे प्राणी का तो विचार किया और बड़े प्राणी का छटपटाना नहीं देखा - ऐसा क्यों? शास्त्रकारों ने इसका भी उत्तर दिया है। उनका कहना है कि साधु ऐसे आहार को ग्रहण नहीं करे। साधु के चले जाने का उस बहिन को पश्चात्ताप होगा तो आगे से वह अपने उपयोग को सावधान रखेगी। उसका वह पश्चात्ताप उसको शुभता की ओर ले जाने वाला बन जाएगा। जितने समय तक वह इस प्रकार पश्चात्ताप करेगी, उतने समय तक दान देने की शुभ भावना उसके मन में चलती रहेगी, जिससे उसके मन का शुद्धिकरण होगा। व्यक्ति शुभ कार्य के लिए जितना छटपटाता है, उतनी ही उसके मन की एकाग्रता एवं शुद्धि बढ़ती है। साधु के लिए शुद्ध आहार को ही ग्रहण करने का निर्देश भी इसी उद्देश्य के लिए है कि वह अपने मन को एकाग्र एवं शुद्ध बना सके।

दूसरी बात यह है कि साधुचर्या की मर्यादाएँ बड़ी बारीक रखी गई हैं, क्योंकि जिस साधु ने मन को साधने के लिए ही इस संसार का परित्याग किया है, उसका पहला और ऊँचा कर्त्तव्य है कि वह मन की अशुद्धियों का निवारण करे और मन को अशुद्ध बनाने वाले सभी तत्त्वों से बचकर चले। सब्जी पर पाँव रखकर उस बहिन ने वनस्पतिकाय के जीवों की

हिंसा साधु के लिए की तो साधु को सोचना होता है कि उस बहिन के अविवेक से होने वाली हिंसा से साधुमर्यादा के प्रति गलत धारणा बनती है। उस आहार को यदि साधु ग्रहण कर लेता है तो साधु को दोष भी लगता है तथा छोटे-छोटे जीवों की हिंसा के प्रति गृहस्थों की उपेक्षा दृष्टि बन जाती है तथा साधु भी लापरवाह बन जाता है। बात छोटी दिखती है लेकिन आगे चलकर उसके दुष्परिणाम बन सकते हैं। इसमें मनोवृत्ति के निर्माण का प्रश्न रहा हुआ होता है और मनोवृत्ति बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। साधुजन सारे संसार के कल्याण के प्रतीक तथा छः काया के जीवों के संरक्षक होते हैं और जो जीवन में विमलता उत्पन्न करने के लक्ष्य को लेकर चलते हैं तो उनका जीवन अमृत तुल्य बनना चाहिए। ऐसे साधु को भिक्षा के सम्बन्ध में कतई लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए, क्योंकि शुद्ध आहार का क्रम बना रहेगा तो शुद्ध मन होगा और शुद्ध मन होगा तो साधना शुद्ध बनी रहेगी। साधु के लिए मन की सावधानी तथा आत्मसाधना में एकाग्रता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है।

साधु के लिए ऐषणिक, मित एवं निर्दोष आहार का विधान

सन्त जीवन के लिए सादा और मित आहार हो, लेकिन वह ऐषणिक एवं निर्दोष भी हो। आहार में किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं होनी चाहिए, साथ ही उसको प्राप्त करने की विधि में भी कोई अशुद्धि नहीं होनी चाहिए। भोजन चाहे रूखा-सूखा या सरस हो, लेकिन साधु की जो विधि बताई गई है, उसमें कोई अशुद्धि हो, वह ठीक नहीं है। नौका में छोटा-सा सुराख होता है और उसके प्रति लापरवाही बरती जाती है तो वह छोटा सुराख ही नौका को डुबो देता है। वैसे बात छोटी दिखाई देती है कि वनस्पति में जीव होते हैं, वे दिखाई नहीं देते हैं, लेकिन जीव होते हैं, यह तीर्थंकर देवों ने बताया है और आधुनिक विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है तो उन जीवों की भी रक्षा की जानी चाहिए, तभी साधु अहिंसा का पूर्णतः पालन कर सकता है। भगवान महावीर ने बताया है कि जैसी आत्मा तुम्हारी है, वैसी ही आत्मा वनस्पति जीव की भी है। मौलिक आत्मस्वरूप की दृष्टि से मनुष्य का विकास हो गया और वनस्पति के जीव का उतना विकास नहीं हुआ। लेकिन साधु को छः काया के जीवों का प्रतिपालक होना चाहिए। कहीं भी जीवरक्षा के मामले में उसकी लापरवाही नहीं होनी चाहिए। गृहस्थ के लिए तो आरम्भ-समारम्भ की प्रवृत्तियाँ होती हैं, लेकिन सन्त जीवन के लिए ऐसी छूट नहीं है। इसलिए साधु से कहीं तनिक लापरवाही भी हो जाती है तो उसे उसका प्रायश्चित्त लेना होता है। प्रायश्चित्त लेने पर उसके कर्मबन्धन हल्के होते हैं। जो प्रायश्चित्त नहीं लेता है, वह साधु जीवन के विरुद्ध बात होती है।

भगवान ने सूक्ष्म रूप से साधु के आहार के लिए 110 दोष बताए हैं। वैसे स्थूल रूप में 42 दोष हैं। यह साधु की विधि होती है कि वह दोषों को टालकर निर्दोष आहार ग्रहण करे। इसे आहार शुद्धि कहते हैं। भोजन करते समय में भी वह 5 दोषों को टाले। यह साधु की साधना की दृष्टि से सारा विधान है। समझ लीजिए कि साधु विधि से आहार लाया और समभाव से भी ग्रहण किया, लेकिन आहार उसे अधिक भी नहीं बल्कि मित मात्रा में करना चाहिए तथा उसी आवश्यकता के अनुसार भिक्षा भी लानी चाहिए। यदि स्वाद के वशीभूत होकर वह अधिक आहार लाता है और लेता है तो वह अन्न उसके योग्य नहीं है।

चाहे भिक्षा देने वाला दातार बड़ी उज्ज्वल भावना से आहार दे, लेकिन लाने वाला साधु अपनी मित आवश्यकता के अनुसार ही ग्रहण करे। उसकी भावना उसके लिए अच्छी है, लेकिन साधु के लिए अधिक आहार लेना कतई समुचित नहीं हैं। ऐषणिक, मित एवं निर्दोष आहार के द्वारा ही साधु जीवन की परिपूर्ण साधना संभव होती है।

विमलता की साधना साधु जीवन का प्रधान लक्ष्य है। श्रावक गृहस्थाश्रम में रहते हुए अपने जीवन को पूर्णतया विमल नहीं बना सकता है, लेकिन साधु तो संसार का परित्याग करके दीक्षा ही इसलिए अंगीकार करता है कि वह जीवन को पूर्णतया विमल बनाने की साधना करे। आहार शुद्धि की दृष्टि से शास्त्रकारों ने संकेत दिया है कि-

जहा दुमस्स पुप्फेस्सु भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेई सो य पीणेइ अप्पयं।।

अर्थात् जिस प्रकार भँवरा फूल पर बैठकर इस तरह रस ग्रहण करता है कि वह फूल को किंचित्मात्र भी कष्ट नहीं देता है और अपना निर्वहन भी कर लेता है, उसी प्रकार साधु को गृहस्थ के यहाँ से भिक्षा लानी चाहिए। उसे भोजन की गवेषणा करनी चाहिए, लेकिन भोजन निर्दोष रहे इसके लिए गृहिणियों को भी पूरा विवेक रखना चाहिए। यदि वे पूरा विवेक रखें तो छोटे-छोटे जीवों की रक्षा भी होगी, भोजन भी शुद्ध रहेगा तथा साधु की गवेषणा भी सरल होकर उसको शुद्ध आहार मिल जाएगा। इस रूप में गृहस्थों की भी विमलता की साधना बन जाती है।

साधना की दृष्टि से ही साधु के लिए ऐषणिक, मित तथा निर्दोष आहार का विधान रखा गया है और उसका पालन उसके लिए अनिवार्य है।

नीति से अर्जित अन्न का विशिष्ट प्रभाव

साधु के लिए यह बात भी देखने की होती है कि जो भोजन लाया जा रहा है, वह नीति से अर्जित किये हुए अन्न से बना है या नहीं? यह जबरदस्त प्रश्न खड़ा होता है। नीति-अनीति में उथल-पुथल हो जाती है। जहाँ नीति से अर्जित अन्न का भोजन है, वह गृहस्थ के लिए भी शुद्ध है और अनीति का है तो वह गृहस्थ के लिए भी अशुद्ध है। अब यहाँ यह प्रश्न खड़ा होगा कि जो गृहस्थ के लिए भी अनीति का भोजन है और अशुद्ध है, वह साधु के लिए शुद्ध कैसे गिना जा सकता है? इसका भी शास्त्रकारों ने विश्लेषण दिया है कि गृहस्थ के लिए भोजन अर्जित करने की विधि अलग है और साधु जो भोजन प्राप्त करता है, उसकी गवेषणा की अपनी विधि अलग है। वैसे अन्न स्वयं शुद्ध या अशुद्ध नहीं होता। उसकी शुद्धाशुद्धि सामग्री जुटाने वाले की नैतिकता पर आधारित होती है।

कल्पना करें कि एक सरकारी अधिकारी हैं। उन्होंने काफी ईमानदारी रखी, लेकिन कुछ बेईमानी और अनैतिकता भी कर ली। उन्होंने रिश्वत में लिये हुए पैसों से सामान खरीदा और भोजन तैयार कराया तो वह भोजन उनके और उनके परिवार वालों के लिए अनैतिक व अशुद्ध होगा। किन्तु उनके घर में जो नौकर कार्य कर रहा है, वह अपना काम पूरी ईमानदारी और मेहनत से करता है और वह उस भोजन को करता है तो उसके लिए वह भोजन पूरी तरह नैतिक तथा शुद्ध होगा, क्योंकि उसने वह भोजन अपनी मेहनत और ईमानदारी से प्राप्त किया है। इसी तरह साधु सारे दोष टालकर विधिपूर्वक भिक्षा लेता है तो उसके लिए भी वह भोजन शुद्ध कहलाएगा। भोजन की शुद्धाशुद्धि का सम्बन्ध उसकी अपनी नैतिकता से रहता है जो उसे प्राप्त करता है।

पूणिया श्रावक के बारे में आपने सुना होगा। उनकी सामायिक विख्यात थी। वे पूर्ण विमलता का स्वरूप लेकर चलते थे। कभी भी उनके मन में चंचलता आती तो वे सोचते कि यह चल-विचल स्थिति क्यों आई है? वे अपनी धर्मसहयोगिनी पत्नी को पूछते कि कहीं अनीति का अन्न तो नहीं आ गया है। एक बार का तो उदाहरण भी है कि उनकी पत्नी बिना पूछे पड़ौसी के घर से अग्नियुक्त कण्डा (छाणा) ले आई तो उस दिन श्रावक ने चंचलता महसूस की। कहने का अभिप्राय यह है कि नीति और अनीति से अर्जित अन्न का जीवन पर तदनुसार विशिष्ट प्रभाव अवश्य पड़ता है।

साधु के जीवन में साधना की दृष्टि प्रमुख रहे

आप सोचिए कि पड़ौस के घर से एक अग्नियुक्त कण्डा (छाणा) बिना पूछे लाने को भी पूणिया श्रावक ने बड़ा अपराध माना तो आप लोगों को अनुभव करना चाहिए कि आज के सांसारिक व्यवहार-व्यापार आदि में आप लोग क्या कर रहे हैं? नैतिकता का किस रूप में पालन कर रहे हैं तथा वास्तव में जिस अन्न का आप उपयोग कर रहे हैं वह आपके लिए कितना सुखकारी अथवा अन्यथा सिद्ध होता है? लेकिन साधु-जीवन में तो साधना की ही दृष्टि प्रमुख रहनी चाहिए।

साधु का आहार-विहार सब कुछ इसी साधना की दृष्टि के अनुसार चलना चाहिए। लेकिन इस साधना के निर्वाह में गृहस्थों का भी पूरा सहयोग मिलना चाहिए। यदि गृहस्थ ही आहार को निर्दोष रखें और विवेक दिखावें तो साधु की गवेषणा का काम बहुत सरल हो जाएगा। साधु को दोष नहीं लगेगा तो उसकी साधना शुद्ध बनेगी। साधु को कभी प्रमादवश दोष भी लगे तो उसको प्रायश्चित्त के द्वारा शुद्धिकरण कर लेना चाहिए। साधु तो अपने आहार-विहार में पूरी शुद्धता से चले तथा गृहस्थों का उसको पूरा-पूरा सहयोग मिले तो उसकी साधना वास्तविक रूप से विमलता की साधना बन सकती है।

साधु के लिए सम्पूर्ण जीवन साधनामय होता है तो श्रावक के लिए भी बारह व्रतों व बारह प्रकार के तप का उल्लेख है यानी श्रावक जितने अंशों में विमलता की साधना कर सकता है, उसको अपने जीवन को नैतिक बनाते हुए करनी चाहिए। आध्यात्मिक साधना का उद्देश्य स्पष्ट है तथा साधु और श्रावक का मार्ग एक ही दिशा का है। विधि साधु की पूर्ण है तथा श्रावक की आंशिक, किन्तु अपने-अपने क्षेत्र में विकास करते हुए विमलता की साधना में उत्कृष्टतम अवस्था प्राप्त की जा सकती है।

साभार - नानेशवाणी-33 (सच्चा सौन्दर्य)

❀❀❀

भक्ति-रस

मेरे राम

-चार्वी जैन, बड़ीसादड़ी

महावीर की पाट परम्परा बनकर,
हुक्म गच्छ के सरताज सजकर,
साधना के शिखर पुरुष, आगमज्ञाता,
मेरे गुरु 'राम' बैठे हैं।
सितारों के मध्य है शशांक,
चंद्र-सी शीत, सूर्य-सा तेज,
नाना गुरु के पाट पर,
मेरे गुरु 'राम' बैठे हैं।
कथनी करनी एक समान,
उनके चरणों में बसते प्राण,
खोल अपने हृदय के द्वार,
मेरे गुरु 'राम' बैठे हैं।
धधकती कषाय ज्वाला में,
गरजती मोह अज्ञान माया में,
चंदन-सी शीतलता लिये
मेरे गुरु 'राम' बैठे हैं।
नेमि के नंदन, गवरा के लाल,
कर देते भव सागर से पार,
हम भक्तों के भगवान,
मेरे गुरु 'राम' बैठे हैं।।

❀❀❀

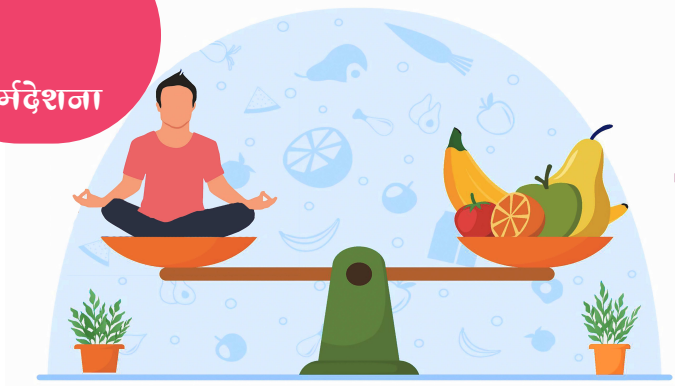

जैसा खाए अन्न

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.

शांति जिन एक मुज विनती...
जैसा खाए अन्न, वैसा रहे मन।
जैसा पीये पानी, वैसी आए वाणी।

इनको 'ठल्लक बोल' कहा जाता है। कब बने हैं? किसने बनाए हैं? यह इतिहास अपने पास में नहीं है, किंतु जिसने भी यह बोल बनाया हो, है मार्मिक और बहुत बोध देने वाला। अन्न जैसा होगा, व्यक्ति का मन वैसा ही बनेगा। भगवान महावीर की वाणी से यदि इस बात को जोड़ें तो भगवान महावीर कहते हैं-

'आहारमिच्छेमियमेसणिज्जं' अर्थात् आहार की गवेषणा करो।

भोजन की आवश्यकता रहेगी, क्योंकि शरीर भोजन के आधार पर ही टिका हुआ होता है। तपस्या एक दिन, दो दिन, तीन दिन, ज्यादा कर लें तो मासखमण, दो मासखमण, सौ मासखमण हो जाते हैं किंतु अंततोगत्वा वापस आना कहाँ पर होता है? कौनसे रास्ते पर आना होता है? भोजन के रास्ते पर ही आना होता है। मतलब यह है कि देह का संचय या देह का संवर्धन आहार से होता है, खाने से होता है, भोजन से होता है। हम जैसा खाते हैं, उसके आधार पर शरीर की परत का निर्माण होता है।

एक आदमी हिंसा करता हुआ, पंचेंद्रिय जीवों का वध करता हुआ अपने शरीर का पोषण करता है और एक व्यक्ति बहुत यतना से, सावधानी रखता हुआ लक्ष्य रखता है कि अनावश्यक रूप से किसी भी जीव की विराधना नहीं हो। जितनी शरीर को जरूरत है, जितनी परिवार को आवश्यकता है, उसके अनुसार आरंभ-समारंभ कर रहा है। आरंभ की दृष्टि से दोनों आरंभ कर रहे हैं किंतु दोनों के विचार में बहुत अंतर है। पहले वाला हिंसा की भावना से जुड़ा हुआ है, आसक्ति से जुड़ा है और दूसरा व्यक्ति केवल शरीर के पोषण के लिए, शरीर को टिकाए रखने के लिए करता है और हिंसा की भावना नहीं है, केवल अपने देश की, अपने परिवार की रक्षा की भावना है। आसक्ति जब होती है तो आसक्ति के साथ हिंसा का भाव जुड़ता है। 'किसी पदार्थ पर मेरी आसक्ति है, अब उस पदार्थ को पाने के लिए मेरा प्रयत्न होगा।'

एक उदाहरण लेते हैं। एक गोदरेज की अलमारी है। उसके भीतर सामान रखा हुआ सामान दिखता है क्या? कुछ नजर आता है क्या? यदि उसी अलमारी के कपाट पर काँच लगा हुआ है, ग्लास लगा हुआ है तो भीतर रखा हुआ सामान नजर आ सकता है या नहीं आ सकता है? नजर आ सकता है। कपाट दोनों में हैं; उसमें भी कपाट है और इसमें भी कपाट है। एक से भीतर रखा हुआ सामान नजर नहीं आता है और दूसरे से भीतर रखा हुआ सामान नजर आ जाता है। वैसे ही जो हिंसा में लगा हुआ होता है, उसके कर्मों की परत सघन हो जाती है। आत्मबोध, आत्मदर्शन उसको

सुलभ नहीं हो पाता। उसके लिए आत्मा का बोध दुर्लभ होता है, कठिन होता है। जान ही नहीं पाएगा, समझ नहीं पाएगा, क्योंकि हिंसा में जब तक मन बना रहेगा, हिंसा में जब तक मन अनुरक्त रहेगा तो वहाँ पर आत्मा का बोध कैसे होगा? आत्मबोध वहाँ जागृत होता है, जहाँ सभी आत्माओं को अपनी आत्मा के समान समझने का लक्ष्य बनता है और अपनी पीड़ा जैसे व्यक्ति को पीड़ित करती है, वैसे ही दूसरे की पीड़ा भी उसको पीड़ित करे। किसी का दु:ख-दर्द देखकर उसके भीतर प्रकंपन होता है। उसके भीतर में एक प्रकार से अनुकंपा के भाव पैदा होते हैं, संवेदन होता है, वहाँ आत्मबोध प्रकट होने के चांस रहते हैं।

सम्यक्त्व के पाँच लक्षण बताए गए हैं- शम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा और आस्था। चौथा कौनसा है? अनुकंपा।

दु:खी प्राणी को देखकर मन में कुछ होता है, मन में कंपन पैदा होता है। 'अहो! यह कितना पीड़ित हो रहा है? इसको कितना उपसर्ग आ रहा है? इसके सामने कितने कष्ट हैं?' और उन कष्टों के सामने उसकी आत्मा भी कंपायमान हो जाती है और रहम करने की दिशा में उसके मन में विचार पैदा होते हैं। उन विचारों को हम 'अनुकंपा' कहते हैं। ऐसे विचार जब पैदा होते हैं तो अपने भीतर भी आत्मबोध जागृत होता है या यूँ कहूँ कि हमें आत्मा का बोध हुआ होगा तो हमारे भीतर अनुकंपा की भावना जग पाएगी अन्यथा संसार की दशा बड़ी विचित्र है। कितने लोग रोज मरते रहते हैं, कितने लोग जन्म लेते रहते हैं, हमारा उससे कोई सरोकार नहीं है, कोई संबंध नहीं है।

कहा गया कि **'जैसा खाए अन्न, वैसा रहे मन'**। भगवान महावीर कहते हैं- **'आहारमिच्छेमियमेसणिज्जं'** अर्थात् आहार की गवेषणा करो। एषणा का अर्थ आहार की खोज। भोजन ऐसा होना चाहिए जो आपके शरीर का निर्वाह करने वाला हो। उसमें आसक्ति के भाव नहीं होने चाहिए।

साधु जब भिक्षा के लिए किसी घर में जाते हैं तो गवेषणा की विधि बताई गई है। क्यों जाते हैं संत किसी के घर में? भिक्षा के लिए जाते हैं, क्योंकि उनको स्वयं आरंभ नहीं करना है, स्वयं भोजन पकाना नहीं है। वे स्वयं आरंभ करते नहीं हैं और किसी से करवाते भी नहीं हैं और करते हुए से वे गोचरी लेते भी नहीं हैं। वे स्वयं रांधने (बनाने) की क्रिया करते नहीं हैं, दूसरे को आदेश देकर करवाते नहीं हैं। यदि हमारे निमित्त तुमने कुछ भी बनाया तो हम उसे ग्रहण नहीं करेंगे। वह हमारे लिए ग्राह्य नहीं होगा।

आचार्य पूज्य गुरुदेव का विहार चल रहा था और जैसा मैंने सुना कि लगभग तीन दिन हो गए। गोचरी होती थी किंतु साधुओं को जितनी जरूरत होती उतनी पर्याप्त नहीं हो पा रही थी। आगे के विहार के संबंध में पूछा तो गाँव का नाम याद नहीं रहा। गाँव वालों ने बताया कि तीन किलोमीटर अंदर जाने पर कुछ पाँच-सात जैनियों के घर हैं। सहज ही विचार हो गया कि जैनियों के घर होंगे तो कुछ न कुछ जानकारी रखने वाले होंगे ही, इससे कुछ सुविधा हो जाएगी। इसके लिए तीन किलोमीटर तो जाना ही पड़ेगा।

गुरुदेव पधारे उस गाँव में। गाँव वालों को मालूम पड़ा कि कोई महाराज आए हैं। उस गाँव में कोई धर्मस्थानक था नहीं। एक चबूतरा था, उस पर गुरुदेव विराज गए। एक जैनी भाई आया और वंदना की। विधि से वंदना जानता नहीं था, ऐसे ही नमस्कार किए और गुरुदेव को पूछा- 'म.सा. आप कितनी मूर्तियाँ हो? कित्तो सीधो लगाऊँ?' भोजन बनाने को सीधा लगाना बोलते हैं। कितने जनों का खाना पकाऊँ? वह

पूछ रहा है कि कितने जनों का भोजन पकाऊँ? आचार्य देव भांप गए।

मैं बता रहा था कि मुनि किसी चीज की गवेषणा करता है। वह कैसे करे? उसके लिए भगवान कहते हैं कि **'कस्सट्ठा केण वा कडं'**, यह भोजन किसने बनाया है और किसके लिए बनाया है? दूसरा आदमी क्या जानेगा कि किसलिए बनाया है? यह बनाने वाला ही बता सकता है। उस चीज को बनाने के पीछे भावना क्या है, यह किसको मालूम रहेगा? बनाने वाले को मालूम रहेगा कि किसलिए बनाया है? दूसरा आदमी कैसे बताएगा कि किसलिए बनाया है। हम लोग गोचरी के लिए जाते हैं और जब गवेषणा करते हैं तो जिनका कोई लेना-देना नहीं है, जो मेहमान बनकर आया होगा, वह भी कहता है कि 'अरे बावजी! यह तो घर में रहता ही है। यह तो बनता ही है। वह घर में रहता नहीं। आज मेहमान बनकर आया है। उसे क्या पता कि बनाने वाले ने क्यों बनाया है? फिर भी बीच में पंचायत करने वाले होते हैं। संत पूछें तो जवाब किसको देना चाहिए? जिसने वह चीज बनाई है उसको जवाब देना चाहिए और जब चार आदमी अलग-अलग जवाब देने लग जाते हैं तो कन्फ्यूजन होगा या नहीं होगा? संशय होगा या नहीं होगा? जिसने भोजन बनाया है, जिसने धोवन बनाया है, उसको जवाब देना चाहिए कि किसलिए बनाया, किसके लिए बनाया? जल्दी बनाया या टाइम पर बनाया? ज्यादा बनाया या बराबर बनाया? ये कौन जान सकता है? एक बहन के घर में पूछा तो उसने कहा कि बावजी! मुझे तो सासुजी ने आदेश दिया कि इतनी सब्जी बनानी है, इतनी रोटियाँ बनानी हैं। सासुजी जानें। उन्होंने जैसे बताया, वैसे बनाया है। क्यों बनाया, किसके लिए बनाया, यह मुझे कुछ नहीं मालूम।

कुल मिलाकर साधु की गवेषणा होती है, पूछताछ होती है। यहाँ तक भी बताया गया है कि साधु को भूखा रहना मंजूर हो जाए किंतु साधु के लिए कोई आहार बनाया गया है और उसे मालूम हो जाए तो उसको वैसा आहार ग्रहण नहीं करना। चाहे एक दिन, दो दिन या तीन दिन भूखे रहना पड़ जाए। हालाँकि ज्यादा भूखा रहना नहीं पड़ता है, क्योंकि खाना ऐसी चीज है जो हर घर में बनता है। किंतु कोई लोग भावुकता में दोष लगा लेते हैं। कोई ज्यादा बनाने में दोष लगा लेते हैं। कोई-कोई खाना बहुत जल्दी बना लेता है कि व्याख्यान होने के बाद संत आएँगे गोचरी के लिए, इसलिए चार रोटी जल्दी उतारकर चली जाऊँ। क्या होगा फिर? वह आहार दोष वाला होगा या निर्दोष होगा? वह दोष वाला होगा। इसलिए **'कस्सट्ठा केण वा कडं'**, साधु को पूछना चाहिए कि **'कस्सट्ठा'** यानी किसके लिए और **'केण'** यानी किसके द्वारा बनाया गया है। पता चल जाए कि अमुक ने बनाया है तो प्रत्युत्तर का भार उसी पर जाएगा कि किसलिए बनाया? और जब निर्दोष लगे तो ही उसको स्वीकार करना। यदि निर्दोष नहीं लगे तो उसको स्वीकार नहीं करना।

ये साधु की मर्यादा है। क्योंकि यदि उसका खाना शुद्ध नहीं होगा तो उसका मन शुद्ध कैसे रहेगा? अब हम आते हैं मूल मुद्दे पर कि साधु को मन शुद्ध रखना चाहिए या शुद्ध नहीं रखना चाहिए? साधु को

मन पवित्र रखना चाहिए या नहीं रखना चाहिए? साधु को मन शुद्ध और पवित्र रखना चाहिए और श्रावक को? श्रावक को क्या करना चाहिए? पवित्र रखना चाहिए या नहीं रखना चाहिए? वह जान रहा है कि महाराज के लिए नहीं बनाना है और इसके बावजूद यदि महाराज के लिए खाना बनाता है तो मन शुद्ध रहेगा क्या? मन पवित्र रहेगा क्या?

एक घर में संत गोचरी के लिए गए और पूछने लगे तो पुत्रवधू ने कहा कि 'बावजी! मेरे को मत पूछो, नहीं तो घर में क्लेश हो जाएगा। आपको जो पूछना है सासुजी से पूछो।' इसे क्या समझना? (थोड़ा जोर देते हुए) क्या समझना इसे? यह जान रही है किंतु बोले तो घर में क्लेश हो जाएगा। गोचरी देवे तो उसको दोष लगता है और बोलती है तो घर में क्लेश हो जाता है। वह जानती है कि ये आहार साधु को नहीं बहराना है और झूठ बोलूँ तो मैं दोष की भागी बनूँ। इसलिए वह कहती है कि 'मैं जवाब नहीं दे सकती, मेरी सासुजी से पूछो, सासुजी जानें। आप सासुजी से पूछ लो।' ऐसा क्यों हो रहा है? घर में किसके भोजन नहीं बनता है? मेरे ख्याल से सभी के घर में बनता है। आप यह बताओ कि दान का लाभ कब होता है? चार रोटी, पाँच रोटी, आठ रोटी, जितनी भी हम खाते हैं, हमारे लिए उतनी बनीं। बहुत स्पष्ट है कि हर घर में रोज-रोज ज्यादा बनेगी नहीं। रोज ज्यादा बना-बनाकर बाहर फैकेंगे नहीं।

पहले के जमाने में गाय के लिए रोटी बनाते थे, कुत्ते के लिए रोटी बनाते थे और एक रोटी क्या बोलते हैं ना? नाई और ब्राह्मण आदि के लिए एकाध रोटी बनाई जाती थी और घर में यदि टाबर (बच्चे) वगैरह होते थे तो दो रोटी ज्यादा बनाकर रख देते थे। क्योंकि उस समय चूल्हे की संस्कृति थी। चूल्हे को बार-बार कौन जलाएगा इसलिए खाना एक साथ बन जाता था। पहले चूल्हा पूरा तैयार करके फिर लगाना पड़ता था। अब तो हाथ से एक स्विच ऑन करना पड़ता है और रोटी तैयार हो जाती है। खाने का भी समय निर्धारित नहीं है। कहीं-कहीं समय निर्धारित होता होगा किंतु वहाँ भी कभी कुछ गड़बड़ियाँ हो जाती हैं। अब रोज-रोज ज्यादा बना-बनाकर फेंकने का काम कौन करेगा? और ठंडा आहार करने वाले ज्यादा होंगे नहीं। लोगों का यह मानना है कि ठंडा खाने वाले बीमार हो जाते हैं। जरूरी नहीं कि बीमार ही हो जाते हैं। कई लोग ठंडा, तीन-तीन दिनों का बासी आहार भी करने वाले मिलते हैं। मिलते हैं या नहीं मिलते हैं? आदमी पवित्र भावों से खाता है तो ठंडा आहार भी उसके लिए अमृत के समान बन जाता है, मन को शांति देने वाला बन जाता है।

जैसा खाए अन्न, वैसा रहे मन

हम जैसी चीज खाएँगे, हमारे पेट में जैसी चीजें जाएँगी, वैसे ही पेट का डाइजेशन बनेगा और वैसे ही पेट की नसें यानी कोशिकाएँ बनेंगी और उस प्रकार के संस्कार हमारे भीतर आएँगे। लोग कहते हैं कि मन नहीं लगता, जी नहीं लगता; सबका समाधान एक ही जगह पर है। पहले अपने खाने को, अपने रहने को सही बनावें। खान-पान, रहन-सहन को ठीक कर लो तो ये सारी समस्याएँ गायब हो जाएँगी।

जयं चरे जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सुवे...

भगवान ने कहा है कि सारा कार्य यतना से होगा तो उसमें कहीं पर भी मन को खराब करने की बात नहीं आएगी। मन चंगा रहेगा, मन दुरुस्त रहेगा। हमारा मन समाधि में रहेगा, मन शांति में रहेगा, ऐसा हमारा लक्ष्य बने।

साभार- सूरज की शीतल छाँव

❀❀❀

मधुर वचन

ऐसी वाणी बोलिए

15-16 जून 2023 अंक से आगे...

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा. द्वारा लिखित 'ऐसी वाणी बोलिए' धारावाहिक वाणी पर संयम, नियंत्रण एवं संतुलन का संदेश देता है। इस धारावाहिक के कई शीर्षक भाषा सुधार हेतु प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 'मित वचन' पूर्ण होने के पश्चात् 'मधुर वचन' प्रस्तुत किए जा रहे हैं। आप सभी इन वचनों को जीवन में उतारेंगे तो निश्चय की व्यवहार संतुलन की नई दिशा प्राप्त करेंगे। आगे प्रस्तुत है.....

2 उलटा जवाब देना

★ 'अणुविय वियागरे'

जो कुछ बोलें, पहले विचार कर बोलें (श्री सूत्रकृतांग सूत्र 1/9/25)

★ 'विणए ठवेज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हिय-मप्पणो'

आत्मा का हित चाहने वाले साधक स्वयं को विनय-सदाचार में स्थिर करें

(श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र 1/6)

★ **उलटा जवाब देने के मुख्य रूप से 3 कारण हैं –**

(i) **अहम (Ego) :-** जिसमें Ego ज्यादा होता है, उससे कुछ भी सहन नहीं होता। उसे लगता है मुझे कुछ भी बोला, तो बोला कैसे ? इनका जब भी Ego Hurt होता है, ये उलटा जवाब दे देते हैं।

(ii) **द्वेष का भाव :-** जिसके प्रति मन में द्वेष होता है, उसकी सही बात भी गलत ही लगती है। वो कुछ भी बोले तो व्यक्ति को गुस्सा आ जाता है और वो उलटा जवाब दे देता है।

(iii) **क्रोध अथवा तनाव :-** जब व्यक्ति परेशान होता है, तब उसकी सुनने की क्षमता कम हो जाती है। अत: वह उलटा-सीधा बोल देता है।

★ उपरोक्त तीनों कारण स्वयं के लिए ही दु:ख रूप है, इनसे हमारी पुण्यवानी क्षीण होती है और पाप कर्मों का बंध होता है।

★ उलटा जबाव देने पर हमारा मन बहुत समय तक खिन्न रहता है, जिससे हमारा समय और हमारे संबंध दोनों भी खराब हो जाते हैं।

★ हमारा जवाब देने का तरीका हमारे ही व्यक्तित्व को दर्शाता है।

★ चार तरह के विकल्प होते है :

सीधी बात का ⟶ सीधा जवाब

सीधी बात का ⟿ उलटा जवाब

उलटी बात का ⟿ सीधा जवाब

उलटी बात का ⟶ उलटा जवाब

जो विनम्र होते हैं, सरल होते हैं वे किसी भी बात का सीधा जवाब ही देते हैं।

✶ आइए अब देखते हैं कि लोग किस-किस प्रकार उलटा जवाब देते हैं और छोटी-छोटी सी परिस्थिति को जटिल बना देते हैं।

(A) किसी के द्वारा सुझाव दिये जाने पर उलटा जवाब देना –

(i) सास : थोड़ा झाड़ू रगड़ के लेना, कचरा बहुत हो रहा है।

बहू (चिढ़कर) : अच्छे से ही तो निकाल रही हूँ, संतुष्टि नहीं है तो खुद ही निकाल लो।

सही तरीका : (सहजतापूर्वक) जी या हूँ।

Note - जब इतना-सा बोलने से काम चल सकता है, तो एक्स्ट्रा क्यों बोलना।

(ii) बहू : मम्मी, बच्चों को पैसों की आदत मत डालो, बिगड़ जाएँगे।

सास (गुस्से में) : मेरे कारण बच्चे बिगड़ जाएँगे, तो मेरे पास उन्हें भेजना भी मत।

सही तरीका : (सहजतापूर्वक) तुम ठीक कहती हो। मेरे को थोड़ा कन्ट्रोल करना पड़ेगा।

Note - छोटी-सी बात में इतना हाइपर होने की क्या जरूरत है? आप छोटे की बात को सहजतापूर्वक सुनेंगे तो उनकी भी भावना बनेगी कि वो आपकी बात सुनें। अत: छोटे कुछ कह भी दें तो उसे सहजता से सुनें। आप उलटा बोलेंगे तो छोटों की Respect कम हो जाएगी।

(B) किसी के द्वारा हमारी गलती बताने पर उलटा उसी की गलतियाँ बताने लगना –

A : तुम किसी की बात नहीं सुनते ?

B (गुस्से में) : तुम कौनसा सुनते हो ? तुम भी तो अपनी मर्जी से ही हर काम करते हो ?

सही तरीका : कुछ भी जवाब देने की जरूरत नहीं है, सुनना काफी है।

Note - हमारी गलती है तो हमें सुधार कर लेना चाहिए और नहीं है तो हर छोटी बात में विवाद खड़ा नहीं करना चाहिए। कोई गुस्से में कुछ भी बोल सकता है, हम किस-किस को सफाई देने बैठेंगे? हमारे पास और भी तो बहुत सारे काम हैं। अत: समझदार श्रावक उलझना छोड़ दें।

–क्रमश:

❀❀❀

'स्वस्थ' होना आवश्यक

–आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

सफल जीवन के लिए व्यक्ति को स्वस्थ होना आवश्यक है। स्वस्थता में जो आहार ग्रहण किया जाता है उसका पाचन होकर यथोचित रस तैयार होता है। वह रस भीतरी रासायनिक प्रक्रिया से सप्त धातु रूप परिणत होता है जो शरीर को संपुष्ट करती है। बीमारी की हालत में ग्रहण किए हुए आहार का सम्यक् पाचन नहीं होता फलस्वरूप धातुएँ भी सबल नहीं होती। व्यक्ति कितना ही खाता रहे वह निर्बल का निर्बल ही बना रहता है। इसी प्रकार आत्मा जब तक मिथ्यात्व रूपी रोग से पीड़ित होती है तब तक वह संपुष्ट नहीं हो पाती। वह जो भी ग्रहण करती है उसका परिणमन सही नहीं होता जिससे उसे जो सफलता मिलनी चाहिए वह प्राप्त नहीं हो पाती अत: आत्मा का मिथ्यात्व रूपी रोग हटाकर उसे स्वस्थ बनाया जाय। उसके स्वस्थ हो जाने पर उसकी जो भी क्रिया होगी, उसका परिणमन सही होगा, जिससे वह जीवन की सफलता के चरम छोर ''मोक्ष'' को प्राप्त कर सकती है।

16 अक्टूबर, 1992

साभार– नीरव का रव

❀❀❀

ज्ञान का वर्णन शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध - ज्ञान के ही भेदों का वर्णन किया जा रहा है। इस उद्देशक के मूल पाठ में श्रीमद् नंदीसूत्र का अतिदेश (भोलावण) किया गया है, तदनुसार प्रस्तुत वर्णन है।

मन:पर्ययज्ञान

प्र. 2366 'भाव मन' रूपी है या अरूपी?

उत्तर मतिज्ञान अरूपी है इसलिए भाव मन भी अरूपी है।

प्र. 2367 भाव मन के अनुसार द्रव्य मन होता है या द्रव्य मन के अनुसार भाव मन होता है?

उत्तर भाव मन के अनुसार द्रव्य मन यानी मनोवर्गणा के पुद्गल परिणत होते हैं। भाव मन प्रशस्त तो द्रव्य मन भी प्रशस्त वर्णादि वाला होता है।

प्र. 2368 क्या छद्मस्थ जीवों में भाव मन शाश्वत है?

उत्तर मतिज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम केवलज्ञान की प्राप्ति तक कभी रुकता ही नहीं है, इसलिए भाव मन सदा रहता है।

प्र. 2369 क्या छद्मस्थ जीवों में द्रव्य मन शाश्वत है?

उत्तर द्रव्य मन संज्ञी पंचेंद्रिय अवस्था में ही होता है, इसलिए अशाश्वत है।

प्र. 2370 मन:पर्ययज्ञानी द्रव्य मन को जानते हैं या भाव मन को?

उत्तर मन:पर्ययज्ञानी द्रव्य मन को अर्थात् चिंतन-मनन करके छोड़े गए पुद्गलों को देखकर मन के भावों को जान लेते हैं।

प्र. 2371 क्या छठे गुणस्थान वाले श्रमण में मन:पर्ययज्ञान का उपयोग रह सकता है?

उत्तर हाँ, रह सकता है।

प्र. 2372 मन:पर्ययज्ञान कब तक रह सकता है?

उत्तर केवलज्ञान प्राप्ति के पूर्व तक रह सकता है।

प्र. 2373 मन:पर्ययज्ञान कितने प्रकार से उत्पन्न होता है?

उत्तर मन:पर्ययज्ञान दो प्रकार से उत्पन्न होता है- ऋजुमति और विपुलमति।

प्र. 2374 क्या मन:पर्ययज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम हीनाधिक होता है?

उत्तर हाँ, असंख्यात प्रकार का क्षयोपशम होता है। पर्यायें षट्स्थान पतित हीनाधिक होती है। जैसे- जघन्य मन:पर्यवज्ञानी से कोई अनंतवें भाग अधिक यावत् कोई अनंतगुणा अधिक जानता है।

प्र. 2375 षट्स्थान पतित किसे कहते हैं?

उत्तर पतित शब्द का अर्थ है- होना, रहना अर्थात् न्यूनाधिकता का एक स्थान, दो स्थान यावत् छह स्थान न्यूनाधिक होना। यथा- 1. अनंत भाग हीनाधिक, 2. असंख्यात भाग हीनाधिक, 3. संख्यात भाग हीनाधिक, 4. संख्यात गुण हीनाधिक, 5. असंख्यात गुण हीनाधिक, 6. अनंतगुण हीनाधिक। अनंतगुण से अधिक कोई स्थान नहीं है।

साभार- श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

- क्रमश:

❀❀❀

ज्ञान सार

श्रीमद् भगवतीसूत्र

15-16 जून 2023 अंक से आगे...

संकलनकर्ता- कंचन काँकरिया, कोलकाता

मनुष्य के भेद

15-16 जून 2023 अंक से आगे.....

टिप्पणी : जैन धर्म, तत्त्व ज्ञान, जैनधर्म का मौलिक इतिहास तथा लोकालोक आदि के बारे में सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी जन-जन के आत्मकल्याण हेतु देने का प्रयास किया जा रहा है। इसे अवश्य पढ़ें और श्रमणोपासक से जुड़े रहें।

प्रश्न 31. तीस अकर्मभूमिज के सिवाय और जगह भी युगलिक के क्षेत्र हैं? यदि हैं तो कहाँ हैं?

उत्तर लवण समुद्र में 56 अन्तरद्वीप हैं, उनमें युगलिकों के 56 क्षेत्र हैं।

प्रश्न 32. अन्तरद्वीप नाम क्यों पड़ा?

उत्तर समुद्र के अन्दर अन्तर-अन्तर पर द्वीप होने से उनका नाम अन्तरद्वीप पड़ा।

प्रश्न 33. ये अन्तरद्वीप किस आकार में रहे हुए हैं?

उत्तर दाढ़ों के आकार में।

प्रश्न 34. ऐसी दाढ़ें कितनी हैं?

उत्तर आठ।

प्रश्न 35. यह आठ दाढ़ें किस-किस पर्वत से निकली हैं?

उत्तर चार चुल्लहिमवन्त पर्वत से और चार शिखरी पर्वत से।

प्रश्न 36. चुल्लहिमवन्त और शिखरी पर्वत कहाँ हैं?

उत्तर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के उत्तर में चुल्लहिमवन्त पर्वत है और ऐरवत क्षेत्र के दक्षिण में शिखरी पर्वत है।

प्रश्न 37. चुल्लहिमवन्त व शिखरी पर्वत छोटे-बड़े हैं या एक सरीखे?

उत्तर दोनों बराबर हैं।

प्रश्न 38. चुल्लहिमवन्त और शिखरी पर्वत जमीन में कितने हैं और जमीन के ऊपर कितने ऊँचे हैं?

उत्तर जमीन में 25 योजन और ऊपर 100 योजन।

प्रश्न 39. ये चुल्लहिमवन्त और शिखरी पर्वत पूर्व-पश्चिम में लम्बे कितने हैं?

उत्तर 24932 योजन।

प्रश्न 40. ये दोनों पर्वत उत्तर-दक्षिण में कितने चौड़े हैं?

उत्तर 1052 योजन 12 कला (12/19 योजन) चौड़े हैं।

प्रश्न 41. इन प्रत्येक दाढ़ों की लम्बाई कितनी हैं?

उत्तर 8400 योजन।

प्रश्न 42. एक-एक दाढ़ पर कितने-कितने द्वीप हैं?

उत्तर सात-सात।

प्रश्न 43. जम्बूद्वीप की जगती का कोट कहाँ है?

उत्तर जम्बूद्वीप के चारों तरफ जगती का कोट है।

प्रश्न 44. जगती के कोट से कितने आगे जाने पर अन्तरद्वीप है?

उत्तर जगती के कोट से 300 योजन आगे जाएँ तब 300 योजन का लम्बा-चौड़ा पहला अंतरद्वीप आता है। वहाँ से 400 योजन आगे जाएँ तब 400 योजन का लम्बा-चौड़ा दूसरा अंतरद्वीप आता है और वहाँ से 500 योजन दूर 500 योजन का लम्बा-चौड़ा तीसरा अंतरद्वीप है। वहाँ से 600 योजन जाएँ तब 600 योजन लम्बा-चौड़ा चौथा अंतरद्वीप, वहाँ से 700 योजन आगे जाएँ तब 700 योजन का लम्बा-चौड़ा पाँचवाँ अंतरद्वीप और 800 योजन जाएँ तब 800 योजन का लम्बा-चौड़ा छठा अंतरद्वीप आता है। वहाँ से 900 योजन आगे जाएँ तब 900 योजन का सातवाँ अंतरद्वीप आता है। इस तरह से 8 दाढ़ों में मिलकर 56 अंतरद्वीप लवण समुद्र में पानी के तल से ढ़ाई योजन से ज्यादा ऊँचे हैं।

साभार- जैन तत्त्व निर्णय

-क्रमशः

15-16 जून 2023 अंक से आगे.....

धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

(आप सभी के समक्ष एक धारावाहिक 'धर्ममूर्ति आनंदकुमारी' के नाम से चल रहा है। आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगूजी म.सा. की पट्टधर महासती आनंदकँवरजी का जीवन चरित्र प्रतिमाह आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत हो रहा है।)

सत्य के द्वार पर

मनुष्य का जीवन संगति के कारण बदलता रहता है। उसे जैसी संगति मिलती है वैसे ही विचार और आचरण बनते जाते हैं। पारस पत्थर के सम्पर्क में आकर लोहा भी सोना बन जाता है तो मनुष्य का तो कहना ही क्या! वह तो चेतन और बुद्धिमान प्राणी है। उसका रंग बदलते क्या देर लगती है! भगवान महावीर के सत्संग में आकर अर्जुन मालाकार जैसा हत्यारा, जो 1141 मनुष्यों की हत्या करने वाला था, थोड़ी देर में ही क्षमाशील बन गया और एक व्यसनी-भंगेड़ी-गंजेड़ी और जुआरी की संगति पाकर अच्छा मनुष्य वैसा ही बन जाता है। दोनों ही मनुष्य हैं-

हाँ तो आनन्दकुमारी जी अभी तक जैनधर्म के विषय में इतनी विज्ञ नहीं थी, फिर भी एक ऊँची साधना की अधिकारिणी बन गई। यह सब किसकी सहायता से? यह सत्संगति के ही अद्भुत प्रभाव का फल था। आनन्दकुमारी जी की बड़ी बहिन थीं फूलकँवरबाई। वे वास्तव में फूल जैसे गुणों वाली थीं। उनका जीवन भी धार्मिक था और उन्होंने जब सुना कि मेरी बहन के पति का वियोग हो गया है, वह दाम्पत्य के बन्धन को तोड़कर निमुक्त हो गई है, तो उसे भी धर्म की सच्ची राह बतलानी चाहिए। फूल केवल अपनी शोभा के लिए ही नहीं खिलता है, वह उसकी संगति में आने वाले दूसरों को भी सुगन्ध प्रदान करता है। फूलकँवरबाई ने अपने सच्चे धर्म की सुगन्ध से अपनी छोटी बहन को भी तृप्त करना चाहा। उन दिनों आप पीहर चली आई थीं। फूलकँवरबाई भी पीहर ही थीं। आपको भी वह अक्सर कहा करती थीं- ''तुम्हें अपना जीवन अब परमात्म-भजन में बिताना चाहिए। मैं अवसर आने पर तुम्हें धार्मिक बातें भी बताऊँगी और तुम्हें सच्चे धर्म का बोध भी कराऊँगी।''

फूलकँवरबाई इस फिराक में थी ही कि कोई भाग्यवती साध्वीजी म.सा. यहाँ पधार जाएँ तो मैं अपनी बहन को उनके पास ले जाकर धर्म का स्वरूप समझाऊँ।

देवयोग से एक दिन फूलकँवरबाई अपने पीहर आ रही थीं। रास्ते में आपको एक महासतीजी के दर्शन हो गए। वह जैन साध्वी थी आनन्दकुमारी जी महाराज। वे स्थानकवासी सम्प्रदाय में उच्च कोटि की साध्वी गिनी जाती थीं और जैनाचार्य परम पूज्य 1008 श्री हुक्मीचन्दजी म.सा. की सम्प्रदाय के तत्कालीन पट्टधर जैनाचार्य 1008 श्री उदयसागरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी थीं। वे उस समय मालवदेश से विहार करके जनता को भगवान महावीर की अमृतवाणी का पान कराती हुई सोजत नगर में पधारी। साथ में दो महासतियाँ- क्रमशः साध्वी श्री केशरकुमारीजी म.सा. एवं साध्वी श्री लक्ष्मीकुमारीजी म.सा. थे। वे तेजस्विनी वैराग्यवती प्रवर्तिनी श्री रंगूजी म.सा. की सम्प्रदाय की अनुयायिनी थीं। सोजत में वे महासतियाँजी हिमावतों के वास में ठहरी थीं। उसी वास में फूलकँवरबाई का पीहर था। फूलकँवरबाई वैसे तो जैन सम्प्रदायान्तर्गत मूर्तिपूजक सम्प्रदाय को मानने वाली थीं, पर उनका आग्रह किसी ओर ज्यादा नहीं था। वे गुण को महत्त्व देती थीं और समझदार भी थीं। महासती **श्री आनन्दकुमारी जी म.सा.** के प्रभावशाली चेहरे को देखकर आप बड़ी प्रभावित हुईं। महासतीजी के त्याग और वैराग्य को देखकर फूलकँवरबाई के हृदय में भी धर्मजिज्ञासा प्रकट हुई। उनके मन में भी महासतीजी के प्रति श्रद्धा का अंकुर पैदा हो गया। फूलकँवरबाई ने महासतीजी से निवेदन किया- ''महाराज! हम तो दूसरे मार्ग को मानने वाले हैं। हैं तो जैन ही। हमें आपके साधुमार्गी सम्प्रदाय से विशेष परिचय नहीं है। आप मुझे अपने धर्म का कुछ परिचय दीजिये। मैं समझती हूँ कि आप हमारे ही भाग्य से यहाँ पधारी हैं और जैनधर्म के सच्चे आदर्शों पर चलने वाली हैं।''

महासतीजी- ''बहन, तुम जो कहती हो, वह ठीक है। मैं तो श्री जैन संघ की एक तुच्छ सेविका हूँ। मैंने यह बाना इसीलिए धारण किया है कि मैं अपना भी कल्याण करूँ और दूसरों का भी। जो भी मेरी संगति में आवें, मैं उन्हें सफल जीवन बनाने की सच्ची बातें बताना चाहती हूँ। मेरा तो यह कर्त्तव्य ही है और धर्म तो कोई मत, सम्प्रदाय या पन्थ जैसी चीज नहीं। मतों, पन्थों या सम्प्रदायों में धर्म का पुट रह सकता है, पर मत, पंथ या सम्प्रदाय ही धर्म हों, यह बात नहीं है। मत, पंथ, सम्प्रदाय आदि तो धर्मपालन करने के साधन हैं। जैनधर्म संसार के लिए सबसे उच्च संदेश देने आया है। वह संसार के कीचड़ में फँसे हुए लोगों को निकालने के लिए अपना अमूल्य उपदेश दे रहा है। जैनधर्म दया का प्रबल पक्षपाती है। गरीबों की ही नहीं, वह तो प्राणीमात्र की भलाई करने को कहता है। जैनधर्म की यह खास विशेषता है कि वह अपना विकास खुद से ही होना बतलाता है। **''जैन धर्म कहता है- तुम दुःखी हो तो तुम्हें किसी परमात्मा के आगे गिड़गिड़ाने की जरूरत नहीं है। तुम्हीं अनन्त शक्तियों के पुँज हो। तुम्हारे कर्मों से तुम दुःखी बने हो और तुम्हीं उन्हें दूर करोगे तो स्वतन्त्र हो सकोगे। तुम स्वयं ही सिद्धस्वरूप हो। जैनधर्म अन्धकार में भटकते हुए संसार के लिए प्रकाश देने वाला दीपक है। तुम उसी की आराधना करो।''**

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमशः ❀❀❀

धोवन पानी

-नेहा सखलेचा
नागौर

धोवन पानी का मतलब है जीव रहित पानी अर्थात् जो पानी सूझता हो, प्रासुक हो। धोवन पानी बनाना नहीं पड़ता, वह तो सहज ही बन जाता है। भगवान ने 21 प्रकार के धोवन पानी बताए हैं। राख का धोवन पानी उनमें से एक है। आजकल एल्कलाइन वाटर (Alkaline water) का प्रयोग बहुत हो रहा है। एल्कलाइन वाटर गाय के गोबर की राख से बनता है। इस पानी में 23% ऑक्सिडेंट होता है। इससे खून का pH 11.2 तक हो जाता है। pH जितना ज्यादा होगा उतनी ही बीमारी कम आती है। यदि बीमारी आ भी जाए तो शीघ्र ही ठीक हो जाती है। साथ ही शुगर, बी.पी. एवं हार्ट की बीमारी भी कम होती है। आधुनिक समय की सबसे बड़ी समस्या मोटापा को भी कम किया जा सकता है। धोवन पानी पीने से जीवों को अभयदान दिया जा सकता है।

प्रतिदिन धोवन पानी पीने से अप्काय जीवों की विराधना नहीं होती। इसे बहराने से सुपात्रदान का लाभ भी मिलता है। राजा शंख ने धोवन पानी बहराकर तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन किया था।

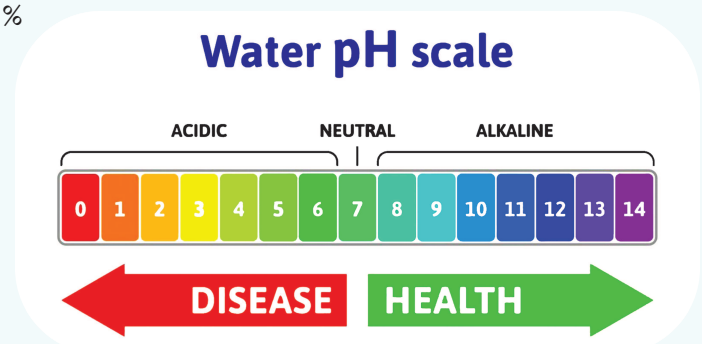

अरिहन्त देव ने 21 प्रकार के धोवन पानी को अच्छा बताया है। 10 लीटर पानी में 25 ग्राम राख डालकर एल्कलाइन वाटर बनाया जाता है। जो बातें शोधकर्ता आज बता रहे हैं, वे बातें हमारे भगवान बहुत पहले ही बता चुके हैं।

❀❀❀

Cow dung ash is an eco–friendly and inexpensive adsorbent for the purification of water from its pollutants and contaminants. By the analysis of the effect of cow dung ash in various parameters of water, maximum reduction obtained for Hardness was at the dosage of 8 gm/litre, for turbidity was at the dosage of 4 gm/litre, for COD as well as BOD was at the dosage of 6 gm/litre. Hence it can be concluded that the optimum dosage was 6 gm/litre. The cow dung ash is somewhat less feasible for disinfection of water samples. The efficacy of cow dung ash cannot not be stated in this aspect and valid conclusions could hereby not be drawn as no distinguishable results were obtained in bacterial culture in terms of number of enumerable colonies. The contact time of 24 hours between sample and the ash was although feasible and maximum so as to allow for adsorption to occur efficiently. Cow dung ash exhibits good potential as an adsorbent in the purification and treatment of water.

❀❀❀

गोचरी-विवेक

संस्कार सौरभ

-प्रो. सुमेरचन्द जैन, पूर्व प्राचार्य एवं पूर्व प्रान्तपाल

निर्ग्रन्थ अनगार अहिंसा और अपरिग्रह महाव्रत के पालन के लिए मधुकरी वृत्ति द्वारा सहज सिद्ध आहार (सर्वसम्पत्करी भिक्षा) का अवलम्बन लेते हैं। 42 प्रकार के भिक्षाचर्या के दोषों को टालकर साधु आहारादि ग्रहण करता है। यह एषणा समिति है। एषणा समिति के निर्दोष पालन के लिए यह आवश्यक है कि साधु आहारादि के सब नियमोपनियमों को अच्छी तरह समझे और उनका पालन करे।

आहारादि के ग्रहण में लगने वाले 42 दोष हैं तथा उपयोग में लगने वाले 5 दोष हैं। इस प्रकार मुख्य रूप से 47 दोषों से रहित आहारादि ही साधु के लिए ग्राह्य और उपभोग्य है।

भिक्षा के 110 दोष

भिक्षा के 42 दोषों में से 16 उद्गम के दोष, 16 उत्पादन के दोष और 10 एषणा के दोष बताए गए हैं। भिक्षा देते समय गृहस्थ द्वारा लगने वाले दोषों को उद्गम दोष कहते हैं। साधु के द्वारा लगने वाले दोषों को उत्पादन के दोष कहते हैं। साधु एवं श्रावक दोनों के द्वारा लगने वाले दोषों को एषणा दोष कहते हैं।

उद्गम के 16 दोष

1. **आधा कर्म :** किसी खास साधु को मन में रखकर उसके निमित्त से सचित्त वस्तु को अचित्त करना या अचित्त को पकाना आधा कर्म कहलाता है।
2. **औद्देशिक :** सामान्य याचकों को देने की बुद्धि से जो आहारादि तैयार किए जाते हैं, उन्हें औद्देशिक कहते हैं। इसके दो भेद हैं- ओघ और विभाग।
3. **पूति कर्म :** शुद्ध आहारादि में आधा कर्मादि का अंश मिल जाए तो वह पूति कर्म हो जाता है।
4. **मिश्रजात :** अपने और साधु के लिए एक साथ पकाया हुआ आहार मिश्रजात है।
5. **स्थापना :** साधु को देने की इच्छा से कुछ काल के लिए आहार को अलग रख देना स्थापना दोष है।
6. **प्राभृतिका :** साधुओं को विशिष्ट आहार बहराने की भावना से विवाहादि के प्रसंगों को या मेहमानों के आगे पीछे करना।
7. **प्रादुष्करण :** देय वस्तु के अंधेरे में होने पर अग्नि, दीपक, बिजली आदि का उजाला करके देना प्रादुष्करण दोष है।
8. **क्रीत :** साधु के लिए खरीद कर देना।
9. **प्रामित्य :** साधु के लिए उधार लाया हुआ आहारादि देना।
10. **परिवर्तित :** साधु के लिए अदल-बदल की हुई वस्तु देना।
11. **अभिहृत :** साधु के निमित्त वस्तु को अन्यत्र से लाकर देना अथवा साधु के सामने ले जाकर देना।
12. **उद्भिन्न :** लेप आदि के द्वारा बंद की गई वस्तु के लेपादि खोलकर देना।
13. **मालापहृत :** ऊपर, नीचे अथवा तिरछी दिशा में जहाँ आसानी से हाथ न पहुँच सके, वहाँ निसरणी आदि लगाकर आहार देना मालापहृत है।

14. **आच्छेद्य :** निर्बल व्यक्ति अपने अधीनस्थ व्यक्ति से छीनकर साधु को देना आच्छेद्य दोष है।

15. **अनिसृष्ट :** किसी वस्तु के एक से अधिक स्वामी होने पर सभी की इच्छा के बिना देना अनिसृष्ट दोष है।

16. **अध्यवपूरक :** साधुओं के आगमन सुनकर अपने निमित्त बनने वाली सामग्री में और अधिक सामग्री मिलाना अध्यवपूरक दोष है।

उपरोक्त 16 दोष आहारादि की उत्पत्ति से संबंधित हैं और गृहस्थ द्वारा लगते हैं। अत एषणा समिति के आराधक और पालक साधु के आहार की गवेषणा करते समय इन दोषों से दूषित आहार मिलता हो तो वह ग्रहण नहीं करना चाहिए।

उत्पादन के 16 दोष

1. **धात्री कर्म :** बच्चे के पाँच प्रकार की धाई की तरह खिला-पिलाकर गोदादि में लेकर और रमाकर आहारादि प्राप्त करने से साधु को धात्री दोष लगता है।

2. **दूती कर्म :** दूत के समान गृहस्थ का संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाकर आहारादि लेना दूती कर्म है।

3. **निमित्त :** भूत, भविष्य, वर्तमान संबंधी शुभाशुभ फल बताकर गृहस्थ से आहार प्राप्त करना निमित्त पिण्ड है।

4. **आजीव :** स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से अच्छी प्राप्ति, कुल या अन्य विशेषताएँ बताकर आहारादि लेना आजीव पिण्ड है।

5. **वनीपक :** श्रमण, संन्यासी आदि में जो जिसका भला हो, उसकी प्रशंसा करके या हीनता दिखाकर आहारादि लेना वनीपक पिण्ड है।

6. **चिकित्सा :** औषधि बताकर या वैधगिरी करके आहार लेना चिकित्सा पिण्ड है।

7. **क्रोध :** अपनी विद्या या तप का प्रभाव बताकर, शाप आदि का भय क्रोधित होकर आहार प्राप्त करना क्रोधी पिण्ड है।

8. **मान :** अभिमान से स्वयं को लब्धि सम्पन्न, केवली, प्रतापी बताकर या प्रभाव जमाकर आहारादि लेना मान पिण्ड है।

9. **माया :** वंचना और कपट करके आहार लेना माया पिण्ड है।

10. **लोभ :** आहारादि का लोलुपी बनकर लोभवश भिक्षा के लिए भटकते फिरना लोभ पिण्ड है।

11. **पूर्व-पश्चात् संस्तव :** आहारादि प्राप्त करने से पूर्व अथवा प्राप्त हो जाने के पश्चात् देने वाले की प्रशंसा करना पूर्व-पश्चात् संस्तव पिण्ड है।

12. **विद्या :** विद्या का प्रयोग करके आहार लेना विद्या पिण्ड है।

13. **मंत्र :** मंत्र के प्रयोग द्वारा आहारादि लेना मंत्र पिण्ड है।

14. **चूर्ण :** सूरमे (अंजन) आदि प्रयोग करके आहारादि लेना चूर्ण पिण्ड है।

15. **योग :** पादलेप आदि सिद्धियाँ बताकर आहारादि लेना योग पिण्ड है।

16. **मूल कर्म :** गर्भाधान, गर्भपात आदि के लिए औषधि आदि सावद्य क्रियाएँ करके आहार लेना मूल कर्म पिण्ड है।

ग्रहण एषणा के 10 दोष

साधु और गृहस्थ दोनों के द्वारा लगने वाले तथा आहार को ग्रहण करते समय लगने वाले एषणा के 10 दोष इस प्रकार हैं-

1. **शंकित :** आधा-कर्मादि दोषों से शंकित आहारादि को ग्रहण करना शंकित दोष है।
2. **भ्रक्षित :** सचित्त पानी पृथ्वी, वनस्पति आदि से संघटित आहारादि लेना भ्रक्षित है।
3. **निक्षिप्त :** जो आहार अचित्त होते हुए भी पृथ्वी, पानी, तेज, वायु, वनस्पति, त्रस सजीवों पर रखा हुआ है, वह निक्षिप्त है।
4. **पिहित :** जो आहार सचित्त फलादि द्वारा ढका हुआ है।
5. **साहरिय :** जिस बर्तन में अकल्पनीय वस्तु पड़ी हो, उसमें से वह अकल्पनीय वस्तु निकालकर उसी बर्तन से आहारादि देने-लेने से साहरिय दोष लगता है।
6. **दायक :** बालक, वृद्ध, गर्भवती आदि दान देने के अनाधिकारी से आहारादि लेना दायक दोष है।
7. **उन्मिश्र :** अचित्त के साथ सचित्त या मिश्र हुआ आहार लेना उन्मिश्र दोष है।
8. **अपरिणत :** जो पूर्व पका हुआ न हो, ऐसा आहारादि लेना अपरिणत दोष है।
9. **लित्त :** अकल्पनीय वस्तु से भरे हुए हाथ, पात्र आदि से दिए जाने वाला आहार लित्त कहलाता है।
10. **छर्दित :** घी आदि पदार्थों को नीचे टपकाता हुआ आहारादि देवे तो वह छर्दित है।

❀❀❀

भक्ति रस

धोवन पानी

कुछ नारे

-डॉ. दिलीप धींग, बम्बोरा
पूर्व निदेशक : अंतर्राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन शोध केन्द्र, चेन्नई

धोवन पानी का उपयोग।
रखता सबको स्वस्थ निरोग।।

प्रासुक अचित्त जल का पान।
जैनों की है एक पहचान।।

पावन करता तन-मन-जीवन।
पीएँगे, रखेंगे धोवन।।

धोवन से घर शुद्ध बनेगा।
श्रमणाचार विशुद्ध बनेगा।।

धोवन पीएँ और पिलाएँ।
त्यागमय जीवन अपनाएँ।।

यदि घर में होगा धोवन जल।
सन्त पदार्पण होगा सफल।।

छोटा-सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अणुव्रत का अभ्यास है धोवन।
महाव्रती की प्यास है धोवन।।

धोवन जल का करें प्रचार।
सुदृढ़ होगा श्रमणाचार।।

धोवन जल के कई आयाम।
संयम, विवेक आदि नाम।।

जल बचाएँ, जीव बचाएँ।
धोवन का उपयोग बढ़ाएँ।।

कहते गुरुजन ज्ञानी ध्यानी।
आओ! पीएँ धोवन पानी।।

हमने दो बातों की ठानी।
दिन में भोजन, धोवन पानी।।

जल जीवन, जीवन का झरना।
जल का अपव्यय कभी न करना।।

जल का अपव्यय।
जीवन का क्षय।।

व्रत नियम सुँ जीवांगा सा।
धोवण पाणी पीवांगा सा।।

पाणी मलै घणो दोरो।
अनै फालतू मती ढोरो।।

जीवण जगति रो आधार।
पाणी ने वंचावो यार।।

❀❀❀

परम श्रद्धेय, परमागम रहस्यज्ञाता, उत्क्रांति सम्प्रेरक, श्रीमज्जैनाचार्य 1008 श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती चारित्रात्माओं के विक्रम संवत् 2080 के स्वीकृत चातुर्मास की सूची

चातुर्मास सूची - 2023

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	प्रमुख संत/सतीवर्याओं के नाम	स्थान	ठाणा
1.	**परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.** उपाध्याय प्रवर श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	नीमच (म.प्र.)	8
2.	शासन दीपक श्री रमेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	शिवा बस्ती, गंगाशहर (राज.)	4
3.	शासन दीपक श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	सेठिया कोटड़ी-बीकानेर (राज.)	6
4.	श्री नरेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	समता भवन, ब्यावर (राज.)	5
5.	शासन दीपक श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	सुदामा नगर-इंदौर (म.प्र.)	2
6.	शासन दीपक श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा	गंगाशहर-भीनासर (राज.)	2
7.	शासन दीपक श्री प्रशममुनिजी म.सा. आदि ठाणा	गंगाशहर-भीनासर (राज.)	2
8.	शासन दीपक श्री विनयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	नोखागाँव (राज.)	2
9.	शासन दीपक श्री पदममुनिजी म.सा. आदि ठाणा	चालीसगाँव (महा.)	2
10.	शासन दीपक श्री निश्चलमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	घाटकोपर-मुम्बई (महा.)	3

11.	शासन दीपक श्री अक्षयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	खरियार रोड (उड़ीसा)	2
12.	शासन दीपक श्री आदित्यमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	रतलाम (म.प्र.)	5
13.	शासन दीपक श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	बेगूँ (राज.)	5
14.	शासन दीपक श्री संजयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	शालीमार बाग (दिल्ली)	3
15.	शासन दीपक श्री छत्रांकमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	वर्धमान नगर-नागपुर (महा.)	2
16.	शासन दीपक श्री हेमन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	जवाहर भवन-ब्यावर (राज.)	3
17.	शासन दीपक श्री चिन्मयमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	आलनपुर+बजरिया (संयुक्त) (राज.)	3
18.	शासन दीपक श्री सुबाहुमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	धुलिया (महा.)	2
19.	शासन दीपक श्री विदेहमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	हैदराबाद (तेलं.)	2
20.	शासन दीपक श्री श्रुतप्रभमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)	3
21.	शासन दीपक श्री जयप्रभमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	धामणगाँव रेलवे (महा.)	2
22.	शासन दीपक श्री आदर्शमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	सिरसा (हरियाणा)	2
23.	शासन दीपक श्री दिव्यदर्शनमुनिजी म.सा. आदि ठाणा	गीदम (छ.ग.)	2
24.	शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवरजी म.सा. आदि ठाणा	कांकरिया स्थानक-ब्यावर (राज.)	9
25.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (उदयपुर वाले) आदि ठाणा	भूपालपुरा-उदयपुर (राज.)	5
26.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूरकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री चन्दनबालाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मन्दसौर (म.प्र.)	8
27.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी म.सा. (रायपुर वाले) आदि ठाणा	बड़ीसादड़ी (राज.)	6
28.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवरजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मालू कोटड़ी-बीकानेर (राज.)	11
29.	शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नीमच (म.प्र.)	8
30.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (महाराष्ट्र वाले) आदि ठाणा	नीमच (म.प्र.)	6
31.	शासन दीपिका साध्वी श्री शकुन्तलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	काटजू नगर-रतलाम (म.प्र.)	6
32.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि ठाणा	दलौदा(म.प्र.)	5
33.	शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवरजी म.सा. आदि ठाणा	भीलवाड़ा (राज.)	7
34.	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवरजी म.सा. आदि ठाणा	महिला भवन-बीकानेर (राज.)	4
35.	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकान्ताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	समता भवन-इन्दौर (म.प्र.)	15
36.	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतनश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नीमच (म.प्र.)	7
37.	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताश्रीजी म.सा. (जावरा वाले) आदि ठाणा	नीमच (म.प्र.)	8
38.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (मोड़ी वाले) आदि ठाणा	मणिनगर-अहमदाबाद (गुज.)	8
39.	शासन दीपिका साध्वी श्री समताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मंगलवाड़ चौराहा (राज.)	5
40.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नागदा जंक्शन (म.प्र.)	4
41.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	वापी (गुज.)	4
42.	शासन दीपिका साध्वी श्री वनिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	खैरोदा (राज.)	4
43.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	बेल्लारी (कर्नाटक)	4

44.	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (देशनोक वाले) आदि ठाणा	कानोड़ (राज.)	7
45.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रतलाम (म.प्र.)	5
46.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	चिकारड़ा (राज.)	6
47.	शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मालवीय नगर-जयपुर (राज.)	6
48.	शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	भड़भूजा घाटी-उदयपुर (राज.)	9
49.	शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	अलाय (राज.)	4
50.	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	गजेन्द्रगढ़ (कर्नाटक)	4
51.	शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मनावर (म.प्र.)	4
52.	शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवरजी म.सा. आदि ठाणा	भीण्डर (राज.)	7
53.	शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांताश्रीजी म.सा. (छ.ग. वाले) आदि ठाणा	परतवाड़ा-अमरावती (महा.)	3
54.	शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	सरस्वती नगर-जोधपुर (राज.)	5
55.	शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरीश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	हि.म. से.-11, उदयपुर (राज.)	3
56.	शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबालाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	जावरा (म.प्र.)	4
57.	शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	सीतामऊ (म.प्र.)	4
58.	शासन दीपिका साध्वी श्री वंदनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	पाली (राज.)	3
59.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	गोपाल गौशाला कॉलोनी, रतलाम(म.प्र.)	3
60.	शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	कानवन (म.प्र.)	3
61.	शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मूंदी (म.प्र.)	3
62.	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	दुर्ग (छ.ग.)	5
63.	शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नीमच (म.प्र.)	3
64.	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावतीश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	लसड़ावन (राज.)	3
65.	शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	प्रतापगढ़ (राज.)	3
66.	शासन दीपिका साध्वी श्री सिद्धप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	बोहेड़ा (राज.)	3
67.	शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रामेश रत्नम्-गंगाशहर (राज.)	5
68.	शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	भीनासर (राज.)	3
69.	शासन दीपिका साध्वी श्री करुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	अम्बामाता स्कीम-उदयपुर (राज.)	4
70.	शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. (कानोड़ वाले) आदि ठाणा	श्यामपुरा-सवाईमाधोपुर (राज.)	3
71.	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म.सा. (भीनासर वाले) आदि ठाणा	डौंडीलोहारा (छ.ग.)	5
72.	शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	महामंदिर-जोधपुर (राज.)	5
73.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभाश्रीजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री सयंतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नासिक (महा.)	3
74.	शासन दीपिका साध्वी श्री परागश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	जयपुर (राज.)	5
75.	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	सूरत (गुज.)	3
76.	शासन दीपिका साध्वी श्री विकासश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	जोधपुर (राज.)	6
77.	शासन दीपिका साध्वी श्री पूजिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	कमला नेहरु नगर-जोधपुर (राज.)	4

78.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	डौंडी (छ.ग.)	3
79.	शासन दीपिका साध्वी श्री सौम्यशीलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नगरी (छ.ग.)	3
80.	शासन दीपिका साध्वी श्री विवेकशीलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	राजनांदगाँव (छ.ग.)	3
81.	शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	आसावरा+भदेसर (संयुक्त) (राज.)	3
82.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	निफाड़-नासिक (महा.)	5
83.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रावतसर-हनुमानगढ़ (राज.)	3
84.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशान्तश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	जैतोमण्डी (पंजाब)	4
85.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्तिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	बाभुलगाँव (महा.)	4
86.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नोखामण्डी (राज.)	3
87.	शासन दीपिका साध्वी श्री सरिश्माश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नंदुरबार (महा.)	3
88.	शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्माश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	बुरहानपुर (म.प्र.)	3
89.	शासन दीपिका साध्वी श्री रमणश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	शिरुड़ (महा.)	3
90.	पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री राजुलश्रीजी म.सा. शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नीमच (म.प्र.)	13
91.	शासन दीपिका साध्वी श्री अभीप्साश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	रोहट-पाली (राज.)	3
92.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्याश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नमकमंडी-उज्जैन (म.प्र.)	3
93.	शासन दीपिका साध्वी श्री समयाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	मेरठ शहर (उ.प्र.)	3
94.	शासन दीपिका साध्वी श्री समीहाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	चामराजपेट-बेंगलुरु (कर्ना.)	3
95.	शासन दीपिका साध्वी श्री समियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	कोलकाता (प.बं.)	4
96.	शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वीश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	अजमेर (राज.)	4
97.	शासन दीपिका साध्वी श्री निखारश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	देशनोक (राज.)	4
98.	शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंकाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	वरोरा (महा.)	4
99.	शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	त्यागराजनगर-बेंगलुरु (कर्नाटक)	4
100.	शासन दीपिका साध्वी श्री शृंगारश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	अकोला (महा.)	4
101.	शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीलीश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	सैंथिया (प.बं.)	4
102.	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	सेंती (राज.)	4
103.	शासन दीपिका साध्वी श्री अनाकारश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	भीम (राज.)	4
104.	शासन दीपिका साध्वी श्री रिभिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा	नाई (राज.)	3

संत-मुनिराज	:	72	चातुर्मास स्थल	:	23
साध्वीश्रीजी	:	384	चातुर्मास स्थल	:	81
कुल ठाणा	:	456	कुल चातुर्मास स्थल	:	104

नोट :- चारित्रात्माओं के नाम, वरीयता क्रम, चातुर्मास स्थल व पता आदि लिखने में यदि कोई त्रुटि हुई हो तो अविनय असातना के लिए श्रमणोपासक टीम क्षमायाचना करती है।

परम श्रद्धेय, परमागम रहस्यज्ञाता, उत्क्रांति सम्प्रेरक, श्रीमज्जैनाचार्य 1008 श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती चारित्रात्माओं के विक्रम संवत् 2080 के स्वीकृत चातुर्मास की सूची

चातुर्मास सूची - 2023

1. नीमच (म.प्र.)

1. **परम श्रद्धेय, परमागम रहस्यज्ञाता, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.**
2. बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.
3. श्री नीरज मुनि जी म.सा.
4. श्री हर्षित मुनि जी म.सा.
5. श्री गगन मुनि जी म.सा.
6. श्री निर्वाण मुनि जी म.सा.
7. श्री सुमित मुनि जी म.सा.
8. श्री गुणीश मुनि जी म.सा.

ठाणा–08

चातुर्मास स्थल : जैन स्थानक भवन, राठौर परिसर के पास, जैन कॉलोनी, नीमच–458441 (म.प्र.)

1. श्री शौकिन जी मुणोत
द्वारा– आशीष टेडिंग कम्पनी
6, आंजना कॉम्प्लैक्स, टैगोर मार्ग,
नीमच–458441 (म.प्र.)
मो.: 9425106189

2. श्री अशोक जी मोगरा
291, विकास नगर, 14/4,
नीमच–458441 (म.प्र.)
मो.: 9329444345

आवास निवास– श्री मनोज जी खिंदावत (मो.: 9425106492)
श्री संजय जी कच्छारा (मो.: 9827070063)

परिवहन– श्री पंकज जी कुदार (मो.: 8770164266)

कार्यालय– श्री शैलेन्द्र जी भण्डारी (मो.: 6232728008, 9179868371)

2. शिवा बस्ती, गंगाशहर (राज.)

1. शासन दीपक श्री रमेश मुनि जी म.सा.
2. श्री राकेश मुनि जी म.सा.
3. श्री प्रमोद मुनि जी म.सा.
4. श्री मंगल मुनि जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : समता महिला भवन, शिवा बस्ती, गंगाशहर, बीकानेर–334401 (राज.)

1. श्री कौशल जी दुग्गड़
बोथरा गर्ल्स स्कूल के सामने, बोथरा चौक,
गंगाशहर, बीकानेर–334401 (राज.)
मो.: 9414137121

2. श्री विमलकुमार जी सेठिया
जैन मन्दिर के पास, भीनासर
बीकानेर–334403 (राज.)
मो.: 9460172673

3. श्री पारसमल जी भूरा (मो.: 9413106883)

3. सेठिया कोटड़ी, बीकानेर (राज.)

1. शासन दीपक श्री वीरेन्द्र मुनि जी म.सा.
2. श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा.
3. श्री मुदित मुनि जी म.सा.
4. श्री शमित मुनि जी म.सा.
5. श्री सूर्यप्रभ मुनि जी म.सा.
6. श्री मुक्तेश्वर मुनि जी म.सा.

ठाणा–06

चातुर्मास स्थल : सेठिया कोटड़ी, मरोठी सेठिया मौहल्ला, ठंठेरा बाजार, बीकानेर–334001 (राज.)

1. श्री राजेन्द्रकुमार जी गोलछा
द्वारा– जय फर्नीचर हाऊस, हंसा गेस्ट
हाऊस के सामने, नोखा रोड, गंगाशहर,
बीकानेर–334401 (राज.)
मो.: 9571840310

2. श्री मनोज जी पारख
पुत्र श्री विजयचन्द जी पारख
बेगाणी चौक,
बीकानेर–334001 (राज.)
मो.: 9829131178

4. समता भवन, ब्यावर (राज.)

1. श्री नरेन्द्र मुनि जी म.सा.
2. श्री अनंत मुनि जी म.सा.
3. श्री प्राणेश मुनि जी म.सा.
4. श्री धीरज मुनि जी म.सा.
5. श्री यत्नेश मुनि जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, खटीकान हथाई के पास, ब्यावर, जि. अजमेर–305901 (राज.)

1. श्री विनयचन्द जी रांका
राजदीप, मुणोत नगर,
ब्यावर जि. अजमेर–305901 (राज.)
मो.: 9414008974

2. श्री उत्तमचन्द जी लोढ़ा
3, लक्ष्मी मार्केट,
ब्यावर जि. अजमेर–305901 (राज.)
मो.: 9352772477

5. सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

1. शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा.
2. श्री किशोर मुनि जी म.सा.

ठाणा–02

चातुर्मास स्थल : समता भवन, महावीर गेट के अन्दर, गौतम आश्रम के पास, सुदामानगर, जि. इन्दौर–452009 (म.प्र.)

1. श्री तेजकुमार जी तातेड़
4, गिरधर नगर, महेश नगर,
इन्दौर–452002 (म.प्र.)
मो.: 9826033624

2. श्री ललित जी दुगड़
यशवन्त निवास रोड,
इन्दौर–452002 (म.प्र.)
मो.: 9827013200

6. बांठिया पौषधशाला, गंगाशहर–भीनासर (राज.)

1. शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा.
2. श्री जयेश मुनि जी म.सा.

ठाणा–02

चातुर्मास स्थल : बांठिया पौषधशाला, जवाहर सभागार, भीनासर, बीकानेर–334401 (राज.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 2 देखें।

7. जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर–भीनासर (राज.)

1. शासन दीपक श्री प्रशम मुनि जी म.सा. 2. श्री हेमगिरी मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर, बीकानेर–334401 (राज.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 2 देखें।

8. नोखागाँव, बीकानेर (राज.)

1. शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. 2. श्री मधुर मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : समता भवन, नोखागाँव, बीकानेर–334803 (राज.)

1. श्री पंकज जी सुराणा
पो. नोखागाँव, जि. बीकानेर–334803 (राज.)
मो.: 8698462999

2. श्री ज्ञानचंद जी लुणावत
पो. नोखागाँव, जि. बीकानेर–334803 (राज.)
मो.: 9414390008

9. चालीसगाँव (महा.)

1. शासन दीपक श्री पदम मुनि जी म.सा. 2. श्री सौरभ मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : अरिहन्त मंगल कार्यालय, शिवाजी चौक, पो. चालीसगाँव, जि. जलगाँव–424101 (महा.)

1. श्री संजय पी. सुराणा
नमो मेडिकल, शिवाजी चौक,
पो. चालीसगाँव, जि. जलगाँव–424101 (महा.)
मो.: 9422276472

2. श्री महेन्द्र जी चाँदमल जी आँचलिया
26/27, मोहमाया कॉम्प्लैक्स,
पो. चालीसगाँव, जि. जलगाँव–424101 (महा.)
मो.: 9130291008

3. श्री संदीप जी बैदमूथा
मो.: 8669153218

10. घाटकोपर, मुम्बई (महा.)

1. शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा. 2. श्री मदन मुनि जी म.सा.
3. श्री रोहित मुनि जी म.सा. **ठाणा–03**

चातुर्मास स्थल : समता भवन, टाइगर अपार्टमेंट, संघवी वन, सर्वोदय हॉस्पिटल के पीछे, गंगावाड़ी के पास, घाटकोपर–अंधेरी लिंक रोड, घाटकोपर (वेस्ट), मुम्बई–400086 (महा.)

1. श्री अनिल जी सूर्या
ए विंग 202, द्वितीय फ्लोर, संघवी वन,
अंधेरी–घाटकोपर लिंक रोड,
घाटकोपर (वेस्ट), मुम्बई–400086 (महा.)
मो.: 8169236199

2. श्री राकेश जी कोठारी
राकेश आर्ट डायमण्ड शॉप,
नं. 6, बी.डी. ज्वैल, नाश्ता गली, जवेरी बाजार,
मुम्बई–400003 (महा.)
मो.: 9820173651

11. खरियार रोड (उड़ीसा)

1. शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. 2. श्री दिनेश मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ (स्थानक भवन), मेन रोड, खरियार रोड, जि. नुआपाड़ा–766104 (उड़ीसा)

1. श्री किशोरकुमार जी बरड़िया
पूजा पेकर्स, स्थानक के पास, खरियार रोड,
जि. नुआपाड़ा–766104 (उड़ीसा)
मो.: 9938080111

2. श्री अतुल भाई ढोलकिया
गणेश नगर, खरियार रोड,
जि. नुआपाड़ा–766104 (उड़ीसा)
मो.: 9438011111

12. रतलाम (म.प्र.)

1. शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. 2. श्री अटल मुनि जी म.सा.
3. श्री उदित मुनि जी म.सा. 4. श्री ब्रह्मऋषि मुनि जी म.सा.
5. श्री ऋजुप्रज्ञ मुनि जी म.सा. **ठाणा–05**

चातुर्मास स्थल : समता भवन, नौलाईपुरा, रतलाम–457001 (म.प्र.)

1. श्री सुदर्शन जी पिरोदिया
49, लक्कड़पीठा, रतनसागर,
रतलाम–457001 (म.प्र.)
मो.: 9425103697

2. श्री दशरथ जी बाफना
गौशाला रोड, रतलाम–457001 (म.प्र.)
मो.: 9425103717

13. बेगूँ (राज.)

1. शासन दीपक श्री मनीष मुनि जी म.सा. 2. श्री राजन मुनि जी म.सा.
3. श्री शोभन मुनि जी म.सा. 4. श्री इभ्य मुनि जी म.सा.
5. श्री मयंक मुनि जी म.सा. **ठाणा–05**

चातुर्मास स्थल : समता भवन, बेगूँ, जि. चित्तौड़गढ़–312023 (राज.)

1. श्री बरदीचन्द जी कोठारी
पुराना बस स्टैण्ड, बेगूँ
जि. चित्तौड़गढ़–312023 (राज.)
मो.: 9414733769

2. श्री मुकेश जी पोखरना
पोस्ट ऑफिस के पास, नया हॉस्पिटल रोड,
बेगूँ, जि. चित्तौड़गढ़–312023 (राज.)
मो.: 9414731117

14. शालीमार बाग (दिल्ली)

1. शासन दीपक श्री संजय मुनि जी म.सा. 2. श्री गौरव मुनि जी म.सा.
3. श्री हृषिकेश मुनि जी म.सा. **ठाणा–03**

चातुर्मास स्थल : एस.एस. जैन सभा (रजि.), शालीमार बाग–110088 (दिल्ली)

1. श्री शान्तिकुमार जी जैन
मकान नं. बी.पी.–81,
वेस्ट शालीमार बाग–110088 (दिल्ली)
मो.: 9711253000

2. श्री ईश्वरदास जी जैन
मकान नं. बी.एल. 103,
वेस्ट शालीमार बाग–110088 (दिल्ली)
मो.: 9212207021

15. वर्धमान नगर, नागपुर (महा.)

1. शासन दीपक श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. 2. श्री प्रणत मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : वर्धमान स्थानक भवन, श्रेयांस स्कूल के पास, वर्धमान नगर, नागपुर–440008 (महा.)

1. श्री प्रमोद जी कोठारी
503, भूमि आर्केड, लक्कड़गंज गार्डन के पास,
क्वेटा कॉलोनी, नागपुर–440008 (महा.)
मो.: 9422805589

2. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी बैद
जैन ब्रदर्स, एच.यू. बिल्डिंग,
मस्कसाथ, इतवारी, नागपुर–440002 (महा.)
मो.: 9960695111

16. जवाहर भवन, विनोद नगर, ब्यावर (राज.)

1. शासन दीपक श्री हेमन्त मुनि जी म.सा. 2. श्री हिमांशु मुनि जी म.सा.
3. श्री लाघव मुनि जी म.सा. **ठाणा–03**

चातुर्मास स्थल : जवाहर भवन, विनोद नगर, मेवाड़ी गेट के बाहर, ब्यावर, जि. अजमेर–305901 (राज.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 4 देखें।

17. आलनपुर+बजरिया (संयुक्त), सवाईमाधोपुर (राज.)

1. शासन दीपक श्री चिन्मय मुनि जी म.सा. 2. श्री अमित मुनि जी म.सा.
3. श्री उम्मेद मुनि जी म.सा. **ठाणा–03**

चातुर्मास स्थल (प्रथम दो माह) : जैन स्थानक, आलनपुर, सवाईमाधोपुर–322021 (राज.)

1. श्री मुकेशकुमार जी जैन
चमत्कारजी मंदिर के पास, आलनपुर,
जि. सवाईमाधोपुर–322021 (राज.)
मो.: 9784942252

2. श्री धनराज जी जैन
घोड़ी बावड़ी, आलनपुर
जि. सवाईमाधोपुर–322021 (राज.)
मो.: 7976343050

3. श्री पदमचंद जी जैन (मो.: 9667006756)

चातुर्मास स्थल (शेष तीन माह) : श्रीलाल समता भवन, गौतम कॉलोनी, बजरिया, जि. सवाईमाधोपुर–322001 (राज.)

1. श्री उच्छबचन्द जी जैन
हाऊस नं. 1, बसन्त कॉलोनी, मान टाऊन,
बजरिया, जि. सवाईमाधोपुर–322001 (राज.)
मो.: 8432688520

2. श्री नरेन्द्रकुमार जी जैन
अरिहन्त भवन, केशव नगर कॉलोनी,
बजरिया, जि. सवाईमाधोपुर–322001 (राज.)
मो: 9460951700

18. धुलिया (महा.)

1. शासन दीपक श्री सुबाहु मुनि जी म.सा. 2. श्री भूतिप्रज्ञ मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : समता भवन, वखारकर नगर, नाकोड़ा मेडिसिन के सामने, धुलिया–424004 (महा.)

1. श्री रमेशजी केशरमल जी संकलेचा
25, भगामोहन नगर, वखारकर नगर
के पास, धुलिया–424004 (महा.)
मो.: 9822197130

2. श्री किशोर जी खींवसरा
जैन मशीनरी, पारोला रोड,
धुलिया–424004 (महा.)
मो.: 9822760277

19. हैदराबाद (तेलंगाना)

1. शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा. 2. श्री उत्तमयश मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : श्री साधुमार्गी जैन संघ, 1–1–582 – 582/1, गांधी नगर, बाकाराम, हैदराबाद–500080 (तेलंगाना)

1. श्री विमलकुमार जी तातेड़
जैन एण्ड कं.
1–1–180/18, सुदर्शन के सामने,
35 एम.एम., आर.टी.सी. एक्स रोड,
हैदराबाद–500020 (तेलंगाना)
मो.: 9966110395

2. श्री सुरेश जी सिंघवी
1–1–18/97, जवाहर नगर,
आर.टी.सी. एक्स रोड,
हैदराबाद–500020 (तेलंगाना)
मो.: 9849004972

3. श्री विकास जी पितलिया (मो.: 9246296455) 4. श्री विजय जी मुणोत (मो.: 9989311090)

20. मदनगंज–किशनगढ़ (राज.)

1. शासन दीपक श्री श्रुतप्रभ मुनि जी म.सा. 2. श्री नि:श्रेयश मुनि जी म.सा.
3. श्री राजरत्न मुनि जी म.सा. **ठाणा–03**

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, सब्जी मंडी, ओसवाली मोहल्ला, मदनगंज, किशनगढ़, जि. अजमेर–305801 (राज.)

1. श्री कैलाशचंद जी जैन
30, महावीर कॉलोनी, अजमेर रोड,
मदनगंज, किशनगढ़,
जि. अजमेर–305801 (राज.)
मो.: 9166906981

2. श्री अरविन्द जी मोदी
बी.एम. मोदी कॉम्प्लैक्स,
मदनगंज, किशनगढ़,
जि. अजमेर–305801 (राज.)
मो.: 9414011419

21. धामणगाँव रेलवे (महा.)

1. शासन दीपक श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. 2. श्री अनन्य मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : लालीबाई जैन स्थानक, गांधी चौक, धामणगाँव रेलवे, जि. अमरावती–444709 (महा.)

1. श्री विकासकुमार जी कुचेरिया
भागचंद नगर, धामणगाँव रेलवे,
जि. अमरावती–444709 (महा.)
मो.: 9665922440

2. श्री निखिलकुमार जी भंसाली
भगतसिंह चौक, धामणगाँव रेलवे,
जि. अमरावती–444709 (महा.)
मो.: 9890075082

3. श्री प्रकल्पकुमार जी कांकरिया (मो.: 9766958182)

22. सिरसा (हरियाणा)

1. शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म.सा. 2. श्री नवोन्मेष मुनि जी म.सा. **ठाणा–02**

चातुर्मास स्थल : एस.एस. जैन सभा, पीएनबी स्ट्रीट, रोरी बाजार, सुभाष चौक, पो. सिरसा–125055 (हरियाणा)

1. श्री मदनलाल जी छाजेड़
शिवाजी कॉलोनी, नियर सिरसा क्लब,
सिरसा-125055 (हरियाणा)
मो.: 9215800833

2. अनिलकुमार जी जैन
राम कॉलोनी, बरनाला रोड
सिरसा-125055 (हरियाणा)
मो.: 8708948313

3. श्री अंकुर जी जैन (मो.: 9729710333)

23. गीदम (छ.ग.)

1. शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. 2. श्री लक्षित मुनि जी म.सा. **ठाणा-02**

चातुर्मास स्थल : ओसवाल भवन, गीदम, जि. दंतेवाड़ा-494441 (छ.ग.)

1. श्री विमलचंद जी सुराना
ओसवाल भवन के सामने,
पो. गीदम जि. दंतेवाड़ा-494441 (छ.ग.)
मो.: 9406312061

2. श्री मोहनलाल जी बुरड़
अशोक किराणा स्टोर
पो. गीदम जि. दंतेवाड़ा-494441 (छ.ग.)
मो.: 9406083795

24. कांकरिया स्थानक, ब्यावर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवर जी म.सा. 2. साध्वी श्री पावन श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. (चिकारड़ा वाले) 4. साध्वी श्री प्रेक्षा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री सत्कार श्री जी म.सा. 6. साध्वी श्री चन्द्रकला श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री ह्रींकार श्री जी म.सा. 8. साध्वी श्री सुखदा श्री जी म.सा.
9. साध्वी श्री श्रुतिप्रज्ञा श्री जी म.सा. **ठाणा-09**

चातुर्मास स्थल : कांकरिया स्थानक, तेलियान चौपड़ के पास, हनुमान मंदिर के सामने, नयाबास, ब्यावर, जि. अजमेर-305901 (राज.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 4 देखें।

25. भूपालपुरा, उदयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (उदयपुर वाले)
2. साध्वी श्री कमल श्री जी म.सा. 3. साध्वी श्री सिद्धमणि श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री अर्पिता श्री जी म.सा. 5. साध्वी श्री मृगांक श्री जी म.सा. **ठाणा-05**

चातुर्मास स्थल : जुहार जैन भवन, मैन रोड, चपलोत हॉस्पिटल के पास, भूपालपुरा, जि. उदयपुर-313001 (राज.)

1. श्री मुकेश जी पगारिया
289, एम-1 रोड, भूपालपुरा,
उदयपुर-313001 (राज.)
मो.: 9413286163

2. श्री प्रकाश जी सुराणा
''सुराणा'', 18-19 न्यू अशोक नगर रोड नं. 2,
उदयपुर-313001 (राज.)
मो.: 9414166014

26. मन्दसौर (म.प्र.)

1. पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री कस्तूरकँवर जी म.सा.
2. शासन दीपिका साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी म.सा. (पिपलियामण्डी वाले)
3. साध्वी श्री शारदा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री दिव्यप्रभा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री लक्षिता श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री यशस्वी श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री मनस्वी श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री विशुद्धि श्री जी म.सा.

ठाणा–08

चातुर्मास स्थल : समता सदन, रोम टावर वाली गली, पुलिस कन्ट्रोल रूम के सामने, नई आबादी, जि. मन्दसौर–458001 (म.प्र.)

1. श्री बाबुलाल जी पितलिया
विकास ट्रेडर्स, दया मण्डी रोड,
गौशाला मार्केट, मन्दसौर–458001 (म.प्र.)
मो.: 9425369562

2. श्री नरेन्द्रकुमार जी चौधरी
77, शुभम् नगर, यश बालाजी चौराहा के पीछे,
किटीयानी, संजीत रोड, मन्दसौर–458001 (म.प्र.)
मो.: 9425369547

27. बड़ीसादड़ी (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री प्रेमलता श्री जी म.सा. (रायपुर वाले)
2. साध्वी श्री पुष्पलता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री निरंजना श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री जिनप्रभा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री विशालप्रभा श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री श्री निष्ठा श्री जी म.सा.

ठाणा–06

चातुर्मास स्थल : समता भवन, राजमहल के पास, बड़ीसादड़ी, जि. चित्तौड़गढ़–312403 (राज.)

1. श्री प्रकाशचन्द्र जी मेहता
क्लॉथ मर्चेन्ट, बड़ीसादड़ी,
जि. चित्तौड़गढ़–312403 (राज.)
मो.: 9414619476, 9784757565

2. श्री विमल जी दलाल
दलालों की पोल, राजमहल रोड, बड़ीसादड़ी,
जि. चित्तौड़गढ़–312403 (राज.)
मो.: 9414619514

28. मालू कोटड़ी, बीकानेर (राज.)

1. पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री पारसकँवर जी म.सा.
2. शासन दीपिका साध्वी श्री कमलप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुमतिकँवर जी म.सा.
4. साध्वी श्री पूर्णिमा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री कनकप्रभा श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री संयमप्रभा श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री प्रथमा श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री सांत्वना श्री जी म.सा.
9. साध्वी श्री लवियशा श्री जी म.सा.
10. साध्वी श्री जयामि श्री जी म.सा.
11. साध्वी श्री कौमुदी श्री जी म.सा.

ठाणा–11

चातुर्मास स्थल : समता साधना भवन (मालू कोटड़ी), रांगड़ी चौक, बीकानेर–334001 (राज.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 3 देखें।

29. नीमच (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री जय श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री चित्तरंजना श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. (इन्दौर वाले)
5. साध्वी श्री सुनीता श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री मल्लिका श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री कृतिका श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री कर्णिका श्री जी म.सा.

ठाणा–08

चातुर्मास स्थल : रामेश समता भवन, एल्कोलाइड कॉलोनी के सामने, नीमच–458441 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 1 देखें।

30. नीमच (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (महाराष्ट्र वाले)
2. साध्वी श्री चंदना श्री जी म.सा. (बड़ीसादड़ी वाले)
3. साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. (बड़ीसादड़ी वाले)
4. साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा.

ठाणा–06

चातुर्मास स्थल : अमृतलाल जी नलवाया का मकान, 25, नाकोड़ा इंटिरियो के पास, शिक्षक कॉलोनी, नीमच–458441 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 1 देखें।

31. काटजू नगर, रतलाम (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री शकुन्तला श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री चारित्रप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री हितैषी श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री रुचिरा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री संभाव्य श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री कीर्तियशा श्री जी म.सा.

ठाणा–06

चातुर्मास स्थल : समता भवन, काटजू नगर, रतलाम–457001 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 12 देखें।

32. दलौदा (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले)
2. साध्वी श्री राजमति श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री विरक्ता श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री तरुलता श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री अंजलि श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : समता भवन, महू–नीमच रोड, पंजाब नेशनल बैंक के पास, दलौदा, जि. मंदसौर–458667 (म.प्र.)

1. श्री अशोककुमार जी जैन
   द्वारा– नानेश ट्रेडर्स, आशापुरा पैट्रोल पम्प के सामने, महू–नीमच रोड, दलौदा, जि. मंदसौर–458667 (म.प्र.)
   मो.: 9754302344
2. श्री प्रवीण जी भंडारी
   प्रवीण ट्रेडर्स, महू–नीमच रोड, समता भवन के पास, भंडारी कॉलोनी, दलौदा, जि. मंदसौर–458667 (म.प्र.)
   मो.: 9425327459

33. भीलवाड़ा (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवर जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुमित्रा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री लक्षिता श्री जी म.सा. (बाड़मेर वाले)
4. साध्वी श्री विशाखा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री प्रगति श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री प्रीति श्री जी म.सा. (चित्तौड़गढ़ वाले)
7. साध्वी श्री मंजरी श्री जी म.सा.

ठाणा–07

चातुर्मास स्थल : शंकर समता भवन, सोनी हॉस्पिटल के पास, भोपालपुरा रोड, शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा–311001 (राज.)

1. श्री बलवंतसिंह जी रांका
रांका हाऊस 'सिद्धशिला'
शंकर समता भवन के पीछे,
सोनी हॉस्पिटल के पास, शास्त्रीनगर,
भीलवाड़ा–311001 (राज.)
मो.: 9829178431, 9462595676

2. श्री पारसमल जी कूकड़ा
पारसमल धर्मीचंद जैन
25, जागेटिया मार्केट,
आजाद चौक,
भीलवाड़ा–311001 (राज.)
मो.: 9462241948

34. महिला भवन, बीकानेर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याणकँवर जी म.सा.
2. साध्वी श्री लब्धि श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सन्निधि श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री वरदा श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : महिला भवन, मरोठी सेठिया मोहल्ला, रांगड़ी चौक के पास, बीकानेर–334001 (राज.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 3 देखें।

35. समता भवन, यशवन्त निवास रोड, इन्दौर (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री चंदनबाला श्री जी म.सा. (बड़ावदा वाले)
3. साध्वी श्री रंजना श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सुलोचना श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री जयंत श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री मधु श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री मुक्ता श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.
9. साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा.
10. साध्वी श्री महिता श्री जी म.सा.
11. साध्वी श्री जिनेन्द्रप्रज्ञा श्री जी म.सा.
12. साध्वी श्री प्रियता श्री जी म.सा.
13. साध्वी श्री अविकार श्री जी म.सा.
14. साध्वी श्री छवियशा श्री जी म.सा.
15. साध्वी श्री पर्युपासना श्री जी म.सा.

ठाणा–15

चातुर्मास स्थल : समता भवन, यशवन्त निवास रोड, 15, रानी सती गेट के आगे, इन्दौर–452002 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 5 देखें।

36. नीमच (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. (जावद वाले)
5. साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री उन्नति श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री सम्पदा श्री जी म.सा.

ठाणा–07

चातुर्मास स्थल : शांतिलाल जी कांठेड़ का मकान, 116, शिक्षक कॉलोनी, नीमच–458441 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 1 देखें।

37. नीमच (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (जावरा वाले)
2. साध्वी श्री किरणप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री अनुराग श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री जयति श्री जी म.सा.

ठाणा–08

चातुर्मास स्थल : प्रबुद्ध जी भारद्वाज का मकान, 175, शिक्षक कॉलोनी, नीमच–458441 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 1 देखें।

38. मणिनगर, अहमदाबाद (गुज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)
2. साध्वी श्री विवेक श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री पुनीता श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री चिंतनप्रज्ञा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री अर्जिता श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री मुदितप्रज्ञा श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री सम्पन्नता श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री सौम्यता श्री जी म.सा.

ठाणा–08

चातुर्मास स्थल : महावीर भवन, 9/ए, 10/बी, हरिनगर कॉ. हाऊसिंग सोसायटी, डॉ. सानेजी की गली, बी.एस.एन.एल. ऑफिस के सामने, ढोर बाजार, मणिनगर, अहमदाबाद–380028 (गुज.)

1. श्री अनुराग जी बम्ब
   29, कोठारी मार्केट, न्यू क्लॉथ मार्केट
   के पीछे, डी.बी. रोड, कांकरिया,
   अहमदाबाद–380022 (गुज.)
   मो.: 9824013526
2. श्री मोहनलाल जी बोथरा
   5, सामवेद अपार्टमेंट, अरविन्द पार्क सोसायटी
   के पास, भैरवनाथ रोड, मणिनगर,
   अहमदाबाद–380008 (गुज.)
   मो.: 9825581229

39. मंगलवाड़ चौराहा (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री रविप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री अक्षयप्रभा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री स्वर्णज्योति श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री प्रसिद्धि श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : महावीर भवन, गोल सर्किल के पास, मंगलवाड़ चौराहा, जि. चित्तौड़गढ़-312024 (राज.)

1. श्री विजयसिंह जी हस्तीमलजी
ओस्तवाल, डूंगला रोड,
हॉस्पिटल के पास, मंगलवाड़ चौराहा,
जि. चित्तौड़गढ़-312024 (राज.)
मो.: 9799479999

2. श्री दिलीपकुमार जी लोढ़ा
कुन्दन नगर, चित्तौड़ रोड,
मंगलवाड़ चौराहा,
जि. चित्तौड़गढ़-312024 (राज.)
मो.: 8094442971

40. नागदा जंक्शन (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियलक्षणा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुमंगला श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रांजल श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री विरल श्री जी म.सा.

ठाणा-04

चातुर्मास स्थल : महावीर भवन, जवाहर मार्ग, केनरा बैंक के पास, नागदा जंक्शन-456335, जि. उज्जैन (म.प्र.)

1. श्री निर्मल जी चपलोत
नवकार ज्वैलर्स, शॉप नं. 1,
सिटी सेन्टर कॉम्प्लैक्स, बद्री विशाल चौक,
नागदा जंक्शन-456335, जि. उज्जैन (म.प्र.)
मो.: 9907030381, 9907030173

2. श्री दिलीप जी ओरा
दिलीपकुमार धर्मीचंदजी जैन
262, जवाहर मार्ग, केनरा बैंक के पास,
नागदा जंक्शन-456335, जि. उज्जैन (म.प्र.)
मो.: 9827725944

41. वापी (गुज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुमनप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री रौनक श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री मर्यादा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री खामेमि श्री जी म.सा.

ठाणा-04

चातुर्मास स्थल : जैन स्थानक, संस्कार धाम स्कूल के पीछे, विभंजन जैन मंदिर के सामने, वापी-396191 (गुज.)

1. श्री पुष्पराज जी तलेसरा
प्रवीण फाईनेंस कं., 114, प्रथम तल,
स्काई लोन बिल्डिंग, चार रास्ता, जी.आई.डी.सी.,
वापी, जि. वलसाड-396161 (गुज.)
मो.: 9426868922

2. श्री किरण जी मुणोत
माधव प्लास्टिक शॉप नं. 2,
भानुज्योत कॉम्प्लैक्स, चार रास्ता, जी.आई.डी.सी.,
वापी, जि. वलसाड-396161 (गुज.)
मो.: 9824772839

42. खैरोदा, उदयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री वनिता श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री साधना श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री अनुप्रेक्षा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री निरामगंधा श्री जी म.सा.

ठाणा-04

चातुर्मास स्थल : महावीर जैन स्थानक भवन, पो. खैरोदा, पंचायत समिति भीण्डर, जि. उदयपुर-313602 (राज.)

1. श्री सुनील जी कूकड़ा
पो. खैरोदा, पं.सं. भीण्डर,
जि. उदयपुर-313602 (राज.)
मो.: 9414165615, 9001235909

2. श्री राजेन्द्र जी बोकड़िया
पो. खैरोदा, पं.सं. भीण्डर,
जि. उदयपुर-313602 (राज.)
मो.: 9116991293, 9928447923

43. बेल्लारी (कर्ना.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सत्यप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री पुण्यप्रभा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सन्मतिशीला श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जैन क्लॉथ मार्केट, बेल्लारी–583101 (कर्ना.)

1. Sh. B. Surendra Ji Bafna
Bafna Sadan, H.No. 11/18, Tallur Road,
Opp. Balaji Nursing Home,
Bellary-583102 (K.N.)
Mob. : 9845207756

2. Sh. Roopchand Ji Parekh
MUSKAAN, 105/3,
Brahmin Street,
Bellary-583101 (K.N.)
Mob : 9742506298

44. कानोड़ (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (देशनोक वाले)
2. साध्वी श्री मननप्रज्ञा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री संस्कार श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सम्यक् श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री पूर्णा श्री जी म.सा.
6. साध्वी खुशाल श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री शुभदा श्री जी म.सा.

ठाणा–07

चातुर्मास स्थल : समता साधना भवन, कानोड़, जि. उदयपुर–313604 (राज.)

1. श्री रमेश जी कुदाल
नगर पालिका रोड के पीछे
कानोड़, जि. उदयपुर–313604 (राज.)
मो.: 9414683309

2. श्री तखतमल जी लसोड़
ब्रह्मपुरी, कानोड़,
जि. उदयपुर–313604 (राज.)
मो.: 9166663441

45. रतलाम (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री प्रीतिसुधा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुभद्रा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री समीक्षणा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री मर्मज्ञ श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री अरुणिमा श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : समता सदन, घास बाजार, रतलाम–457001 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 12 देखें।

46. चिकारड़ा (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री मधुबाला श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री गरिमा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री प्रभुता श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री संवर श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री प्रीति श्री जी म.सा. (नारायणपुर वाले)

ठाणा–06

चातुर्मास स्थल : समता भवन, सदर बाजार, चिकारड़ा, जि. चित्तौड़गढ़–312402 (राज.)

1. श्री पारसमल जी कोठारी
गूजरों का मोहल्ला,
पो. चिकारड़ा जि. चित्तौड़गढ़–312402 (राज.)
मो.: 9982520847

2. श्री सुन्दरलाल जी लोढ़ा
सदर बाजार,
पो. चिकारड़ा जि. चित्तौड़गढ़–312402 (राज.)
मो.: 9772050840

47. मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री चन्द्रप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुजाता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री समिधा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री जागृति श्री जी म.सा.

ठाणा–06

चातुर्मास स्थल : जैन स्थानक, सी–314, हरि मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर–302017 (राज.)

1. श्री प्रेमचंद जी बाफना
सी–315, हरि मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर–302017 (राज.)
मो.: 9314502932

2. श्री विजयचंद जी राजमल जी चौरड़िया
2, भैरव पथ, मोती डूंगरी,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर–302004 (राज.)
मो.: 9829066661

48. भड़भूजा घाटी, उदयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री आदर्शप्रभाजी म.सा.
2. साध्वी श्री शांतप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री पंकज श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सरोज श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री ऋजुता श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री मुस्कान श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री ऋतु श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री जलज श्री जी म.सा.
9. साध्वी श्री गुंजन श्री जी म.सा.

ठाणा–09

चातुर्मास स्थल : कोठारियों की हवेली, भड़भूजा घाटी, उदयपुर–313001 (राज.)

1. श्री अर्जुन जी लोढ़ा
4, मेवाड़ मोटर्स, लिंक रोड,
उदयपुर–313001 (राज.)
मो.: 8949942495

2. श्री पारसकुमार जी डागा
ज. 11, हिरण मगरी सेक्टर–5,
उदयपुर–313001 (राज.)
मो.: 9413300423

49. अलाय (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री ज्योत्सना श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सोऽहम श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : समता भवन, भैरूंजी मंदिर के पास, महाजन बास, पो. अलाय जि. नागौर–341001 (राज.)

1. श्री प्रदीप जी चौरड़िया
पो. अलाय जि. नागौर–341001 (राज.)
मो.: 9414117904

2. श्री सुमित जी सुराणा
पो. अलाय जि. नागौर–341001 (राज.)
मो.: 9558807777

50. गजेन्द्रगढ़ (कर्ना.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चना श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री मल्लिप्रज्ञा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रतिष्ठा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री रुचिता श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : Shree Vardhman Sthanakvasi Jain Shravak Sangh, Gajendragad, Gadag-582114 (K.N.)

1. Sh. Ashok D. Baghmar
Cloth Merchant, Double Road,
Po. Gajendragad,
Dist. Gadag-582114 (K.N.)
Mob. : 9448132552

2. Sh. Rikhabchand Ji Baghmar
Manoharchand Sukhraj Cloth Merchant,
Po. Gajendragad,
Dist. Gadag-582114 (K.N.)
Mob : 9449440044

51. मनावर (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुमुक्ति श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुविराग श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सुविराज श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : नया महावीर भवन, जवाहर मार्ग, पो. मनावर जि. धार–454446 (म.प्र.)

1. श्री प्रवीण जी खटोड़
पुखराज विला, सिंघाना रोड,
पो. मनावर जि. धार–454446 (म.प्र.)
मो.: 7974009406, 9893527566

2. श्री सुबाहु जी फुलेरा
निर्मल ट्रेडर्स, क्रांति चौराहा,
पो. मनावर जि. धार–454446 (म.प्र.)
मो.: 9893527566

52. भीण्डर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री चंचलकँवर जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुरक्षा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुरिद्धि श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सुसिद्धि श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री उमंग श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री सुनिधि श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री सुवृष्टि श्री जी म.सा.

ठाणा–07

चातुर्मास स्थल : समता भवन, पो. भीण्डर जि. उदयपुर–313603 (राज.)

1. श्री रोशनलाल जी वया
सामोता चौक, पो. भीण्डर
जि. उदयपुर–313603 (राज.)
मो.: 9460726958

2. श्री हिम्मतसिंह जी नन्दावत
सदर बाजार, पो. भीण्डर
जि. उदयपुर–313603 (राज.)
मो.: 8094869643, 7726997175

53. परतवाड़ा, अमरावती (महा.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता श्री जी म.सा. (छ.ग. वाले)
2. साध्वी श्री सुनेहा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुशक्ति श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : महावीर भवन, टिम्बर डिपो रोड, पो. परतवाड़ा जि. अमरावती–444805 (महा.)

1. डॉ. सतीश जी एस. बरड़िया
टिम्बर डिपो रोड, पो. परतवाड़ा
जि. अमरावती–444805 (महा.)
मो.: 9422158580, 8600013332

2. श्री संजय जी वी. बरड़िया
टिम्बर डिपो रोड, पो. परतवाड़ा
जि. अमरावती–444805 (महा.)
मो.: 9422156062, 9422158590

54. सरस्वती नगर, जोधपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री मुक्तिप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री अर्चिता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री महक श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री प्रज्ञप्ति श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री संयमसुगंधा श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : जैन स्थानक, सरस्वती नगर, जोधपुर–342001 (राज.)

1. श्री विजयराज जी नाहटा
ए–72, सरस्वती नगर,
जोधपुर–342001 (राज.)
मो.: 9309422105

2. श्री केवलचंद जी देशलहरा
ए–95, सरस्वती नगर,
जोधपुर–342001 (राज.)
मो.: 9414915318

55. सेक्टर 11, उदयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुन्दरी श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री समर्पिता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री श्रेया श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : महावीर भवन, हिरण मगरी, सेक्टर 11, उदयपुर–313001 (राज.)

1. श्री हिम्मतसिंह जी दलाल
94, हिरण मगरी, सेक्टर–13,
उदयपुर–313001 (राज.)
मो.: 9414157125

2. श्री अनिल जी ढाबरिया
33, महाराणा प्रताप कॉलोनी,
हिरण मगरी, सेक्टर–13,
उदयपुर–313001 (राज.)
मो.: 9414157423

56. जावरा (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सरोजबाला श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री शर्मिला श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुगुप्ति श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सुप्रीति श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : समता भवन, जवाहर पथ, सेन्ट्रल बैंक वाली बिल्डिंग, पो. जावरा, जि. रतलाम–457226 (म.प्र.)

1. श्री अशोक जी छजलाणी
36, सोमवारिया बाजार,
पो. जावरा जि. रतलाम–457226 (म.प्र.)
मो.: 9424591173

2. श्री मनीष जी पोखरना
बाबुलालजी पोखरना, मधु एजेन्सी, 52, मुगलपुरा,
पो. जावरा जि. रतलाम–457226 (म.प्र.)
मो.: 9893482863, 8319104628

3. श्री राजेशजी संघवी (मो.: 9826444732)
4. श्री हंसराजजी सेठिया (मो.: 8602370455)

57. सीतामऊ (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री अरुणा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री भावना श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री वीतराग श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : महावीर भवन, महावीर चौक, पो. सीतामऊ जि. मंदसौर–458990 (म.प्र.)

1. श्री सुरेश जी दसेड़ा
   दसेड़ा कॉम्प्लैक्स, बस स्टैण्ड,
   पो. सीतामऊ जि. मंदसौर–458990 (म.प्र.)
   मो.: 9893083931
2. श्री प्रदीप जी जैन
   आदिनाथ ज्वैलर्स, बस स्टैण्ड,
   पो. सीतामऊ जि. मंदसौर–458990 (म.प्र.)
   मो.: 9893741353

58. पाली (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री ललिता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रणतप्रज्ञा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, 15, महावीर नगर विस्तार, आचार्य श्री नानेश मार्ग, बालिया गर्ल्स स्कूल के पीछे, पो. पाली–306401 (राज.)

1. श्री अशोक जी श्रीश्रीमाल
   19, ग्रीन पार्क,
   पो. पाली–306401 (राज.)
   मो.: 9414120829
2. श्री ललित जी कुकड़ा
   17, श्रेयांश नगर, अनुभव स्मारक जैन मंदिर
   के सामने, पो. पाली–306401 (राज.)
   मो.: 6375127390, 9414610121

59. गोपाल गौशाला कॉलोनी, रतलाम (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमोद श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री कृतज्ञा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुगुणा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, गोपाल गौशाला कॉलोनी, रतलाम–457001 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 12 देखें।

60. कानवन (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री कल्पना श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री जयघोषा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, सदर बाजार, जैन मंदिर के सामने, पो. कानवन, जि. धार–454665 (म.प्र.)

1. श्री जीवनलाल जी गोखरू
   महावीर कॉलोनी, पो. कानवन,
   जि. धार–454665 (म.प्र.)
   मो.: 9717970685, 9425356140
2. श्री नरेन्द्र जी पंवार
   पो. कानवन, जि. धार–454665 (म.प्र.)
   मो.: 9425973125
3. श्री संदीप जी बांठिया (मो.: 9425939631)

61. मूंदी (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शना श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री रिद्धप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रतीक्षा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : ओसवाल जैन श्वेताम्बर श्रीसंघ, मु.पो. मूंदी जि. खण्डवा–450112 (म.प्र.)

1. श्री प्रदीप जी कोचर
   वर्धमान इलैक्ट्रिकल्स, मेन रोड,
   मु.पो. मूंदी जि. खण्डवा–450112 (म.प्र.)
   मो.: 9893838804
2. श्री पंकज जी बंब
   रिद्धि–सिद्धि ज्वैलर्स, महाजन मोहल्ला,
   मु.पो. मूंदी जि. खण्डवा–450112 (म.प्र.)
   मो.: 7999676832

62. दुर्ग (छ.ग.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रज्ञा श्री जी म.सा. (उड़ीसा वाले)
4. साध्वी श्री सुमेरू श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री निर्मलयशा श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : समता भवन, शिवपारा, दुर्ग–491001 (छ.ग.)

1. श्री राजेन्द्र जी श्रीश्रीमाल
   शान्ति सदन, मैथिल पारा,
   दुर्ग–491001 (छ.ग.)
   मो.: 9300330075
2. श्री प्रदीप जी बोथरा
   रामेश विला, मोक्ष मार्ग, शिक्षक नगर,
   दुर्ग–491001 (छ.ग.)
   मो.: 9424119340

63. नीमच (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री गुणरंजना श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुवर्णा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : राजेश जी गांधी का मकान, सचिनजी लसोड़ के निवास के पीछे, बंगला नं. 35, गली नं. 3, नीमच–458441 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 1 देखें।

64. लसड़ावन, चित्तौड़गढ़ (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री नमन श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुव्रतयशा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, पो. लसड़ावन जि. चित्तौड़गढ़–312601 (राज.)

1. श्री कमलेश जी चावत
   पुत्र श्री फतहलालजी चावत
   इमली चौक, पो. लसड़ावन तह. निम्बाहेड़ा
   जि. चित्तौड़गढ़–312601 (राज.)
   मो.: 9829640983
2. श्री बाबुलाल जी रातड़िया
   पुत्र श्री माधवलालजी रातड़िया
   सदर बाजार, पो. लसड़ावन तह. निम्बाहेड़ा
   जि. चित्तौड़गढ़–312601 (राज.)
   मो.: 9358179855

65. प्रतापगढ़ (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा. (नगरी वाले)
3. साध्वी श्री सुरक्षण श्री जी म.सा.

ठाणा–3

चातुर्मास स्थल : समता भवन, समता मार्ग, प्रतापगढ़–312605 (राज.)

1. श्री सुरेन्द्र जी बोरदिया
   समता टॉकीज,
   पो. प्रतापगढ़–312605 (राज.)
   मो.: 9414109636
2. श्री चन्द्रप्रकाश जी नगरीवाला
   सदर बाजार,
   पो. प्रतापगढ़–312605 (राज.)
   मो.: 9772349780, 9414396901

66. बोहेड़ा (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सिद्धप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुप्रतिभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रतिज्ञा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, रावला चौक, पो. बोहेड़ा जि. चित्तौड़गढ़–312404 (राज.)

1. श्री मदनलाल जी धींग
   सदर बाजार, पो. बोहेड़ा,
   जि. चित्तौड़गढ़–312403 (राज.)
   मो.: 8890785297
2. श्री मनोज जी भण्डारी
   पुत्र श्री जगदीशजी भण्डारी, पो. बोहेड़ा,
   भण्डारी गली, जि. चित्तौड़गढ़–312403 (राज.)
   मो.: 9414759180

67. रामेश रत्नम्, गंगाशहर, बीकानेर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री नूतन श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री लक्ष्यज्योति श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री ऋषिता श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री विश्रुत श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : रामेश रत्नम्, बोथरा चौक, गंगाशहर, बीकानेर–334001 (राज.)

1. श्री कौशल जी दुग्गड़
   बोथरा गर्ल्स स्कूल के सामने, बोथरा चौक,
   गंगाशहर, बीकानेर–334401 (राज.)
   मो.: 9414137121
2. श्री विमलकुमार जी सेठिया
   जैन मन्दिर के पास, भीनासर
   बीकानेर–334403 (राज.)
   मो.: 9460172673
3. श्री विजयचंद जी सेठिया (9461470063)

68. भीनासर–गंगाशहर, बीकानेर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री मीता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री निशान्त श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : पीरदान जी कांतिलाल जी पटवा का मकान, सेठिया मोहल्ला, भीनासर, जि. बीकानेर-334403 (राज.)

1. श्री विमलकुमार जी सेठिया
जैन मन्दिर के पास, भीनासर
बीकानेर-334403 (राज.)
मो.: 9460172673

2. श्री कांतिलाल जी पटवा
सेठिया मोहल्ला, भीनासर,
बीकानेर-334403 (राज.)
मो.: 7413034102

3. श्री ललितकुमार जी पटवा (मो.: 9079155962, 9829796693)

69. अम्बामाता स्कीम, उदयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री करुणा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री इंगिता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री जिज्ञासा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री कृति श्री जी म.सा. **ठाणा-04**

चातुर्मास स्थल : महावीर साधना एवं स्वाध्याय समिति, अम्बामाता स्कीम, उदयपुर-313001 (राज.)

1. श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी
35-बी, अम्बामाता स्कीम,
उदयपुर-313001 (राज.)
मो.: 9414342753

2. श्री ललित जी धुप्या
रॉयल गार्डन के सामने, रामपुरा रोड,
उदयपुर-313001 (राज.)
मो.: 7976251581

3. श्री फतेहसिंह जी मेहता (मो.: 9829057096)

70. श्यामपुरा, सवाईमाधोपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री अर्पणा श्री जी म.सा. (कानोड़ वाले)
2. साध्वी श्री कविता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री विभा श्री जी म.सा. **ठाणा-03**

चातुर्मास स्थल : जैन वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, श्यामपुरा, सवाईमाधोपुर-322029 (राज.)

1. श्री माणकचंद जी जैन (रिटा. हैडमास्टर)
मु.पो. श्यामपुरा, वाया- कुंडेरा,
जि. सवाईमाधोपुर-322029 (राज.)
मो.: 9413728129

2. श्री ललित जी जैन
मु.पो. श्यामपुरा, वाया- कुंडेरा,
जि. सवाईमाधोपुर-322029 (राज.)
मो.: 9928712564

71. डौंडीलोहारा (छ.ग.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. (भीनासर वाले)
2. साध्वी श्री सुसारिका श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुपर श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सुरक्ति श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री सुनवनिधि श्री जी म.सा. **ठाणा-05**

चातुर्मास स्थल : मधुकर अर्चना भवन, समता भवन के पास, पो. डौंडीलोहारा जि. बालोद-491771 (छ.ग.)

1. श्री फूलचंद जी डोसी
विनोद क्लॉथ स्टोर
पो. डौंडीलोहारा जि. बालोद-491771 (छ.ग.)
मो.: 9424131813

2. श्री गौतमचंद जी सांखला
देव जनरल स्टोर
पो. डौंडीलोहारा जि. बालोद-491771 (छ.ग.)
मो.: 9425563494

72. महामंदिर, जोधपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री वैभवप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री प्रभात श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री लघिमा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री वरण श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री भव्या श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : सुराणा कटला (हेमसिंहजी का कटला), महामंदिर, जोधपुर–342006 (राज.)

1. श्री सुगनचंद जी नवरतनजी चोरड़िया
   हेमसिंहजी का कटला, महामंदिर,
   जोधपुर–342006 (राज.)
   मो.: 9460425065
2. श्री श्रीचंद जी सांखला
   पावती नगर, द्वितीय गली, जालम विलास पोल के अंदर, पावटा, महामंदिर, जोधपुर–342006 (राज.)
   मो.: 9414561873

73. नासिक (महा.)

1. पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री सुबोधप्रभा श्री जी म.सा.
2. शासन दीपिका साध्वी श्री संयति श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री हिमानी श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : कोठारी जैन स्थानक, 4609 राठी चाल, जूना आडगाँव नाका, लक्ष्मण रेखा बिल्डिंग के सामने, पंचवटी, नासिक–422003 (महा.)

1. श्री किशोर जी ललवाणी
   बंशीलालजी ललवाणी
   व्हाईट हाऊस के पास, फ्लैट नं. 4,
   सिद्धि विनायक टॉवर, केनरा बैंक कॉर्नर,
   पो. नासिक–422003 (महा.)
   मो.: 9822456012
2. श्री सचिन जी बैदमूथा
   प्लॉट नं. 5, मानक भवन, न्यू आडगाँव नाका,
   स्वामी नारायण नगर, पंचवटी,
   केनरा बैंक कॉर्नर,
   पो. नासिक–422003 (महा.)
   मो.: 9890391833

74. समता भवन, जयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री प्राची श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रणति श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री प्रखर श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री प्रकृति श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : समता भवन, 13, गायत्री नगर ए, महारानी फार्म, दुर्गापुरा, जयपुर–302018 (राज.)

1. श्री ज्ञानचंद जी मूथा
   सी–11, राजा पार्क, सिंधी कॉलोनी,
   पिंक स्क्वायर के पास, जयपुर–302004 (राज.)
   मो.: 9414054971
2. श्री अभय जी नाहर
   103–104, जनकपुरी–प्रथम
   इमलीवाला फाटक, जयपुर–302005 (राज.)
   मो.: 9829165897

75. सूरत (गुज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री प्रमिति श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, 3 रवि दर्शन सोसायटी, कपाड़िया हैल्थ क्लब के सामने, नवजीवन सर्किल, न्यू सिविल रोड, सूरत–395017 (गुज.)

1. श्री हुलासचंद जी सुराणा
402, उमंग अपार्टमेंट, उमा भवन के पास,
भटार रोड, सूरत–395002 (गुज.)
मो.: 9825198522

2. श्री प्रेमचंद जी पारख
बी–1103, सिलिकॉन पैलेस, अर्चना स्कूल रोड,
एम.एम.सी. स्टोर के पास, पर्वत पाटिया,
सूरत–395010 (गुज.)
मो.: 9426865679

76. जोधपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री विकास श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री अपूर्व श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री चिराग श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री मतिज्ञा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री मैनासुन्दरी श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री सुहानी श्री जी म.सा.

ठाणा–06

चातुर्मास स्थल : कांकरिया पौषधशाला, सरकारी हॉस्पिटल वाली गली, लक्ष्मी नगर, पावटा बी. रोड, जोधपुर–342006 (राज.)

1. श्री बहादुरचंद जी मुणोत
12/7, जालम विलास, गली नं. 4,
हनुवंत गार्डन के पास, पावटा बी. रोड,
जोधपुर–342006 (राज.)
मो.: 9314466412

2. श्री संदेश जी वैद
'शीतल', गली नं. 4, शक्तिनगर,
पावटा सी. रोड,
जोधपुर–342006 (राज.)
मो.: 9460050299

77. कमला नेहरू नगर, जोधपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री पूजिता श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री नीरज श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री श्रुति श्री जी म.सा
4. साध्वी श्री रुचि श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : समता भवन, ए–125, आचार्य श्री नानेश मार्ग, प्रथम विस्तार, एल.बी.एन. स्कूल के पीछे, कमला नेहरू नगर, जोधपुर–342003 (राज.)

1. श्री नेमीचंद जी पारख
53, अरिहंत नगर, गुरों का तालाब रोड,
जोधपुर–342008 (राज.)
मो.: 9414133188

2. श्री सुरेश जी सांखला
37, अरिहंत नगर, गुरों का तालाब रोड,
जोधपुर–342008 (राज.)
मो.: 9414196404

78. डोंडी, बालोद (छ.ग.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री प्रमिला श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुप्रिया श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री अनुजा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : श्री स्थानकवासी जैन भवन, डोंडी, जि. बालोद–491230 (छ.ग.)

1. श्री सुभाषचंद जी ढ़ेलड़िया
पो. डोंडी, जि. बालोद–491230 (छ.ग.)
मो.: 9424107259

2. श्री पूनमचंद जी (राजा) बाघमार
पो. डोंडी, जि. बालोद–491230 (छ.ग.)
मो.: 9425562303

79. नगरी (छ.ग.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सौम्यशीला श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री जयप्रज्ञा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री नियतयशा श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : ओसवाल भवन, पो. नगरी जि. धमतरी–493778 (छ.ग.)

1. श्री खेमचंद जी चौपड़ा
   उत्तम किराणा स्टोर,
   पो. नगरी, जि. धमतरी–493778 (छ.ग.)
   मो.: 8103554565
2. श्री कांतिलाल जी नाहटा
   जे.के. किराणा स्टोर,
   पो. नगरी, जि. धमतरी–493778 (छ.ग.)
   मो.: 9425508461

80. राजनांदगाँव (छ.ग.)

1. पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री विवेकशीला श्री जी म.सा.
2. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशप्रज्ञा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री चन्द्रिका श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, गौरव पथ, राजनांदगाँव–491441 (छ.ग.)

1. श्री उत्तमचंद जी बाफना
   घरौंदा, भरकापारा,
   पो. राजनांदगाँव–491441 (छ.ग.)
   मो.: 9425559060
2. श्री बालचंद जी पारख
   समर्पण, कामठी लाईन,
   पो. राजनांदगाँव–491441 (छ.ग.)
   मो.: 9425240791

81. आसावरा + भदेसर (संयुक्त) (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री धैर्यप्रभा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री मृणालकँवर जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : (प्रथम तीन माह) समता भवन, आसावरा, चित्तौड़गढ़–312602 (राज.)

1. श्री विनोद जी पटवा
   जैन मंदिर के पास,
   पो. आसावरा, जि. चित्तौड़गढ़–312602 (राज.)
   मो.: 9829924620
2. श्री भीयालाल जी मट्ठा
   जैन मंदिर के पास,
   पो. आसावरा, जि. चित्तौड़गढ़–312602 (राज.)
   मो.: 8696487477

चातुर्मास स्थल : (शेष दो माह) नानेश–रामेश समता भवन, मीणा चौक, भदेसर, चित्तौड़गढ़–312602 (राज.)

1. श्री कन्हैयालाल जी मोदी
   मू.पो. भदेसर,
   जि. चित्तौड़गढ़–312602 (राज.)
   मो.: 9784170942
2. श्री अशोककुमार जी मोदी
   भैरूजी बस स्टैण्ड,
   मू.पो. भदेसर, जि. चित्तौड़गढ़–312602 (राज.)
   मो.: 9784925628

82. निफाड़, नासिक (महा.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुवास श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुरम्य श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री सुपद्म श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री सुदक्षा श्री जी म.सा.

ठाणा–05

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, निफाड, भगवान महावीर मार्ग, मामलेदार चौक, मु.पो. निफाड, जि. नासिक–422303 (महा.)

1. श्री नंदलाल जी दलीचंद जी चोरड़िया
स्मिता टेडिंग कं., लक्ष्मीनारायण नगर,
उगाव रोड, मु.पो. निफाड
जि. नासिक–422303 (महा.)
मो.: 9822171827

2. श्री महेश जी जवरीलाल जी बाफना
लक्ष्मीनारायण नगर,
उगाव रोड, मु.पो. निफाड
जि. नासिक–422303 (महा.)
मो.: 9850778257

83. रावतसर, हनुमानगढ़ (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुश्रद्धा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुरचिता श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : श्री सत्यनारायण जी पारीक का मकान, किले के पास, वार्ड नं. 9, पो. रावतसर, जि. हनुमानगढ़–335525 (राज.)

1. श्री विमलचंद जी बरड़िया
वर्धमान वस्त्रालय, मेन बाजार,
पो. रावतसर,
जि. हनुमानगढ़–335524 (राज.)
मो.: 8058516030, 9783128354

2. श्री विजयचन्द जी जैन
जैन वैरायटी स्टोर, भादू पम्प के सामने,
पो. रावतसर,
जि. हनुमानगढ़–335524 (राज.)
मो.: 9024407613, 9166963616

3. श्री मनोजकुमार जी भूरा (मो.: 9462203721)

84. जैतोमंडी (पंजाब)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांत श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री प्रबोध श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रणव श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री प्रशस्ति श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : एस.एस. जैन सभा, चाइना बाजार, नजदीक सब्जी मण्डी, पो. जैतोमण्डी, जि. फरीदकोट–151202 (पंजाब)

1. श्री चन्द्रशेखर जी जैन
पुत्र श्री रोशनलालजी जैन
महावीर पार्क, पो. जैतोमण्डी,
जि. फरीदकोट–151202 (पंजाब)
मो.: 9463105900

2. श्री नवल जी जैन
पुत्र श्री नंदलालजी जैन
रोमाना स्ट्रीट, पो. जैतोमण्डी,
जि. फरीदकोट–151202 (पंजाब)
मो.: 9417583109

85. बाभुलगाँव (महा.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुभक्ति श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुऋचा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री दीपिका श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री निर्वेद श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : जैन स्थानक, महावीर मार्ग, वार्ड नं. 10, पो. बाभुलगाँव, जि. यवतमाल-445101 (महा.)

1. श्री नवीनकुमार जी इंदरचंद जी तातेड़
इंदरचंदजी चांदमलजी तातेड़ कृषि केन्द्र,
मेन रोड, पो. बाभुलगाँव,
जि. यवतमाल-445101 (महा.)
मो.: 8806406992, 8857853731

2. श्री प्रकाशचंद जी लक्ष्मीचंद जी छाजेड़
गणेश वस्त्रालय, मेन रोड,
पो. बाभुलगाँव,
जि. यवतमाल-445101 (महा.)
मो.: 9404825351

86. नोखामण्डी (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुविधा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुचारु श्री जी म.सा.

ठाणा-03

चातुर्मास स्थल : जैन जवाहर भवन, जैन चौक, पो. नोखामण्डी जि. बीकानेर-334803 (राज.)

1. श्री ईश्वरचंद जी बैद
द्वारा नेमचंदजी शांतिलालजी, सदर बाजार,
पो. नोखामण्डी, जि. बीकानेर-334803 (राज.)
मो.: 9413388645

2. श्री उत्तमचंद जी बेताला
जैन चौक,
पो. नोखामण्डी, जि. बीकानेर-334803 (राज.)
मो.: 9460923785

87. नंदुरबार (महा.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सरिश्मा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री ख्याति श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री प्रत्युषा श्री जी म.सा.

ठाणा-3

चातुर्मास स्थल : वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, आदेश्वर नगर, नंदुरबार-425412 (महा.)

1. श्री अशोककुमार जी जसराज जी सांखला
दादाबाड़ी के पीछे, प्लॉट नं. 18,
सांखला साधना, डिज़्नी प्ले स्कूल के पास,
पो. नंदुरबार-425412 (महा.)
मो.: 7588127172

2. श्री कमल जी खेतमल जी कोटड़िया
विराज लाईफ स्टाईल
तिलक रोड,
पो. नंदुरबार-425412 (महा.)
मो.: 9423905569

88. बुरहानपुर (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री करिश्मा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री अणिमा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सर्वज्ञ श्री जी म.सा.

ठाणा-03

चातुर्मास स्थल : आनंद भवन, तिलोक हॉल के सामने, बुरहानपुर-450331 (म.प्र.)

1. श्री अरुणकुमार जी लुंकड़
महाजनपेठ,
बुरहानपुर-450331 (म.प्र.)
मो.: 8770684288

2. श्री अनिलकुमार जी हिरण
विजय नगर कॉलोनी,
बुरहानपुर-450331 (म.प्र.)
मो.: 9977866552

3. श्री संजय जी हिरण (मो.: 9907767766)

89. शिरुड़, धुलिया (महा.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री रमण श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री भाग्य श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : समता भवन, प्रभाकर नगर, शिरूड़, जि. धुलिया–424308 (महा.)

1. श्री प्रकाश जी ललवाणी
   बाजारपेठ, पो. शिरूड़,
   जि. धुलिया–424308 (महा.)
   मो.: 8788366058, 9421529342
2. श्री सुभाष जी ललवाणी
   ललवाणी एण्ड संस
   पो. शिरूड़, जि. धुलिया–424308 (महा.)
   मो.: 9403811379

90. नीमच (म.प्र.)

1. पर्यायज्येष्ठा साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा.
2. शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा.
5. साध्वी श्री यतना श्री जी म.सा.
6. साध्वी श्री दीप्ति श्री जी म.सा.
7. साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा.
8. साध्वी श्री माधुर्य श्री जी म.सा.
9. साध्वी श्री अनुमिता श्री जी म.सा.
10. साध्वी श्री बीजरुचि श्री जी म.सा.
11. साध्वी श्री लोकोत्तर श्री जी म.सा.
12. साध्वी श्री निर्ग्रन्थ श्री जी म.सा.
13. साध्वी श्री निरामय श्री जी म.सा.

ठाणा–13

चातुर्मास स्थल : जयन्तीलाल जी पितलिया का निवास, 156, राजस्व कॉलोनी, टेलिफोन एक्सचैंज के पास, नीमच–458441 (म.प्र.)

सम्पर्क सूत्र : चातुर्मास क्रमांक 1 देखें।

91. रोहट, पाली (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री अभीप्सा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री पुष्पिका श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री मानस श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : जैन स्थानक, जैन मंदिर के पास, रोहट, पाली–306421 (राज.)

1. श्री रतनलाल जी धनराज जी छाजेड़
   जैन मंदिर के पास,
   पो. रोहट, जि. पाली–306421 (राज.)
   मो.: 8107115909
2. श्री प्रकाशमल जी पारख
   जैन मंदिर के पास,
   पो. रोहट, जि. पाली–306421 (राज.)
   मो.: 9929651553

92. नमकमंडी, उज्जैन (म.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुसौम्या श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री हर्षिता श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री विमुक्ति श्री जी म.सा.

ठाणा–03

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, महावीर भवन, नमकमंडी, जि. उज्जैन-456006 (म.प्र.)

1. श्री राजेश जी कांठेड़
20/20, कांकरिया परिसर,
पो. बुधवारिया, जि. उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मो.: 7999100455

2. श्री रविन्द्रकुमार जी कटारिया
17, तुलसी नगर, जैन मंदिर के पास, हीरा मिल रोड,
अरविंद नगर, जि. उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मो.: 9425093682

3. श्री संजय जी पावेचा (मो.: 9826374201)

93. मेरठ शहर (उ.प्र.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री समया श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री रम्या श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री अवियशा श्री जी म.सा.

ठाणा-03

चातुर्मास स्थल : श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, वीर नगर, शारदा रोड, दिल्ली चुंगी के पास, मेरठ शहर-250002 (उ.प्र.)

1. श्री विजेशचन्द जी जैन
681/6, ब्रह्मपुरी,
मेरठ शहर-250002 (उ.प्र.)
मो.: 7017379857

2. श्री अमितकुमार जी जैन
ए-16/1, शम्भू नगर, बागपत रोड,
मेरठ शहर-250002 (उ.प्र.)
मो.: 8909813757

94. चामराजपेट, बेंगलुरु (कर्ना.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री निर्जरा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री छविप्रज्ञा श्री जी म.सा.

ठाणा-03

चातुर्मास स्थल : Shree Vardhman Sthanakvasi Jain Shravak Sangh, 196, 4th Main Road, between 4th & 5th cross, Chamrajpet, Bangaluru-560018 (K.N.)

1. Sh. Shantilal Ji Samdariya
Milan Jewellars, Appurao Road,
6th Main Road, Chamrajpet,
Bangaluru-560018 (K.N.)
Mob. : 9845297341

2. Sh. Sukhveer Chand Ji Kothari
Adishwar Tele Network Pvt. Ltd.
139, 2nd Main 8th Cross,
Chamrahpet, Bangaluru-560018 (K.N.)
Mob. : 9448395900

3. Sh. Ashok ji Khinvesra (Mob. : 9844171300)

95. कोलकाता (प.बं.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री कामना श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सुधृति श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री ईहिता श्री जी म.सा.

ठाणा-04

चातुर्मास स्थल : समता भवन, 39-ए, चक्रबेरिया रोड, (साऊथ), कोलकाता-700025 (प.बं.)

1. Sh. Rajesh Kumar Ji Daga
1/2, Harsh Mukharjee Road (South Block),
1st Floor, Kolkata-700020 (W.B.)
Mob. : 9433021355

2. Sh. Anurag Ji Sethia
28-B, Kalighat Road,
2nd Floor, Kolkata-700025 (W.B.)
Mob. : 9831059371

96. समता भवन, अजमेर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री पूर्वी श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री सुश्रिया श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री शिक्षिता श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री शशांक श्री जी म.सा. **ठाणा–04**

चातुर्मास स्थल : सौभागशशि लोढ़ा समता भवन, माली मोहल्ला, फाय सागर रोड, अजमेर–305001 (राज.)

1. श्री राजेन्द्र जी कोठारी
बी–123, राधा विहार कॉलोनी, लाइन 4,
हरिभाऊ उपाध्याय नगर मेन, पुष्कर रोड,
अजमेर–305001 (राज.)
मो.: 9828249402

2. श्री अनिल जी चौरड़िया
63, रामनगर, गणपति मेडिकल स्टोर के सामने,
पंचौली चौराहा के पास, पुष्कर रोड,
अजमेर–305001 (राज.)
मो.: 9314802985

97. देशनोक (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री अनमोल श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सिद्धि श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री दुंदुभि श्री जी म.सा. **ठाणा–04**

चातुर्मास स्थल : जैन जवाहर मण्डल, पो. देशनोक जि. बीकानेर–334801 (राज.)

1. श्री मोतीलाल जी बुच्चा
वार्ड नं. 13, आंचलियों का बास,
पो. देशनोक, जि. बीकानेर–334801 (राज.)
मो.: 6350348268

2. श्री पानमल जी भूरा
सुराणा मोहल्ला,
पो. देशनोक, जि. बीकानेर–334801 (राज.)
मो.: 8094812556

98. वरोरा (महा.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री प्रियंका श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री पल्लव श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री वाचना श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री रमामि श्री जी म.सा. **ठाणा–04**

चातुर्मास स्थल : जैन स्थानक, मेन रोड, पो. वरोरा, जि. चन्द्रपुर–442907 (महा.)

1. श्री भिकमचंद जी दुगड़
स्वस्तिक प्रोविजन, कामगार चौक,
पो. वरोरा, जि. चन्द्रपुर–442907 (महा.)
मो.: 9922552340

2. डॉ. प्रकाश जी कोटेचा
कमला नेहरू वार्ड,
पो. वरोरा, जि. चन्द्रपुर–442907 (महा.)
मो.: 9890983344

99. त्यागराज नगर, बेंगलुरु (कर्ना.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री दिव्यदेशना श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री नवकार श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री भाविता श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री शुभंकरा श्री जी म.सा. **ठाणा–04**

चातुर्मास स्थल : Shree Vardhman Sthanakvasi Jain Shravak Sangh, 13/4-3, 4th Main Road, 3rd Block, Thyagarajanagar, Bengaluru-560028 (K.N.)

1- Sh. Arving Kumar ji Khivsara
Siddhachal Residency, Flat No. A-401,
6th Main, Tyagrajnagar, Near Dattatrey
Temple, Bangalore-560028 (K.N.)
Mob. : 9845021871

2. Sh. Gopal Chand ji Khivsara
Siddhachal Residency,
6th Main, Tyagrajnagar, Near Dattatrey
Temple, Bangaluru-560028 (K.N.)
Mob. : 9449661006

100. अकोला (महा.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री शृंगार श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री रूपयशा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री दीक्षिता श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री पीहिता श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन संघ, श्री बाविशी जैन भवन, न्यू राधाकिसन प्लॉट, अकोला–444001 (महा.)

1. श्री शरद भाई दोशी
   8, जालाराम सोसायटी, गंगाधर प्लॉट्स,
   दीपक चौक, अकोला–444001 (महा.)
   मो.: 9423429710
2. श्री अमरीश भाई पारेख
   ''पद्मसुख'' अमृतवाड़ी के सामने,
   अकोला–444001 (महा.)
   मो.: 9823045114

101. सैंथिया (प.बं.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री चिरन्तन श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री मृदुलप्रज्ञा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री रोहिता श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : जैन उपासरा भवन, जैन मंदिर, जैन मार्बल के सामने, पो. सैंथिया, जि. बीरभूम–731234 (प.बं.)

1. श्री पंकज जी पारख
   धरमराज तल्ला,
   पो. सैंथिया, जि. बीरभूम–731234 (प.बं.)
   मो.: 9434029855, 8617038252
2. श्री अभय जी चतुर्मूथा
   संधानी मोड, वार्ड नं. 11,
   पो. सैंथिया, जि. बीरभूम–731234 (प.बं.)
   मो.: 9434249451, 9679914232

102. सेंती, चित्तौड़गढ़ (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री भवपार श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री सौम्यसुगंधा श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री चिदानंद श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : अरिहंत भवन, सांवलिया हॉस्पिटल के सामने, बापू नगर, पो. सेंती, जि. चित्तौड़गढ़–312001 (राज.)

1. श्री हिम्मतसिंह जी अलावत
   4–बी, पंचवटी,
   पो. सेंती, जि. चित्तौड़गढ़–312001 (राज.)
   मो.: 9414734967, 9118848852
2. श्री विमलकुमार जी कोठारी
   डी–49 (डब्ल्यू), बापू नगर,
   पो. सेंती, जि. चित्तौड़गढ़–312001 (राज.)
   मो.: 9413315050, 7976239766

103. भीम, राजसमंद (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री अनाकार श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री काव्ययशा श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री तारिका श्री जी म.सा.
4. साध्वी श्री शाश्वत श्री जी म.सा.

ठाणा–04

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, केशरिया नाथ मंदिर मार्ग, सदर बाजार, पो. भीम, जि. राजसमंद-305921 (राज.)

1. श्री पंकजकुमार जी मांगीलाल जी दक
श्री वर्धमान क्लॉथ स्टोर,
सदर बाजार, इन्द्रा चौक, सुजाजी सर्किल,
सीनियर सैंकेण्डरी स्कूल के पास,
पो. भीम, जि. राजसमंद-305921 (राज.)
मो.: 9414256492

2. श्री तरुणकुमार जी मानमल जी गन्ना
सदर बाजार, पुरानी एस.बी.आई. बैंक के सामने,
पो. भीम, जि. राजसमंद-305921 (राज.)
मो.: 9772080401

104. नाई, उदयपुर (राज.)

1. शासन दीपिका साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा.
2. साध्वी श्री आगम श्री जी म.सा.
3. साध्वी श्री तृप्ति श्री जी म.सा.

ठाणा-03

चातुर्मास स्थल : श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन महावीर भवन, पो. नाई, तह. गिरवा, जि. उदयपुर-313001 (राज.)

1. श्री लहरीलाल जी दलाल
पो. नाई, तह. गिरवा
जि. उदयपुर-313031 (राज.)
मो.: 9587447101

2. श्री प्रमोदकुमार जी कोठारी
पो. नाई, तह. गिरवा
जि. उदयपुर-313031 (राज.)
मो.: 9829444705

नोट :- चारित्रात्माओं के नाम, वरीयता क्रम, चातुर्मास स्थल व पता आदि लिखने में यदि कोई त्रुटि हुई हो तो अविनय असातना के लिए श्रमणोपासक टीम क्षमायाचना करती है।

स्वयं को संयमित बनाओ

-आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

जीवन चर्या को नियमित-संयमित बनाओ। तुम जीओ। अपने रास्ते पर चलो। तुम किसी के लिए बाधक मत बनो। किसी की राह को रोको मत। हो सके तो अपनी तरफ से किसी को भी सही राह दिखाओ। चलने की सोच उसकी अपनी होनी चाहिए। तुम उसे चलाने की फिक्र मत करना। चलाने की फिक्र आग्रह पैदा करती है। उस समय उसकी चाहत बनेगी कि वह तुम्हारे दर्शाए रास्ते पर चले। पर जैसे तुम्हारे से कोई जबरन कुछ कराना चाहे, हो सकता है उसकी दृष्टि में वह तुम्हारे हित में हो पर तुम्हें नहीं लगता कि वह तुम्हारे हित में होगा, उस समय तुम्हारा मन उसके प्रति क्या सोचेगा? यदि लाचारी में तुम्हें वैसा कुछ करना पड़ भी गया तो तुम्हारा मन उसके लिए पूर्ण रूप से समर्पित नहीं हो पाएगा। मन से तुम उस कार्य से स्वयं को अलग बनाए रखोगे। इसी दृष्टि से अन्य को भी देखो कि जिससे तुम आग्रह पूर्वक कुछ करवाना चाहते हो उसका मन क्या विचार करता होगा। यदि बार-बार दूसरे के मन के विपरीत कुछ करवाया जाता रहा तो हो सकता है उसके भीतर विरोध के भाव उभरें। वह तुम्हारा विरोधी बन जाय। तुम्हारे प्रति उसके मन में जो भी श्रद्धा विश्वास आदि रहा हो वह धीरे-धीरे मंद पड़ जाय और एक समय ऐसा भी आ सकता है कि वह तुम्हारी कोई बात सुनने को भी तैयार न हो। अतः अपनी बात कहो, पर थोपो मत। यदि कोई नियमादि सामुदायिक दृष्टि से जरूरी हो तो उसके लिए भी तुम उसके भीतर यह अहसास करा दो कि तुम जो कह रहे हो वह एक दम सही है, तब वह भी उसे स्वीकार कर लेगा। उसे सही समझ लेगा तो उसे उस विषय को स्वीकार करने में मन विरोधी भावना में नहीं आ पाएगा, बल्कि वह तुम्हारे प्रति विशेष रूप से समर्पित, श्रद्धावान बनेगा। उसे लगेगा कि तुम उसके लिए जो कह रहे हो, वह उसके लिए ही हितकर है। यदि पर के लिए कुछ जरूरी न हो तो तुम अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर स्वयं को संयमित-नियमित रखो।

वैशाख कृष्ण 2, गुरुवार, 13-04-2017 **साभार- भ्रामरी**

श्री महावीराय नमः
श्री मयाराम गुरुवे नमः

卐 श्री सुदर्शन गुरुवे नमः 卐

आ. श्री अमर सिंह गुरुवे नमः
श्री मदन लाल गुरुवे नमः

संघ शास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के सुशिष्य तथा गणाधीश तपस्वीराज गुरुदेव श्री प्रकाश चन्द जी म. के गुरुभ्राता संघनायक गुरुदेव शास्त्री श्री पदम चन्द जी म. के उत्तराधिकारी संघ संचालक गुरुदेव श्री नरेश चन्द जी म. के आज्ञानुवर्ती 41 मुनिराजों के सन् 2023 के घोषित चातुर्मास -

1. त्रिनगर (दिल्ली)

गणाधीश तपस्वीराज गुरुदेव श्री प्रकाश चन्द जी म., कुशल वक्ता श्री मुकेश मुनि जी म., श्री सौरभ मुनि जी म., श्री विजय मुनि जी म. ठाणे-4

पता: एस. एस. जैन सभा, 2539, जैन स्थानक मार्ग, (जैन मुनि अस्पताल के सामने) त्रिनगर, दिल्ली - 110035 (मैट्रो स्टेशन - कन्हैया नगर)

प्रधान: 93102-82902, महामन्त्री: 99904-73650

2. रोहिणी सैक्टर - 7, 3 व 11 (दिल्ली) संयुक्त चातुर्मास

बहुश्रुत गुरुदेव श्री जय मुनि जी म., सेवामूर्ति श्री आदीश मुनि जी म., श्री पीयुष मुनि जी म., श्री प्रणीत मुनि जी म., नवदीक्षित श्री आदित्य मुनि जी म. तथा नवदीक्षित श्री रोहन मुनि जी म. ठाणे - 6

पता: श्री एस.एस. जैन सभा, C.S.C.-3, पॉकेट H-19, सैक्टर-7 रोहिणी, दिल्ली-85

प्रधान: 93126-41736, महामन्त्री: 98108-53022

पता: श्री एस.एस. जैन सभा, पॉकेट H-34, निकट D.D.A. मार्केट, सैक्टर-3, रोहिणी दिल्ली - 85

प्रधान: 93122-81036, महामन्त्री: 98116-12637

पता: श्री एस.एस. जैन सभा, ब्लॉक F-2/147-148, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली- 85

प्रधान: 95600-78397, 93124-76049 , महामन्त्री: 76784-98156

3. पंचकूला (हरियाणा) संयुक्त चातुर्मास

संघ संचालक गुरुदेव श्री नरेश चन्द्र जी म., तपस्वी रत्न श्री सुधीर मुनि जी म., श्री अक्षय मुनि जी म., श्री नवनीत मुनि जी म., श्री निपुण मुनि जी म., श्री नीरज मुनि जी म. तथा नवदीक्षित श्री नितिन मुनि जी म. ठाणे-7

पता: एस. एस. जैन सभा, नजदीक मार्केट, सैक्टर-17, पंचकूला-131112 (हरि)

प्रधान: 98729-98781, महामन्त्री : 98159-71742

सहयोगी संघ : जैन प्रगतिशील संघ हरियाणा, जैन भवन (म.न. 2050 के सामने), सैक्टर-15, पंचकूला - 131112 (हरि) तथा एस. एस. जैन सभा, नजदीक लाल द्वारा मन्दिर, पीर मुछल्ला-140603

प्रधान: 79733-31630, महामन्त्री : 98159-71742

4. बड़ौत शहर तथा मण्डी (उत्तर प्रदेश)

त्यागशिरोमणि राजर्षि श्री राजेन्द्र मुनि जी म., वात्सल्य मूर्ति श्री नरेन्द्र मुनि जी म., श्री पुनीत मुनि जी म., तथा श्री जयन्त मुनि जी म. ठाणे-4

पता : एस.एस. जैन सभा, नेहरू मूर्ति, नया बाजार, बडौत शहर- 250611, जिला बागपत (उत्तर प्रदेश)

प्रधान: 94126-27766, महामन्त्री: 98371-09291

पता: एस.एस. जैन सभा, महावीर मार्ग, निकट नहर पुल, बडौत मण्डी - 250611, जिला बागपत (उत्तर प्रदेश)

प्रधान: 70176-34268, महामन्त्री: 94128-31237

5. रायकोट (पंजाब)

करुणा पुरुष श्री राकेश मुनि जी म., श्री शीतल मुनि जी म., श्री अखिल मुनि जी म. तथा नवदीक्षित श्री रक्षित मुनि जी म. ठाणे-4

पता: एस.एस. जैन सभा, मेन बाजार, जैन मोहल्ला, रायकोट - 141109, जिला लुधियाना (पंजाब)

प्रधान: 94172-64475, महामन्त्री: 94171-52052

6. अम्बाला शहर

परमविचक्षण श्री सत्यप्रकाश मुनि जी म., श्री समकित मुनि जी म. ठाणे-2

पता: एस.एस. जैन सभा, महावीर भवन, महावीर जैन मार्ग, अम्बाला शहर-134002 (हरियाणा)

प्रधान: 95887-62914, महामन्त्री: 85299-51576

7. डबवाली मण्डी (हरियाणा)

कविरत्न श्री सुनील मुनि जी म., श्री वीरेन्द्र मुनि जी म. तथा श्री अर्हम मुनि जी म., ठाणे -3

पता: एस.एस. जैन सभा, पुराने डाकखाने वाली गली, निकट गर्ल्स स्कूल डबवाली मण्डी - 125104 जिला सिरसा (हरियाणा)

प्रधान : 93548-62237, महामन्त्री : 82958-45206

8. उकलाना मण्डी (हरियाणा)

प्रवचन भास्कर श्री अजित मुनि जी म., श्री अतिशय मुनि जी म. तथा श्री निखिल मुनि जी म. ठाणे - 3

पता: एस.एस. जैन सभा, (गर्ल्स स्कूल के सामने) अनाज मण्डी, उकलाना-125113, जिला हिसार (हरियाणा)

प्रधान: 94162-70696, महामन्त्री : 70156-96714

9. सफीदों मण्डी (हरियाणा)

मधुर वक्ता श्री नवीन चन्द्र जी म., सेवाभावी श्री श्रीपाल मुनि जी म. ठाणे-2

पता: एस.एस. जैन सभा, पुरानी अनाज मण्डी (निकट रेलवे स्टेशन) सफीदों मण्डी - 126112, जिला जीन्द (हरियाणा)

प्रधान: 94160-62112, महामन्त्री: 98960-45507

10. होशियारपुर (पंजाब)

ओजस्वी वक्ता श्री रोहित मुनि जी म., तपस्वी श्री श्रेयांस मुनि जी म. तथा श्री रजत मुनि जी म. ठाणे-3

पता: एस.एस. जैन सभा, गढ़ी गेट, कनक मण्डी, नजदीक टैगोर पार्क, होशियारपुर -146001, जिला नवांशहर (पंजाब)

प्रधान: 98720-03777, महामन्त्री: 98152-34877

11. हिसार (हरियाणा)

संघ दीपक श्री अजय मुनि जी म., श्री दिनेश मुनि जी म., तथा श्री विनीत मुनि जी म. ठाणे-3

पता: एस.एस. जैन सभा, 758-B.P, (नजदीक टाऊन पार्क), P.L.A., हिसार-125001

प्रधान: 98963-77633, महामन्त्री: 94663-81900

- विशेष : जिन क्षेत्रों में कोई भी चातुर्मास नहीं हैं, वे पर्यूषण पर्वों में अपने क्षेत्रों में शास्त्र वाचना, ज्ञान ध्यान तथा प्रतिक्रमण आदि के लिए स्वाध्यायी बन्धुओं को आमन्त्रित करें। सम्पर्क सूत्र : आनन्द जैन दिल्ली: 92124-06490, प्रवीण जैन जालन्धर: 94640-17711
- नोट : ग्रीष्मकालीन निशुल्क जैन धार्मिक शिक्षण शिविर हेतु सम्पर्क: रविन्द्र जैन दिल्ली 98102-87446, आयोजक: गुरु सुदर्शन जन्म शताब्दी वर्ष समिति

श्री महावीराय नमः श्री मदन लाल गुरवे नमः श्री सुदर्शन गुरवे नमः

श्री मथुरा-सुन्दरी-शान्ति-भागवन्ती गुरुणीभ्यो नमः

संघ शास्ता गुरुदेव श्री सुदर्शन लाल जी म. के सुशिष्य संघ संचालक गुरुदेव श्री नरेश चन्द जी म. द्वारा आज्ञा प्राप्त सुन्दरी शान्ति साध्वी संघ की संघ प्रमुखा महासाध्वी श्री संयम प्रभा 'कमल' जी म. के आज्ञानुवर्ती साध्वी-मण्डल के सन् 2023 के घोषित चातुर्मास -

1. जीन्द (रामराए गेट)

संघाधार महासाध्वी श्री लीलावती जी म., सुसाध्वी श्री शालिनी जी म.तथा
सुसाध्वी श्री स्मृति जी म. ठाणे - 3
पता - एस.एस. जैन सभा, रामराए गेट, जीन्द - 126102 (हरि.)
प्रधान : 9315341501, महामंत्री : 9255558030, सेवक : 9779086107

2. रोहतक (हरियाणा)

संघविभूति महासाध्वी श्री शिक्षा जी म., सुसाध्वी श्री सुरेखा जी म.,
सुसाध्वी श्री सिद्ध जी म. तथा नवदीक्षिता सुसाध्वी श्री सुविधि जी म. ठाणे-4
पता - एस.एस. जैन सभा, रेलवे रोड़, रोहतक (हरि)
प्रधान : 9812569977, महामंत्री : 9355626950, सेवक : 9896682914

3. बलबीर नगर (जमनापार दिल्ली) एवं गुलाब वाटिका (संयुक्त)

संघप्रमुखा महासध्वी श्री संयमप्रभा 'कमल' जी म., सुसाध्वी श्री सुभद्रा जी म.,
सुसाध्वी श्री सुबोध जी म., सुसाध्वी श्री सत्य जी म., सुसाध्वी श्री श्रेयस जी म.,
सुसाध्वी श्री समर्पण जी म. तथा सुसाध्वी श्री स्वस्तिक जी म. ठाणे - 7
पता - एस.एस. जैन सभा, राठी मिल कम्पाऊंड, लोनी रोड़
बलबीर नगर (शाहदरा), दिल्ली
प्रधान : 7678426684, महामंत्री : 9818196621, सेवक : 8447441911
पता - एस.एस. जैन सभा, गली नं. 9, लोनी रोड़, गुलाब वाटिका (गाजियाबाद)
प्रधान : 981722343, महामंत्री : 9312595584, कोषाध्यक्ष : 9873387491

4. नांगलोई (दिल्ली)

संघमहिमा महासाध्वी श्री उषा जी म., सुसाध्वी श्री सुवृद्धि जी म. (शालू),
सुसाध्वी श्री सुरभि जी म., सुसाध्वी श्री सुयोग्य जी म. तथा
सुसाध्वी श्री संकल्प जी म. ठाणे - 5
पता - एस.एस. जैन सभा, Y Block, सुल्तानपुरी रोड़, नांगलोई (दिल्ली)
प्रधान : 9891162855, महामंत्री : 9210035936, सेवक :

5. नालागढ़ (हिमाचल)

संघशोभा महासाध्वी श्री ज्योतिप्रभा जी म., सुसाध्वी श्री सुगंध जी म. तथा
सुसाध्वी श्री सीयल जी म. ठाणे - 3
पता - एस.एस. जैन सभा, मेन बाजार, नालागढ़, जिला सोलन (हिमाचल)
प्रधान : 9816961400, महामंत्री : 7018577397, सेवक : 8219336298

6. रतिया (हरियाणा)

महासाध्वी श्री सुचारू जी म., महासाध्वी श्री सुनीति जी म.,
सुसाध्वी श्री सुवृत्ति जी म. तथा सुसाध्वी श्री सौम्य श्री जी म. ठाणे - 4
पता - एस.एस. जैन सभा, मंडी रोड़, ओ.बी.सी बैंक के ऊपर, रतिया (हरि.)
प्रधान : 9416290322, महामंत्री : 9416439772, सेवक : 9355621671

7. रोपड़ (पंजाब)

महासाध्वी श्री सुदक्षा जी म., सुसाध्वी श्री समर्थ जी म.,
सुसाध्वी श्री सुयश जी म., सुसाध्वी श्री सुखद जी म. तथा
सुसाध्वी श्री सिद्धान्त जी म. ठाणे - 5
पता - एस.एस. जैन सभा, जैन महोल्ला, रोपड़ - 140001 (पंजाब)
प्रधान : 9417016836, महामंत्री : 9855025232, सेवक : 9781959511

8. बडौदी (हरियाणा)

महासाध्वी श्री सुमंगला जी म., सुसाध्वी श्री सम्पन्न जी म.,
सुसाध्वी श्री सुलभ जी म., ठाणे - 3
पता - एस.एस. जैन सभा, बडौदी, जिला जीन्द (हरियाणा)
प्रधान : 9813525911, महामंत्री : 7206824001

9. कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

महासाध्वी श्री शुभा जी म., सुसाध्वी श्री सुरक्षा जी म., तथा
सुसाध्वी श्री सुविज्ञ जी म. ठाणे - 3
पता - एस.एस. जैन सभा, आचार वाली गली, थानेसर, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
प्रधान : 8950917987, महामंत्री : 9255900580

10. मुकेरिया (पंजाब)

महासाध्वी श्री सुनन्दा जी म., सुसाध्वी श्री सम्यक जी म. तथा
नवदीक्षिता सुसाध्वी श्री सिद्धायिका जी म. ठाणे - 3
पता- एस.एस. जैन सभा, नजदीक कांग्रेस भवन, मुकेरिया-144211 (पंजाब)
प्रधान : 9814488188, महामंत्री : 8847656653, सेवक : 9872391848

11. गन्नौर (हरियाणा)

महासाध्वी श्री सुमन जी म., सुसाध्वी श्री सुवास जी म., तथा
सुसाध्वी श्री सक्षम जी म. ठाणे - 3
पता - एस.एस. जैन सभा, नजदीक गऊशाला, छोटी मंडी, गन्नौर - 131101
प्रधान : 9215560032, महामंत्री : 8569981444, सेवक : 8699254031

12. उत्तम नगर (दिल्ली)

महासाध्वी श्री सुप्रज्ञा जी म., सुसाध्वी श्री सुधर्म जी म., सुसाध्वी श्री श्रुत जी म.,
सुसाध्वी श्री समित जी म. तथा सुसाध्वी श्री सम्पत्ति जी म. ठाणे - 5
पता - एस.एस. जैन सभा, T 239-240, उत्तम नगर, नई दिल्ली - 59
प्रधान : 8575895205, महामंत्री : 9968247040

13. सुर्य नगर (यू.पी.) दिल्ली

महासाध्वी श्री सुनिधि जी म., सुसाध्वी श्री संवेग श्री जी म., तथा
सुसाध्वी श्री सजग जी म. ठाणे - 3
पता - एस.एस. जैन सभा, सुर्य नगर, जिला गाजियाबाद (यू.पी) निकट दिलशाद गार्डन मैट्रो, दिल्ली
प्रधान : 9810646493, महामंत्री : 9871403648, सेवक : 8878155353

वैज्ञानिक दृष्टि से धोवन पानी की उपयोगिता एवं हमारा विवेक

-पदमचन्द गाँधी, जयपुर

जीवन जीने के लिए प्रकृति ने सभी प्राणियों को नि:शुल्क रूप में जल को उपहार के रूप में दिया है। लेकिन मानवीय लालसा ने इसका दोहन कर करोड़ों का व्यापार खड़ा कर दिया है। हम अपनी झूठी मान-मर्यादाओं एवं प्रतिष्ठा के नाम पर पानी का दुरुपयोग एवं अपव्यय करके असंख्य जीवों की विराधना कर रहे हैं। जल जीवनरक्षक अमृत तुल्य है। यह अमूल्य है। इसके उपयोग का विवेक इसलिए जरूरी है कि पीने योग्य पानी बहुत कम है। जल स्रोतों के अनुसार सम्पूर्ण पृथ्वी का 70% भाग जल से ढ़ँका हुआ है। उसमें से 97% जल क्षारीय या पीने योग्य नहीं है। दो प्रतिशत हिमखण्डों एवं ग्लेशियर के रूप में जमा है तथा केवल मात्र एक प्रतिशत पानी जो झीलों, कुआँ, भूगर्भ स्रोतों, नदियों आदि से प्राप्त होता है। जिसका उपयोग खेती, निर्माण कार्य, पीने के लिए तथा व्यापार, वाणिज्य, उद्योग एवं घरेलू कार्यों के लिए किया जाता है। बढ़ती जनसंख्या के कारण पानी का उपयोग भी बढ़ता जा रहा है, जिससे 'वाटर लेवल' बहुत नीचे जा रहा है, क्योंकि **दुनिया में प्रतिवर्ष 12 से 14 अरब क्यूबिक मीटर पानी मनुष्य काम में लेता है। वर्ष 1984 में जल की प्रतिव्यक्ति उपलब्धता 9000 क्यूबिक मीटर से घटकर 2025 तक केवल मात्र 5100 क्यूबिक मीटर ही रह जाएगी। अत: जल को स्व-विवेक से बचाना अनिवार्य है।**

सचित्त पानी वर्जित क्यों?

प्रभु महावीर ने जल संयम की देशना दी है। आगम-शास्त्रों में पानी को सचित्त अर्थात् जीवयुक्त बताया है। षट्काय के जीवों में अप्काय (पानी) भी जीव की श्रेणी में आता है। पानी की एक बूँद में असंख्यात जीव होने से जीवों का पिण्ड माना है। वैज्ञानिकों के अनुसार उच्च

स्तरीय माइक्रोस्कोप द्वारा जाँचने पर एक बूँद में लगभग 36,450 जीव देखे गए हैं जो त्रसकाय के जीव सिद्ध हुए हैं। इन जीवों की रक्षा हेतु शास्त्रों में पानी छानकर पीने का निर्देश दिया गया है। लेकिन आगम के अनुसार एक बूँद पानी में असंख्यात जीव पाए जाते हैं। पानी स्वयं में जीव है। शास्त्रों में अप्काय के जीव 7 लाख प्रकार के बताए गए हैं। सचित्त पानी उपयोग में लेने से साधारणतया उसकी मात्रा निश्चित नहीं होती। जीव का स्वभाव संवेदनशील होने के कारण पानी के जीव भयभीत रहते हैं। उनमें आपस में भय रहता है। कच्चे पानी में जीवन-मरण की शृंखला उसके स्वभाव के बराबर चलती रहती है, जब तक हम उसको काम में नहीं ले लेते।

पानी में हर क्षण असंख्य जीव पैदा होते हैं तथा मरते हैं। व्यवहार नय से हमें निमित्त का दोष लगता है। बार-बार पानी को बाधा पहुँचाने से उन्हें वेदना होती है। जिसके हम निमित्त बनते हैं तथा अनर्थजा हिंसा के भागीदार बन जाते हैं। अर्थजा हिंसा तो होती ही है लेकिन इसमें हमारा विवेक (यतना) महत्त्वपूर्ण होता है। जिससे दोनों तरह की हिंसा- आवश्यक या अनिवार्य कार्यों में होने वाली हिंसा (अर्थजा) तथा अनावश्यक एवं फिजूल कार्यों में होने वाली हिंसा (अनर्थजा) से बच सकते हैं।

धोवन पानी (अचित्त पानी) का स्वरूप

आगम-शास्त्रों के अनुसार पानी को सचित्त बताया है। जीवन जीने के लिए अचित्त या जीव रहित पानी का विवेक रखने की प्रेरणा दी है। गृहस्थ का जीवन संयमित जीवनशैली पर आधारित होता है। इसमें जल संयम एक मुख्य आयाम है। धोवन/अचित्त व छने जल के उपयोग के पीछे जहाँ एक ओर अहिंसा और अध्यात्म की साधना है, वहीं इसमें दूसरी ओर जल-रक्षण का मंगल सन्देश भी समाया हुआ है। षट्काय के जीवों में अप्काय भी स्थावर जीव की श्रेणी में आते हैं। जीवों की रक्षा के लिए जैनागमों में पानी को अचित्त बनाकर पीने के काम में लेने की व्यवस्था बतायी है। जिससे जीवों का प्रतिक्षण जन्म-मरण रूक सके। ऐसा करने से केवल एक बार ही अल्प हिंसा का दोष लगता है, बार-बार का नहीं। इसमें पानी को अचित्त बनाने के 23 उपाय बताये हैं। सचित्त पानी को अचित्त बनाने की विधि के अनुसार पानी के मूलकों को व ऑक्सीजन को हटाना, पानी के शरीर/योनि की संरचना को तोड़ना तथा पानी के शरीर के छिद्रों को बन्द करना है। जिससे वह कालमर्यादा के अनुसार जीवरहित हो जाता है, इसलिए ऐसा पानी पीने योग्य हो जाता है। पानी का जीवित रूप में होना हमें संकेत करता है कि हम जीवों की रक्षा के लिए सजग बनें, उपयोग में निश्चित मात्रा का संकल्प लेकर हिंसा का अल्पीकरण करें।

सचित्त पानी को अचित्त बनाने के उपाय

1. **मिश्रण बनाना :** स्वकाय शस्त्र से अचित्त बनाना अर्थात् एक किस्म के पानी को दूसरे प्रकार के पानी में मिलाना। जैसे- कुएँ के पानी को तालाब में मिलाने पर वह अचित्त हो जाता है। इनमें अलग-अलग प्रकार के पदार्थ घुले-मिले हुए होते हैं, जिससे वे एक-दूसरे की संरचना को तोड़कर कुछ समय के लिए सचित्त से अचित्त हो जाता है। लेकिन कितनी मात्रा में मिलाया जाये, यह संशय बना रहता है।

2. **पानी को उबालना :** पानी को 90 डिग्री सेल्सियस से ऊपर तीन बार उबालकर पानी को अचित्त बनाया जाता है। वैज्ञानिक परिकल्पना के अनुसार पानी की योनियाँ उबालने से नष्ट हो जाती है तथा पानी में घुली हुई सम्पूर्ण हवा निष्कासित हो जाती है।

फलस्वरूप पानी के जीवों की श्वासोच्छ्वास क्रिया बन्द हो जाती है। पानी जब ठण्डा हो जाता है तो हवा फिर से घुल जाती है तथा शरीर भी फिर से जुड़ जाता है तथा उपर्युक्त योनि रूप धारण कर लेता है। ऐसी स्थिति की कालमर्यादा कुछ समय के लिए होती है। 7-10 घण्टे के बाद उबला पानी फिर से सजीव बन जाता है। उबालने से सूक्ष्म मृत शरीर उसी में रह जाते हैं। अपनी कालमर्यादा के पश्चात् जब यह पानी पुनः उबालकर अचित्त बनाया जाता है तो मृत शरीर उबलने से विषैले व अभक्ष्य बन जाते हैं। उबला पानी 10 से ज्यादा घण्टे तक अचित्त अवस्था में रह सकता है। पानी को गर्म करने के लिए अग्निकाय के स्थान पर सौर ऊर्जा का प्रयोग ज्यादा उचित एवं कारगर है। इसमें हिंसा को एकदम हटाया जा सकता है। सौर हीटर के उपयोग से न केवल अग्निकाय की ही वरन् वायुकाय के जीवों की भी विराधना से भी बचा जा सकता है।

3. धोवन बनाने की परकायिक क्रिया :

(a) आटा, दूध, दही, छाछ आदि के बर्तनों को धोने पर प्रथम बार का धुला हुआ पानी;

(b) दाल, चावल, पोहे आदि पकाने से पूर्व धोने पर उनका धोया हुआ धुँधला पानी;

(c) छाछ के ऊपर का निथरा हुआ पानी;

(d) चावल की तरह ही पर्याप्त मात्रा में तिल, तुष, जौ, कैर, बैर, लोंग आदि एवं आँवले, दाख, आम, अनार, खजूर आदि धोया हुआ पानी;

(e) उबले हुए चावलों का अलग किया हुआ पानी;

(f) वार धोयण-गुड़ के घड़े को धोया हुआ पानी, आदि।

(**नोट :-** दाल, चावल, पोहे आदि केमिकल/दवा युक्त होने पर उनका प्रथम बार का धुला, केमिकल युक्त पानी (स्वास्थ्य की दृष्टि से) पीने के लिए हितकारी नहीं है। अतः दूसरी बार का धुला हुआ पानी)

इस प्रकार आगम में 21 प्रकार के धोवन बताए गए हैं।

4. राख से बनाया गया धोवन ही सर्वश्रेष्ठ :

भारत में प्रतिदिन सुबह बासी बर्तनों को माँजने की प्रथा थी। जिसमें परिण्डे एवं रसोई के बर्तनों को राख से माँजकर बाल्टी में 20-25 मिनट रख दिया जाता था तथा निथार कर धोवन तैयार कर लिया जाता था। आज भी यह प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि धोया हुआ पानी अन्तर्मुहूर्त्त के बाद अचित्त बन जाता है। ज्यादातर राख हल्की क्षारीय या उदासीन होती है। इससे कीटाणुओं की उत्पत्ति नहीं होती। पानी का पूर्ण रूप से वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श बदले बिना धोवन नहीं बनता। ये सभी गुण राख में पाये जाते हैं, इसलिए राख सर्वश्रेष्ठ मानी गई है। इसके द्वारा हवा के मूलक भी खत्म होकर अणु रूप में आ जाते हैं। आपसी घर्षण से पानी की योनियाँ टूट जाती हैं और पानी निर्जीव/अचित्त बन जाता है। राख की उतनी मात्रा पानी में अवश्य घुल जाये जिससे वो नीचे जमने लग जावे। ऐसे पानी को अच्छे से हिलाकर साधु-सन्तों को बहराना चाहिए।

(क) चीनी : चीनी को धोवन के लिए उपयुक्त नहीं माना है। कितनी मात्रा में डाली जाय, संशय बना रहता है तथा इन्द्रिय प्रिय मधुर घोल होने के कारण व्यवहार दृष्टि से धोवन की श्रेणी में नहीं माना गया। 'इन्द्रिय-निग्रह' के स्थान पर यह इन्द्रिय-आसक्ति का कारण बन सकती है। अतः उपयोग में नहीं लेना चाहिए।

(ख) नमक : कुछ आचार्यों ने नमक में 5 स्वादों का मिश्रण माना है। साधारणतः यह मिट्टी और पानी में ही बनता है। इसलिए यह शस्त्र श्रेणी में नहीं रखा गया है।

(ग) कषैले पदार्थ : (त्रिफला, हरड़, आँवला, कत्था) ये सभी मन्द शस्त्र है। थोड़ी सी मात्रा के उपयोग से पानी का रंग बदल जाता है। अत: काम में ली गई मात्रा का सही अन्दाज नहीं लगता। बहुत ज्यादा घोलने से शरीर के लिए हानिकारक हो जाते हैं। इसलिए साधक व्यवहार दृष्टि से इसको प्रासुक नहीं मानते, इसलिए अनुपयुक्त है।

(घ) मिट्टी : मिट्टी को भी पानी के लिए शस्त्ररूप नहीं माना गया है क्योंकि इसको भी पानी का जन्मस्थान माना है। जैसे बरसात की नदी में पानी का घुलकर आना, बोरिंग से मिट्टी का घुलकर आना, इसे व्यवहार में सचित्त ही माना है, अचित्त नहीं।

(ङ) चूना : यह राख से भी तेज शस्त्र माना गया है। थोड़ी सी मात्रा से धोवन बन जाता है लेकिन मात्रा की माप का संशय रहता है। घुलनशीलता की अधिकता तथा शीघ्र कोलॉइड बनने के कारण सही मात्रा को सुनिश्चित करने का कोई मानक नहीं है। जैसा कि राख में अवक्षेपण होने पर पानी को अचित्त मान लिया जाता है। अत: राख जैसी चूने की प्रामाणिक मात्रा को बता पाना व्यवहार सम्मत्त नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट है अत्यधिक घुलनशीलता वाले कम मात्रा के उपयोग से ही रंग बदलने की क्षमता रखने वाले पदार्थ धोवन बनाने के लिए अनुपयुक्त है। इनका एक कारण यह भी है कि इन पदार्थों का पानी संतृप्ति बिन्दू अधिक होने के कारण अवक्षेपण के रूप में मापदण्ड तय नहीं किया जा सकता। जो व्यवहार दृष्टि से संशय युक्त होता है। जो पदार्थ कठिनाई से घुलते हैं, वे भी अनुपयुक्त हैं। अत: **राख से बनाया गया धोवन ही श्रेष्ठ श्रेणी में आता है।**

5. धोवन बनाने की नैसर्गिक क्रिया : रसोई में खाना बनाने वाली आटे की परात, चकला-बेलन को धोने से धोवन निकलता है। इनका घुला हुआ पानी धोवन कहलाता है। इसी तरह अनाज को धोकर पॉलिस उतार कर अच्छी तरह रगड़कर धोया जाता है। यह पानी भी धोवन की श्रेणी में आता है। अनाज, दालें, सब्जी को उबालकर जो अतिरिक्त पानी रह जाता है, वह गर्म पानी ही माना जाता है। इसको भी अचित्त पानी की श्रेणी में माना जाता है।

कुछ लोगों की धारणा है कि आर.ओ. का पानी, फिल्टर पानी, मिनरल वाटर, फ्रीज में रखा गया पानी, ऐक्वागार्ड का पानी धोवन जैसा ही होता है। इसके लिए वैज्ञानिकों ने तथा आगमों में स्पष्ट किया है कि-

- **मिनरल वाटर :** इसे बोतल में भरने से पहले बैक्टीरिया मुक्त बनाने के लिए क्रियाएँ की जाती हैं। पराबैंगनी किरणों से बैक्टीरिया मुक्त कर दिया जाता है। लेकिन इन किरणों से पानी के शरीर की संरचना टूटने की सम्भावना नहीं लगती। वैज्ञानिक प्रयोग ने यह सिद्ध भी कर

दिया है कि राख से बनाया गया धोवन मिनरल वाटर से बहुत अच्छा है, जीव रहित है। मिनरल वाटर त्रसकाय रहित होता है, अप्काय रहित नहीं। मिनरल वाटर में ऑक्सीजन की मात्रा में बदलाव नहीं आता, वह सचित्त ही रह जाता है।

- **फ्रीज में रखा पानी :** फ्रीज में रखा पानी स्व-वाष्पीकरण से ठण्डा नहीं होता। जैसे मिट्टी के घड़े में। फ्रीज में बर्तन को वायुरोधि रूप से कसकर बन्द करके रखने से वह पानी ताप चालकता से और विकिरण प्रक्रिया से ठण्डा होता है। आस-पास की हवा से भाप संघनीत होकर ओस की बूँदों के रूप में बर्तन पर जम जाती है तथा पानी को 'मिश्र-पानी' बना देती है। अत: यह श्रावक के लिए अनुपयुक्त होता है।
- **एक्वागार्ड का पानी :** यह केवल त्रसकाय के जीवों तथा वनस्पतिकाय के सूक्ष्म जीवों को हटाता है। अप्काय के जीवों को नहीं हटाता है। जैसे धोवन पानी में हटाए जाते हैं, ऐसा सम्भव नहीं लगता। इसमें न अतिरिक्त विजातीय पदार्थ मिलाए जाते है, न पानी का शरीर टूटता है, न पानी की काया छानी जाती है। ऑक्सीजन भी अपनी मूलक अवस्था में ही होती है। अत: सैद्धान्तिक रूप से यह सचित्त ही रह जाता है।

धोवन/अचित्त पानी की सुलभता एवं लाभकारिता

(a) दस लीटर पानी में लगभग 50 ग्राम गोबर की राख द्वारा बर्तन धोकर अच्छा धोवन बनाया जा सकता है। 24 मिनट बाद निथार कर अचित्त पानी को काम में लिया जा सकता है। यह सबसे अच्छा एवं सरल तरीका है। राख सहजता से उपलब्ध भी हो जाती है।

(b) राख से अभिभूत पानी की pH मान 7 से ज्यादा (यानी क्षारीय होना) होता है, इससे शरीर में जमा अम्लीय कचरा साफ करने में मदद मिलती है।

(c) राख से उपचारित पानी शुद्ध और पीने योग्य पाया जाता है।

(d) बेंगलुरु के स्कूल में किये गये परीक्षणों में राख घुला पानी (कोलॉइड) पूर्व के पानी से ज्यादा साफ और बैक्टीरिया विहीन पाया गया। ऐसे पानी से शरीर में मूलकों की मात्रा कम हो जाती है अर्थात् D_2 ऑक्सीडेन्ट की तरह काम करता है।

(e) धोवन पानी उपयोग से अहिंसक जीवनशैली एवं पर्यावरण को संरक्षण मिलता है। अत: विवेकशील व्यक्ति का यह कर्त्तव्य बनता है कि उसके साथ सम्मान की दृष्टि रखे। अहिंसक जीवन दर्शन **'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'** के अनुसार जीवरक्षण, करुणाभाव तथा जल का सदुपयोग होता है। व्यक्ति अपने विवेक द्वारा पानी का अपव्यय नहीं करता।

इस प्रकार धोवन पानी के बहुत लाभ पाये जाने के साथ इसके उपयोग पर विवेक रखना जरूरी है। इनका अपव्यय नहीं किया जावे, बर्तन धोते समय मग से पानी लेवे, सीधे नल से या बहते पानी के स्थान पर कम मात्रा में खोलकर अल्पता के साथ पानी को काम में लेवे। लापरवाही से पानी का उपयोग नहीं करे। धोवन पानी के उपयोग से व्यर्थ की हिंसा से बचा जा सकता है।

अत: धोवन पानी के वैज्ञानिक एवं आगमिक स्पष्टीकरण से ज्ञात होता है कि धोवन पानी घर-घर में पीना चाहिए, महँगे एक्वागार्ड, आर.ओ. लगाने के स्थान पर धोवन का उपयोग किया जाए, जिससे साधु-सन्तों को भी आसानी से प्रासुक जल प्राप्त हो सके। यही श्रावक का विवेक है, यतना है। जिससे हिंसा से बचा जा सके।

❀❀❀

धोवन पानी अर्थात् धोया हुआ पानी यानी ऐसा कौनसा पानी जो धोया हुआ ग्राह्य हो।

श्रमण निर्ग्रन्थ अचित्त और निर्दोष पानी को विधिपूर्वक ग्रहण करते हैं। जो विधि-विधान आहार के सम्बन्ध में है, लगभग वही विधान पानी के विषय में है।

गृहस्थ को पानी के सम्बन्ध में पूरा विवेक रखना चाहिए ताकि हमारे साधु-संतों को कल्पनीय पानी मिल सके। श्रावक वर्ग को धोवन पानी की जानकारी होनी अतिआवश्यक है। जल ही जीवन है। जब श्रावक धोवन पानी की जानकारी ही नहीं रखेगा तो चारित्रात्माओं को बहराएगा कैसे ?

आचारांग सूत्र में इक्कीस प्रकार के पानी को कल्पनीय बताया गया है-

1. **उत्सेदिम :** पिसी हुई वस्तु को भिगोकर रखा हुआ पानी। जैसे - आटे से लिप्त बर्तन का धोवन।
2. **संस्वेदिम :** उबली हुई भाजी आदि शीतल जल से धोने पर तैयार हुआ जल। (बिना पिसी वस्तु को धोकर रखा हुआ पानी)
3. **तण्डुलोदक :** चावलों का धोवन।
4. **उबले हुए चावलों का पानी :** ओसामन।
5. **जौ का धोवन**
6. **आरनाल :** कांजी के बर्तनों का धोया हुआ पानी या छाछ के ऊपर का पानी।
7. **द्राक्षा (दाख) का पानी।**
8. **बिल्व का पानी।**
9. **अमचूर का पानी।**
10. **खजूर का पानी।**
11. **बिजौरे का पानी।**
12. **कबीठ का पानी।**
13. **कैर का पानी।**
14. **इमली का पानी।**
15. **आंवले का पानी।**
16. **तिल का पानी।**
17. **तुष का पानी।**
18. **अनार का पानी।**
19. **बेर का पानी।**
20. **अम्बाडक का पानी।**
21. **नारियल का पानी :** कच्चे खोपरे से बाहर निकला हुआ पानी अन्तर्मुहूर्त्त पश्चात् अचित्त हो जाता है।

गर्म पानी, राख से मंजे बर्तनों का पानी (धोवन) भी ग्राह्य है और शारीरिक व वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः शुद्ध व पीने योग्य है। दशवैकालिक सूत्र में गुड़ के घड़े का धोया हुआ पानी **(वार धोवणं)** भी कल्पनीय बताया गया है।

मुनि को वही पानी ग्रहण करना चाहिए जो पूरी तरह से अचित्त एवं शस्त्र परिणत हो गया हो तथा जिसके वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श बदल चुके हों। तत्काल का धोवन मुनि के लिए ग्राह्य नहीं है। धोवन के निष्पति काल के अन्तर्मुहूर्त्त काल के बाद ही धोवन पानी ग्राह्य होता है।

आजकल धोवन पानी मिलना बहुत मुश्किल हो गया है। कई बार सुनने में आया है कि धोवन पानी की उपलब्धता नहीं होने के कारण अनेक साधु-संत काल

धोवन पानी विवेक

-कान्ता जैन (बैद), गाजियाबाद

कवलित हो गए, जो बहुत ही सोचनीय बात है। हमें इतना तो विवेक रखना ही चाहिए ताकि विहार करते समय श्रमणों को पर्याप्त पानी मिल जाए।

अचित्त पानी कब तक अचित्त रहता है, इसकी जानकारी भी होना जरूरी है। एक प्रहर तीन घण्टे का माना जाता है।

1. **ग्रीष्मकाल में : पाँच प्रहर यानी 15 घण्टा**
2. **शीतकाल में : चार प्रहर यानी की 12 घण्टा**
3. **वर्षाकाल में : तीन प्रहर यानी 9 घंटा**

इसके बाद अचित्त पानी सचित्त हो जाता है, जो ग्रहण करने योग्य नहीं रहता है। धोवन पानी जिस बर्तन में रखा हो उस बर्तन पर लीलन-फूलन आदि न हो इसका विवेक रखना चाहिए।

दशवैकालिक सूत्र में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि साधु को अत्यन्त खट्टा या दुर्गन्ध वाला पानी नहीं लेना चाहिए, क्योंकि वह तृषा को दूर करने वाला नहीं होता है। कदाचित् भूल से लेने में आ जाए तो यतना के साथ प्रासुक एकान्त स्थान में त्याग देना चाहिए। उसे स्वयं भी न पीयें और न ही दूसरों को पिलावें।

तहेव चाउलं पिट्ठं, वियडं वा तत्त निव्वुडं।
तिल पिट्ठ पूइ पिन्नागं, आमगं परिवज्जए।।

साधु को निम्न प्रकार का पानी नहीं लेना चाहिए-

1. चावल के तत्काल पिसे हुए आटे का पानी।
2. नदी-तालाब का सचित्त पानी अथवा तीन उबाल से रहित पानी।
3. जीव सहित अथवा जीव रहित ऐसा मिश्र पानी।
4. तीन उकाले आने के बाद अचित्त होकर भी फिर सचित्त हो गया हो ऐसा पानी।

गृहस्थ को चाहिए कि घर के प्रत्येक सदस्य को सचित्त पानी पीने का यथासम्भव त्याग कर देना चाहिए ताकि चारित्रात्माओं को कल्पनीय प्रासुक जल मिल सके और गृहस्थ को कर्मनिर्जरा का लाभ मिल सके।

विवेक में ही सार है, विवेक में ही है धर्म।
धोवन पानी का विवेक रख, खपाओ निज कर्म।।

इस प्रकार श्रमण निर्ग्रन्थ पानैषणा का सम्यक् पालन करते हैं और शुद्ध चारित्र धर्म की आराधना करते हैं तो श्रावक वर्ग को भी शुद्ध धोवन पानी विवेकपूर्वक बहराकर गृहस्थ धर्म का पालन करना चाहिए।

❀❀❀

रचनाएँ आमंत्रित

500-1000 शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी **15-16 अगस्त 2023** का धार्मिक अंक **'श्रवण-विवेक, क्षमा-विवेक'** पर आधारित रहेगा।

इसी क्रम में **15-16 सितंबर 2023** का धार्मिक अंक **'सेवा-विवेक, संघ-विवेक'** विषय पर आधारित रहेगा। सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

गोचरी साधु की भिक्षावृत्ति है,
जीवन निर्वाह की निर्दोष प्रवृत्ति है,
संयम रमणता में अभिवृद्धि है,
बहराने वाला पाता शिवपथ की सिद्धि है।

गो - गोपन करना
च - चित्तवृत्तियों का
री - रीति से, प्रीति से
वि - विनष्ट होंगे
वे - वेग व उद्वेग
क - कर्मों के प्रदेश

घर-बार, कुटुम्ब-परिवार छोड़कर अणगार बने हुए अहिंसक और अकिंचन श्रमण निर्ग्रन्थ के सामने प्रश्न उपस्थित होता है कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पालते हुए जीवन निर्वाह की अपरिहार्य भोजन-पानी की उपलब्धि किस प्रकार करे? जब तक मुनि के साथ शरीर लगा हुआ है तब तक उसे आहारादि सामग्री देना अपरिहार्य होता है, क्योंकि आहारादि के अभाव में शरीर की स्थिति नहीं बनती और शरीर की स्थिति के अभाव में ज्ञान-ध्यान आदि मोक्षांगों की आराधना संभव ही नहीं है। इसीलिए आगम में कहा गया है- **''सव्वं से जाइयं होइ, णत्थि किंचि अजाइयं''** (उत्तरा., अ.2 गा.23) अर्थात् साधु के लिए जो कुछ सामग्री उपयोगी होती है वह सब याचित ही होती है। अयाचित कोई वस्तु उसके पास नहीं होती।

भिक्षा तीन प्रकार की बताई गई है- दीन वृत्ति, पौरुषघ्नी और सर्वसम्पत्करी।

1. **दीनवृत्ति :** अनाथ और अपंग व्यक्ति माँगकर खाते हैं, यह दीनवृत्ति भिक्षा है।
2. **पौरुषघ्नी :** श्रम करने में समर्थ व्यक्ति माँगकर खाता है, यह पौरुषघ्नी भिक्षा है।
3. **सर्वसम्पत्करी :** संयमी मधुकरी वृत्ति द्वारा सहज सिद्ध आहार लेते हैं, यह सर्वसम्पत्करी भिक्षा है।

तीर्थंकर देव ने साधु के निर्वाह हेतु असावद्य निर्दोष मधुकरी वृत्ति का निर्देश किया है। मधुकर अवधजीवी होता है। वह अपने निर्वाह के लिए किसी प्रकार समारम्भ उपमर्दन या हनन नहीं करता। वैसे ही श्रमण भी अवधजीवी होता है, क्योंकि वे किसी प्रकार का पचन-पाचन और उपमर्दन नहीं करते। मधुकर पुष्पों से सहज सिद्ध रस ग्रहण करता है। वैसे ही श्रमण-साधक गृहस्थों के घरों से जहाँ आहारादि स्वाभाविक रूप से बनते हैं, वहाँ से प्रासुक आहारादि ग्रहण करते हैं।

अहो! जिणेहऽसावज्जा,
वित्ती साहूण देसिया।
मोक्खसाहणहेउस्स,
साहुदेहस्स धारणा।।

-दशवैकालिक सूत्र,
अ.5, उद्दे.1, गा.123

तीर्थंकर देवों ने साधुओं के लिए ऐसा सुन्दर मार्ग बताया है कि उनके शरीर कर निर्वाह भी हो जाता है और मोक्ष मार्ग की आराधना भी हो जाती है।

संस्कार सौरभ

गोचरी विवेक

-डॉ. अभाकिरण गांधी, धाराड़मऊ

आहारादि की गवैषणा, ग्रहणैषणा व परिभोगैषणा के लिए बहुत प्रकार के नियमोपनियमों का विधान किया है। आहारादि कैसा लेना, किस प्रकार लेना, कहाँ से लेना, कितना लेना, किस समय लेना, किस

प्रकार दिया जाता हुआ लेना, किस प्रकार दिया जाता हुआ न लेना इत्यादि विषय में शास्त्रकार ने बहुत स्पष्ट दिशा-निर्देश किया है। एषणा समिति के तीन भेद हैं- 1. गवैषणा, 2. ग्रहणैषणा, 3. परिभोगैषणा।

1. **गवैषणा :** गो-चर्या के लिए निकलने पर आहार के कल्पाकल्प के निर्णय के लिए जिन नियमों का पालन करना और जिन दोषों से बचना साधु के लिए आवश्यक है, वह गवैषणा है।
2. **ग्रहणैषणा :** आहारादि को ग्रहण करते समय साधु जिन नियमों का पालन करता है और जिन दोषों से बचता है, उन्हें ग्रहणैषणा कहते हैं।
3. **परिभोगैषणा :** मिलते हुए आहार का उपयोग करते हुए साधु को जिन नियमों को पालना चाहिए और जिन दोषों से बचना चाहिए, उन्हें परिभोगैषणा कहते हैं।

बहराने की प्रवृत्ति आनंद से भरी है,
जीवन में हरदम खुशियाँ खड़ी हैं।
साधु भगवन्त भगवान हैं हमारे,
इनकी सुश्रूषा निर्जरा की लड़ी है।।

श्रावक का कर्त्तव्य है कि साधु-साध्वीजी की निर्दोष गोचरीचर्या का ध्यान रखे। हम भावपूर्वक कोई भी द्रव्य साधु-मुनिराजों को बहराते हैं तो हम संसार सागर को पार कर सकते हैं। हमारे प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान ने धन्यसार्थपति के भव में साधु मुनिराज को घृत (घी) बहराया। घी बहराते हुए इतनी उत्कृष्ट भावधारा चली कि पात्र में से घी जमीन पर बह गया और धन्य सार्थवाह का ध्यान ही नहीं गया। वे तो सिर्फ मुनिराज की चिन्तनधारा में खो गए। भाव समाधि लग गई और उत्कृष्ट परिणामों में बोधिरत्न सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई। आज हम भी मुनिराजों को बहराते हैं, लेकिन वैसी भावधारा हमारी नहीं होती है। उस भावधारा के लिए पूज्य त्यागी वर्ग के प्रति हमें अहोभाव जागृत करना होगा। उनकी निर्दोष आहारचर्या को समझना होगा तभी ऐसे भाव जागृत होंगे। **वर्तमान भौतिक युग में धनोपार्जन के लिए हमारा जीवन लगा हुआ है। धर्मोपार्जन के लिए समय ही नहीं है। जो साथ जाने वाला है उसके लिए समय नहीं और जो छूटने वाला है उसके लिए दिन-रात एक कर रहे हैं। स्वयं की प्रज्ञा को हम जगाएँ, गोचरी के नियमों का अवलोकन करें।**

भावना भव नाशिनी की प्रत्यक्ष वर्तमान घटना का अवलोकन करें- एक मूर्तिपूजक श्राविका, जिनकी आयु 80 वर्ष के लगभग है; वे बीमार हुईं। बेहोश थी, उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया। जैसे ही होश आया तो वहाँ सफेद वस्त्रों में उपस्थित नर्स स्टाफ को देखकर श्राविकाजी ने अपने पुत्र से कहा कि महासतियाँजी पधारे हैं, इनको कुछ अचित्त वस्तु बहराओ और मुझे भी बहराने के लिए दो। बीमार अवस्था में भी बहराने के भाव! इसे कहते हैं सच्ची श्रद्धा-समर्पणा। हम जब भी भोजन करें उस समय भावना भाएँ कि साधु-मुनिराज को बहराकर फिर मैं भोजन ग्रहण करूँ। यह भाव आते ही हमारे आभामण्डल में धनात्मक ऊर्जा बढ़ने लगेगी और जीवन में आनंद का संचार होगा।

संत सेवा की मिली जिनको अनमोल घड़ी है,
तीन लोक की खुशियाँ उनके पैरों में पड़ी हैं।
पुण्यवान को मिलता है गोचरी जैसा अवसर,
जिनके मन में ऐसी भावना उमड़ी है।।

❀❀❀

संस्कार सौरभ

चारित्रात्माओं को आहार बहराते समय सचित्त-अचित्त का विवेक

-संकलित

1. साधु-साध्वियों द्वारा आहारादि की गवेषणा में पूछे जाने पर झूठ नहीं बोलना। जो बात जैसी है वैसी कहना।
2. घर में बहराने योग्य निर्दोष वस्तुओं को हमेशा सचित्त वस्तु के संघट्टे से अलग रखने का रिवाज रखना। जैसे- रोटी का डिब्बा मसालादानी पर नहीं रखना। सारा भोजन डाइनिंग टेबल पर नहीं रखना। मोबाइल, सेल की घड़ी, गैस-चूल्हे व पाइप, पानी की टंकी, आटे की कोठी, हरी सब्जी आदि से दूर रखना। गैस चालू करना हो तो उस पर पहले से तैयार अचित्त वस्तु निर्दोष स्थान पर रखना। सचित्त-अचित्त वस्तुओं को एक अलमारी, एक टेबल और एक कागज आदि पर नहीं रखना। ऐसा करने से श्रावक अपने बारहवें व्रत की शुद्ध पालना कर सकता है और सचित्त-निक्खेवणया, सचित्त-पिहणया, इन अतिचारों से मुक्त रह सकता है।
3. सचित्त के संघट्टे से युक्त अचित्त वस्तुओं को साधु के निमित्त से अलग-अलग नहीं करना परन्तु जब अचित्त वस्तु स्वयं के प्रयोजन से उठाने का काम पड़े तो वापस असूझती नहीं रखना, योग्य निर्दोष स्थान पर रखना। जिससे कभी भी अचानक म.सा. पधार जावे तो सभी वस्तुएँ सहज सूझती मिले। ऐसा विवेक स्वयं रखना एवं घर के अन्य सदस्यों व नौकर आदि को भी सुपात्र दान का विवेक दिलाना।

[असूझती = अकल्पनीय (असूसती), सूझती = कल्पनीय (सूसती)]

4. मोबाइल, सेल की घड़ी, कम्प्यूटर आदि विद्युत उपकरण या अन्य कोई भी सचित्त वस्तु से स्पर्श रहे हुए व्यक्ति को गोचरी हेतु म.सा. के पधारने पर उन्हें गोचरी बहराने के लिए कोई प्रवृत्ति नहीं करनी चाहिए। विनय रूप से सामने खड़े रहने में कोई बाधा नहीं है।
5. भोजन करने समय सुपात्र दान की भावना भाना और मोबाइल, सेल की घड़ी, कच्चा पानी आदि सचित्त वस्तु से अलग बैठना, यथासंभव डाइनिंग टेबल पर भी बैठकर नहीं खाना। इसका स्वयं विवेक रखना और घर के सदस्यों को भी विवेक दिलवाना।
6. बहराने के लिए चलता हुआ व्यक्ति रास्ते में फ्रिज, विद्युत उपकरण, पानी की मटकी/टंकी आदि सचित्त पदार्थों से दूर रहे। किसी वस्तु में फूँक देना नहीं, किसी को संकेत देने के लिए चुटकी, ताली आदि बजाना नहीं। घुटने से ऊपर की ऊँचाई से कोई वस्तु, भाप की बूँदें, चीनी के कण मात्र भी गिराना नहीं।
7. सभी प्रकार के इलेक्ट्रिक साधन, फ्रिज, मोबाइल, कैल्कुलेटर, सेल की घड़ी, बैट्री, प्रेस आदि चालू

हो, कपड़े गीले हो, मिर्ची, नींबू आदि का ताजा अचार जो गला नहीं हो (आठ दिन के पहले का), धोये हुए गीले बर्तन आदि वस्तुएँ 'सचित्त' होती हैं। अत: इनसे दूर रहकर या बिना छुए सूसती सामग्री बहराना। मोबाइल बंद हो तो भी असूसता होता है, क्योंकि उसके भीतर बैट्री चालू रहती है।

8. साधु को गोचरी बहराने के निमित्त से चम्मच, कटोरी, प्लेट आदि बिगाड़ना नहीं तथा आँगन धोना पड़े इस तरह से वस्तु गिराते हुए नहीं बहराना।

9. दूध उबल रहा हो, रोटी जल रही हो, पानी की बाल्टी भर गई हो, तेल जल रहा हो और म.सा. गोचरी हेतु पधार जावें तो अपना काम बिगाड़ना नहीं। जो काम जिस ढंग से करना हो, उसमें एतराज नहीं। दूसरा सूसता व्यक्ति गोचरी बहरा सकता है।

10. घर में सचित्त वस्तुओं का कार्य करते समय रास्ते के बीच में बिखेर कर नहीं बैठना, जिससे संत-महासती अचानक पधार जावें तो सहज रास्ता मिल सके। गोचरी के समय घर का दरवाजा अंदर से बंद नहीं रखना। उस समय पोछा लगाना, आँगन धोना आदि नहीं करने का विवेक रखना।

11. घर की तरफ आते हुए म.सा. को देखकर भागना नहीं, अंदर सूचना नहीं देना, अंदर मालूम पड़े ऐसा संकेत शब्द आदि नहीं करना, कोई वस्तु (झाड़ू, पेपर, कपड़ा आदि) हो तो फैंकना नहीं, सचित्त के संघट्टे में रखना नहीं। नीचे रास्ते में पड़ी वस्तुएँ, जूते आदि को इधर-उधर धकेलना नहीं।

12. सचित्त के संघट्टे में रहा व्यक्ति रास्ते में खड़ा हो, बाहर जा रहा हो और म.सा. पधार रहे हों, तब म.सा. को रास्ता देने के लिए इधर-उधर खिसकना नहीं, पीछे मुड़ना नहीं, आमने-सामने आ जावे, रास्ता संकड़ा हो तो एकदम हटना नहीं, विवेकपूर्वक खड़े रहना, म.सा. पीछे हटकर रास्ता दे देंगे।

13. किसी भी प्रकार की भौतिक लालसा रखे बिना निर्जरा की भावना एवं निष्काम बुद्धि से बहराना। ईर्ष्या एवं अहंकार से नहीं बहराना। किसी भी वस्तु को जबरदस्ती बहराने की कोशिश नहीं करना। बिना पूछे चुपके से कोई भी वस्तु म.सा. के पात्र में नहीं डालना।

14. बहराने के बाद अगर आहार कम पड़ जाए तो उपलब्ध अन्य खाद्य-सामग्री से पूर्ति कर लेना या ऊनोदरी कर लेना, परन्तु नया आरम्भ-सारम्भ नहीं करना।

15. किसी की गलती से घर असूझता (असूसता) हो जाने पर कषाय नहीं करना, विवेक बढ़ाना। उस समय म.सा. को पुन: घर फरसने का भी नहीं कहना।

16. साधु-साध्वी के निमित्त से कोई भी वस्तु खरीदकर, बनाकर सामने (टिफिन आदि) ले जाकर एवं झूठ बोलकर नहीं देना। किसी भी साधु-साध्वी की लाचारी/बीमारी आदि में दवा आदि मंगाने पर, देना पड़े तो स्पष्ट सही बोलकर देने का आगार। निर्दोष गवेषणा करने वाले एवं सदोष ग्रहण नहीं करने वाले को झूठ बोलकर नहीं देना।

17. साधु-साध्वी को बहराने के लिए भोजन, चाय, ज्यूस (जूस) आदि नहीं बनाना। साधु के लिए राख डालकर या 2-4 बर्तन धोकर, गर्म करके अचित्त पानी नहीं बनाना। घर में सहज राख से बर्तन धुलते हो तो वह निर्दोष पानी रखने में कोई दोष नहीं। प्रतिदिन सहज में ही एक समय बर्तन राख में माँजने चाहिए।

18. (क) राख से माँजे हुए बर्तनों को धोने पर प्रथम बार का धुला पानी, (ख) आटे, दूध, दही, छाछ

आदि के बर्तनों को धोने पर प्रथम बार का धुला पानी, (ग) दाल, चावल आदि पकाने से पहले धोने पर, उनको धोया हुआ धुँधला पानी, (घ) छाछ के ऊपर का निथरा हुआ पानी आदि धोवन पानी एक बर्तन में एक तरफ रखे हो तो 15 मिनट के बाद सहज बने हुए धोवन है। ऐसा सहज बना हुआ धोवन, साधु-साध्वी एवं सचित्त के त्यागी श्रावक वर्ग सभी के लिए ग्राह्य है।

(नोटः- दाल, चावल आदि केमिकल युक्त होने पर उनका प्रथम बार का धुला केमिकल युक्त पानी पीने के लिए हितकारी नहीं है।)

19. जैन साधु के वेश में रहे किसी भी साधु को अपने हाथ से कोई भी अकल्पनीय वस्तु, रुपये, पैसे, दूषित आहार-पानी आदि किसी भी स्थान पर नहीं देना।

20. साधु के वापरने के लिए पाट, पाटले, अलमारी आदि बनवाकर या खरीदकर नहीं देना। साधु के निमित्त से स्थानक या कमरा नहीं बनवाना। श्रावकों के धर्म-ध्यान के लिए बनाया गया स्थानक/कमरा निर्दोष होता है।

सचित्त पदार्थ :-

(सामान्यतया दिनचर्या में काम आने वाली सचित्त वस्तुएँ) - ककड़ी, खीरा, गोभी, टमाटर, प्याज, गाजर, मूली, चुकंदर, हरे छोले, हरे मटर, पुदीना, पालक आदि सभी तरह की सलाद। अनार, अमरूद, अंगूर, तरबूज आदि फल (बीजयुक्त होने के कारण)। सभी तरह का सादा नमक (काला नमक एवं सिके हुए नमक को छोड़कर)। साबुत- बादाम, पिस्ता, अखरोट, चिरौंजी, किशमिश, खसखस के दाने, अंजीर आदि ड्राईफ्रूट। साबुत- सौंफ, जीरा, ईलायची, अजवायन, तरबूज के बीच, खरबूजे के बीज आदि। सादा पानी, बिसलेरी आदि पैक बोतल का पानी, केन का पानी, फिल्टर/आर.ओ. का पानी, कच्चे नारियल का पानी आदि। बर्फ, बर्फ का गोला, बर्फ से युक्त पेय/खाद्य पदार्थ। टमाटर, भिंडी आदि की अधसिकी सब्जी, अधसिके/कम सीजे हुए मिर्ची के गट्टे। धनिया, पुदिना, मिर्ची, काचरी आदि की चटनी (बिना छोंकी हुई)। खम्मण, डोसा, चिलड़ा, दाल, सांभर आदि में ऊपर डाला हुआ धनिया पत्ती, मिर्ची या टमाटर आदि हो तो। दही के रायते, पुलाव, पोहे आदि में डाला हुआ टमाटर, हरे छोले, हरे मटर, धनिया, अनारदाना, अंगूर, खीरा आदि (कम सीजा हुआ होने पर)। सिका हुआ भुट्टा/मक्का/कॉर्न, सिकी हुई गेहूँ की बाली। कच्ची प्रत्येक वनस्पति का रस (बारीक वस्त्र से छने बिना) जमीकंद का रस (बिना शस्त्र परिणत हुआ)। जिस मिठाई, नमकीन आदि में किशमिश, चिरौंजी, साबुत बादाम, ईलायची या खसखस के दाने ऊपर से लगाए/डाले हुए हों, वह भी सचित्त/मिश्र समझना। ठंडे पानी या नॉर्मल गर्म पानी में भिगोई हुई साबुत बादाम/नुक्का युक्त बादाम के टुकड़े। केरी, गूंदा, केर, मिर्ची आदि सभी तरह का ताजा अचार (8 दिन से पहले तक)। पानी में भिगोए हुए मूँग, मोठ, चना आदि अनाज और अंकुरित होए हुए अनाज (बिना सीझे हुए अथवा कम सीझे हुए)।

अचित्त पदार्थ :-

बादाम का नुक्का हटा हुआ हो, अथवा भीगे हुए बादाम का छिलका पूरा उतारा हुआ हो, अथवा तेज गर्म पानी में भिगोया हुआ हो, अथवा तला या सिका हुआ बादाम साबुत भी हो तो अचित्त समझना। बीज निकाली हुई मुनक्का अचित्त समझना। पका हुआ केला, काजू, लौंग अचित्त हैं। पके हुए फलों का बीज रहित रस, बीज रहित टुकड़े/पना अचित्त होता है।

❀❀❀

गुरुचरण विहार

कठिन क्रिया की जय-जयकार। राम गुरु की जय-जयकार।।
नीमच की माटी हो गई चन्दन। पधार गये हैं माँ गवरा के वन्दन।।

मेवाड़ के बाद मालवा की पावन धरा में हुआ धर्म का शंखनाद

युग निर्माता आचार्य श्री रामेश एवं बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. का सादगीपूर्ण चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

> *प्राणीमात्र के साथ मैत्री भाव हो – आचार्य श्री रामेश*
> *दूसरों को अपना समझना सबसे बड़ी भ्रांति – उपाध्याय प्रवर*

छोटीसादड़ी, मलावदा, नाराणी, केसुन्दा, नीमच।

गुरु के मिले चरण कि मेरे रोम खिल गए।
पुलकित हुआ है मन कि मेरे रोम खिल गए।।

उच्च आचार और उच्च जिनका चिंतन है ऐसे युग निर्माता, साधना के शिखर पुरुष, उत्क्रान्ति प्रदाता, जन-जन के भाग्य विधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा., बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का मेवाड़ क्षेत्र में अपूर्व धर्म जागरणा के बाद मालवा की पावन भूमि पर पावन पदार्पण से जन-जन के हृदय धर्मोल्लास से भावित हो गये। मालवा में चारों ओर खुशियों का वातावरण छा गया। दिव्य महापुरुषों के दिव्य दर्शन, दिव्य वाणी से जन-जन धर्म से सराबोर हो गया। धर्मनगरी नीमच महापुरुषों के पधारने से तीर्थधाम हो गया। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-8 संत का नीमच चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश सादगीपूर्ण माहौल में हुआ। शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुशीलाकँवरजी म.सा. (महाराष्ट्र वाले), साध्वी श्री चेतनश्रीजी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकांताश्रीजी म.सा. (जावरा वाले), साध्वी श्री

राजुलश्रीजी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल का भी चातुर्मास हेतु नीमच में सानन्द प्रवेश हुआ। चारों ओर हर्ष व्याप्त है। धर्म-ध्यान, तप-त्याग, व्याख्यान वाणी का अपूर्व ठाठ **'साधना महोत्सव'** नीमच में लग गया है।

विनय धर्म का मूल है

16 जून 2023, जैन स्थानक भवन, छोटीसादड़ी। श्रद्धेय श्री गगनमुनिजी म.सा. द्वारा मंगल प्रार्थना सुमधुर स्वरों में करवायी गई। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगल पाठ प्रदान किया। विद्या निकेतन में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''विनय धर्म का मूल है। धर्म मूल और वृक्ष है, मोक्ष फल है। भक्ति बहुमानपूर्वक की जाने वाली क्रिया विनय है। आठ कर्मों का भेदन विनय होता है। विनय का अर्थ सदाचार है। पाप अभिमान का मूल है। विनय ही मनुष्य को ऊपर उठाता है और पाप अभिमान नीचे ले जाता है। सदाचार का अर्थ होता है सद्व्यवहार। व्यक्ति की पहचान HOM से होती है। H= Home, O = Office, M = Market से होती है। घर और ऑफिस में उसका व्यवहार कैसा है और बाजार में उसकी साख कैसी है? धर्म सदाचार से जन्म लेता है। गलत व्यवहार को बदलने पर मन एकाग्र होता है। जीवन का व्यवहार सुधारेंगे तो शांति मिलेगी।''**

शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरु भक्ति गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री राजुलश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का गुरु चरणों में पधारना हुआ। सभा का संयोजन करते हुए युवा चेता श्री श्रेणिकजी नाहर ने अधिक से अधिक विराजने की प्रार्थना की। दोपहर में आगम वांचनी, ज्ञान-चर्चा एवं प्रश्नोत्तरी महापुरुषों के सान्निध्य में हुई। बच्चों के शिविर में साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. ने विशेष रूप से बच्चों के जीवन में बाल्यकाल से संस्कार निर्माण एवं संयम जीवन की प्रेरणा प्रदान की। महिला शिविर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने यतना-विवेक की सूक्ष्म एवं संक्षिप्त जानकारी प्रदान की। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

आचरण एवं उपदेश की एकरूपता जहाँ है वह सच्चा गुरु

17 जून 2023। बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी ओजस्वी, तेजस्वी, अमृत देशना में फरमाया कि **''तीर्थंकर भगवान ने पहले जीवन जिया, फिर बाद में उपदेश दिया। जो पहले जीता है और बाद में उपदेश देता है, वही सच्चा गुरु है। तीर्थंकर भगवान के जीवन की पराकाष्ठा थी। उन्होंने संतोष, सहिष्णुता से जीवन निर्माण किया है। हम जैसे हैं नहीं, वैसे दिखने की कोशिश करते हैं। भगवान हमें सावधान करते हैं कि तू अकेले ही रहना, सभी मित्र एवं रिश्तेदार मिनटों में छिटक कर अलग हो जाते हैं। दूसरों को अपना समझना सबसे बड़ी भ्रांति है। साधक तू अकेला है और संसार में अकेले ही बने रहना। सुखी बनना है तो सब पर अधिकार जमाने की भावना को छोड़ना पड़ेगा। हम एकत्व की ओर बढ़ेंगे तो सुखी बनेंगे।''**

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमेशा मनुष्य शिकायत करता रहता है और उसी में उलझा रहता है। सबसे ज्यादा दु:खी मनुष्य सुख-सुविधा, साधनों की प्राप्ति के लिए होता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा., साध्वी श्री राजुलश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री अक्षिताश्रीजी

म.सा. आदि ने गुरु भक्ति गीत प्रस्तुत किया। बच्चों के शिविर में साध्वी श्री विनयश्रीजी म.सा. ने टी.वी., मोबाइल और दुर्व्यसनों से दूर रहने की प्रेरणा दी।

महिला शिविर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने यतना-विवेक एवं जिज्ञासा का समाधान किया। आगम वांचनी, ज्ञान-चर्चा आदि भी सम्पन्न हुई।

समता भाव से मोक्ष की प्राप्ति

18 जून 2023। प्रात: रविवारीय समता शाखा में समता आराधना करने हेतु जन-जन में अपूर्व उत्साह का वातावरण देखने को मिला। आराध्य देव आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगल पाठ प्रदान किया। जैन स्थानक में धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आगम ज्ञाता आचार्य भगवन् ने फरमाया कि **''धर्म शान्ति, समाधि और क्षमता देता है। धर्म का फल आनंद देने वाला होता है। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र मोक्ष का मार्ग है। राग, द्वेष हरने से वीतरागता आती है। बिना वीतरागता के मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। समता भाव से मोक्ष की प्राप्ति होती है। श्रमण का अर्थ होता है श्रम करने वाला। धर्म पर डट जाना ही वीरों का काम होता है। जो व्यक्ति मन को जीतने की क्षमता रखता है, वह वीर है। जहाँ हिंसा नहीं होती, वहीं वास्तविक धर्म होता है। धर्म के लिए प्राणों को न्यौछावर करने में भी पीछे नहीं हटना चाहिए।''**

श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध, मान, माया, लोभ आत्मा का स्वभाव नहीं है। क्षमा, नम्रता, सरलता, संतोष, आनंद, हर्ष यह आत्मा का स्वभाव है।

सामूहिक एकासन के अन्तर्गत 253 एकासन के प्रत्याख्यान भाई-बहिनों ने ग्रहण किये एवं एक बैठक पर 5 सामायिक 65 भाई-बहिनों द्वारा की गयी। ललिताजी पटवा ने 5 उपवास के प्रत्याख्यान लिये। वैभवजी कासमा ने 3 उपवास एवं ज्योतिजी नागौरी व आदित्य नलवाया ने 2 उपवास के प्रत्याख्यान लिये।

सभी सम्प्रदाय के धर्म प्रेमियों ने दर्शन-प्रवचन का लाभ लिया। श्रेणिकजी नाहर एवं महेश नाहटा ने महापुरुषों के दिव्य गुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन किया। शीलव्रत के प्रत्याख्यान श्री नेमीचंदजी, स्नेहलताजी डूंगरवाल ने लिया। वर्ष में 100 एकासन उषाजी सहलोत-उदयपुर, आजीवन टी.वी. देखने का त्याग प्रेमबाई मेहता-प्रतापगढ़, विमलादेवी डूंगरवाल-छोटीसादड़ी ने लिये। आजीवन थाली धोकर पानी पीने का नियम सुजानमलजी तेजावत, जमीकंद त्याग चन्द्रप्रकाशजी तेजावत, एक वर्ष पक्की नवकारसी कुसुमजी नागौरी एवं महीने में एक दिन मोबाइल नहीं चलाने का व्रत कई भाई-बहिनों ने लिया। नवयुवकों ने व्यसन मुक्ति के प्रत्याख्यान लिये। महत्तम महोत्सव के अंतर्गत प्रतिदिन 1 घंटा मौन करने का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। दोपहर में उभय गुरु भगवंतों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञान-चर्चा आदि हुई।

शान्ति त्याग में है, भोग में नहीं

19 जून 2023, गाँव मलावदा। युग पुरुष आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का छोटीसादड़ी से मलावदा रमेशजी पारीक के निवास स्थान पर पधारना हुआ। धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए श्रद्धेय श्री गगनमुनिजी म.सा. ने ***''सत्संग से सुख मिलता है, जीवन का कण-कण खिलता है''*** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि खाना-पीना, कमाना, परिवार बढ़ाना जीवन का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। हम मनुष्य जन्म से

परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। आज हम भौतिक आकर्षण, टी.वी., मोबाइल एवं आधुनिक साधनों के पीछे मन को उलझाकर रखे हुए हैं। धन कमाने की अंधी दौड़ लगी हुई है, धर्म में मन नहीं लगता है। इन सुविधाओं से सुख की बजाय दु:ख बढ़ रहा है। शान्ति, समाधि त्याग में है, भोग में नहीं। अनीति, झूठ, बेईमानी से कभी शान्ति और सुख नहीं मिलता है। जीवन में नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी, प्रमाणिकता सर्वप्रथम होनी चाहिए।

श्री गुणीशमुनिजी म.सा. ने जैन साधु के पाँच महाव्रतों का सुंदर विवेचन प्रस्तुत किया। शीलव्रत का प्रत्याख्यान रामावतारजी पारीक एवं लालारामजी पारीक ने आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से ग्रहण किया। तेले-तप की आराधना आदित्यकुमारजी नलवाया ने लिया। पन्द्रह मिनट प्रभु भक्ति का स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहिनों एवं ग्रामीणों ने लिये। व्यसन मुक्ति के प्रत्याख्यान भी हुए। 12 आयम्बिल के प्रत्याख्यान सुजाताजी नागौरी ने लिया। अन्य कई त्याग प्रत्याख्यान हुए तथा मूर्तिपूजक संघ के आचार्य श्री निपुणरत्न सागरजी म.सा. आदि संतों ने विहार यात्रा के दौरान आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर से सुख-साता की पृच्छा की।

रात्रि में श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में फरमाया कि घर-लिबास को बदलना नहीं अपितु अपने आपको बदलना है, अपने स्वभाव को बदलना है। बड़े-बुजुर्गों के सामने कभी भी ऊँची आवाज में नहीं बोलना है। खाने के स्थान पर क्रोध नहीं करना। बड़ों को नित्य प्रणाम करना है। सम्पत्ति के कारण संबंध में दरार पैदा नहीं करना है। प्रभु भक्ति के साथ दिन की शुरुआत करनी है। इससे हमें नई ऊर्जा मिलती है। दीन-दु:खी, जरूरतमंदों की सेवा में तत्पर रहना चाहिए। उपस्थित भाई-बहिनों ने प्रतिदिन 15 मिनट प्रभु भक्ति करने का संकल्प लिया। अन्य कई संकल्प हुए।

20 जून 2023, नाराणी, प्रतापगढ़। परम प्रतापी आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का मांगीलालजी कुमावत के निवास ग्राम नाराणी में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमें दुनिया को नहीं अपने आपको देखना है। एकमात्र अपनी आत्मा को देखने वाला कभी अशांत और दु:खी नहीं होता है। हर व्यक्ति में गुण एवं दोष दोनों पाए जाते हैं, लेकिन हमारी दृष्टि दूसरों के दोषों की ओर नहीं अपितु गुणों की ओर होनी चाहिए। इन्द्रियों से मिलने वाला सुख, दु:ख की जड़ है। आत्मा का सुख सच्चा सुख है।

शीलव्रत का प्रत्याख्यान मानमलजी मनोरमादेवी गोदावत ने लिया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगल पाठ किया।

15 मिनट स्वाध्याय, धर्म आराधना का नियम कई भाई-बहिनों ने लिया। व्यसन मुक्ति के संकल्प कई ग्रामीण भाई-बहिनों ने लिये। तेला का प्रत्याख्यान दिनेशजी गाँधी, केसुन्दा ने लिया। 7 वर्षीय मानस गाँधी ने उपवास का प्रत्याख्यान लिया। 12 एकासन, 12 आयंबिल के प्रत्याख्यान भी हुए। नाराणी में कुमावत समाज और कुम्हार समाज एवं जैन समाज की सेवा भक्ति सराहनीय रही।

21 जून 2023, केसुन्दा, प्रतापगढ़। विश्व वंदनीय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का नाराणी से महावीर भवन, केसुन्दा में जय-जयकारों के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। केसुन्दा जैन समाज के अलावा अन्य जैनेत्तर समाज के भाई-बहिन अगवानी में उपस्थित थे। **''भक्तों के भगवान की, जय बोलो गुरु राम की''**, **''कठिन क्रिया की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार''** आदि गगनभेदी नारे पूरे वातावरण को

गुँजायमान कर रहे थे। राजस्थान सरकार के सहकारिता मंत्री श्री उदयलालजी आँजना के निवास स्थान पर धर्म सभा नवकार महामंत्र के जाप से प्रारम्भ हुई। धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्य देशना में फरमाया कि **''जिन का मन सदैव धर्म में लगा रहता है, उसे मानव क्या देवता भी नमस्कार करते हैं। सुविधा प्राप्ति की कामना से मन अशांत रहता है। सुविधा, दुविधा को उत्पन्न करने वाली है। धर्म कहता है कि कष्ट को सहना सीखो। कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना होगा, तभी मंजिल मिलेगी। हिम्मत है तो क्या लंका दूर और कोई कार्य में सफलता दूर नहीं। प्रयत्न करने वाला कभी हार नहीं मानता है। धर्म के नाम पर कभी हिंसा नहीं हो सकती। धर्म द्वन्द्व और दुविधा को दूर करता है, सही जीवन जीने के रास्ते दिखाता है, मन को संतुष्टि प्रदान करता है। ईमान और सच्चाई ही धर्म है।''**

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि प्रतिदिन 15 मिनट बच्चों को सुसंस्कार अवश्य दें ताकि कठिन परिस्थिति में भी संभलकर रह सके।

शासन दीपिका साध्वी श्री विजेताश्रीजी म.सा. ने ***''गुरुचरणों में शीश झुकाते हैं''*** स्तवन प्रस्तुत किया। महिला मंडल एवं बालिका मंडल केसुन्दा ने ***''आज गुरु का स्वागत है''*** गीत प्रस्तुत किया। नीमच बालिका शिविर की बहिनों ने ***''गुरु ने राह दिखाई, अभी चलना है बाकी''*** गीत प्रस्तुत कर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

शीलव्रत का प्रत्याख्यान दिनेशजी निर्मलाजी गाँधी ने लिया। वर्ष में 100 एकासन विरलजी गाँधी ने लिया। चौविहार- इन्द्राजी गाँधी। रात्रि भोजन त्याग पवनजी गाँधी सहित कई अन्य त्याग-प्रत्याख्यान हुए। 12 आयंबिल, 12 एकासन, 12 उपवास का नियम कई भाई-बहिनों ने लिये। 7 वर्षीय बालक मानस गाँधी ने बेले के तप का प्रत्याख्यान किया। 9 वर्षीय बाल हेमंत चौधरी ने उपवास का प्रत्याख्यान लिया।

नीमच बालिका शिविर की बहिनों को उपाध्याय प्रवर ने जीवन जीने की कला पर हृदय स्पर्शी उद्बोधन दिया। दोपहर में बहुश्रुत वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने जिज्ञासुओं के प्रश्नों का आगमसम्मत सटीक-सुंदर समाधान उपस्थित सभा में प्रदान किया।

इस अवसर पर कई भाई-बहनों ने आत्महत्या नहीं करने, माह में 4 दिन चौविहार, जुलाई माह में 1 आयंबिल करने का प्रत्याख्यान लिया। मध्य प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री ओमप्रकाशजी संकलेचा ने उभय गुरु भगवंतों के पावन दर्शन कर विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

अपने आप को देखो

22 जून 2023। प्रातः प्रार्थना गगनमुनिजी म.सा. ने करवायी। तत्पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि **''अपने आपको अपने आपसे देखो। हम दूसरों के काम को देखते हैं तो जल्दी ही पता लगा लेते हैं, उसकी समस्या बता देते हैं लेकिन खुद की समस्या का पता नहीं लगा सकते, यह सत्य है। हमें अपनी समस्या को अलग हटकर देखना चाहिए। नहीं देखेंगे तो उसी प्रवाह में बहते जाएँगे जिसमें जा रहे हैं। हमें अपने आपको दूर हटकर देखने की आदत होनी चाहिए। तीसरी आँख जो है**

वो अन्दर की ओर खुलती है, जिससे हमें दिख जाएगा कि हमारे अंदर क्या हो रहा है? वह तीसरी आँख देखती है। जिसको जगाना जरूरी है, जो हमें खुद को देखना चाहिए कि मैंने क्या किया है? हम अपनी आत्मिक शक्ति को जाग्रत करें। हर व्यक्ति को यह सोचना है कि वह मेरे जीवन का अंतिम दिन है। इसलिए आज पर ही जोर देना चाहिए।''

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि गृहस्थ के मन में भी पहले सभी के लिए दया रहती थी। पूरी दुनिया में जैन फूड मिलता है; ईसाई फूड, सिक्ख फूड आदि नहीं। त्याग, त्याग को बढ़ाता है, भोग, भोग को बढ़ाता है। त्याग-तपस्या करेंगे तो ही जैन होने की पहचान होगी।

शासन दीपिका साध्वी श्री राजुलश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-5 ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। महिला मण्डल ने *''राम राम जय गुरुवर राम, गुरुवन्दन करते झुक-झुक कर''* भाव गीत प्रस्तुत कर सबको भाव-विभोर कर दिया।

7 वर्षीय बालक मानस गाँधी सुपुत्र शीतलजी गाँधी, केसुन्दा ने तेले तप का प्रत्याख्यान लेकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

परम गुरुभक्त श्री प्रदीपजी मुणोत, ब्यावर के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति एवं संदेश प्राप्त किया। केसुन्दा संघ की धर्मनिष्ठा सराहनीय रही। दोपहर में श्री गगनमुनिजी म.सा. ने ज्ञानवृद्धि के बोल विस्तार से समझाए। नीमच सिटी व उपनगरों के संघों की क्षेत्र स्पर्शने की विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत हुई।

आचार्य भगवन् का नीमच में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश

23 जून 2023, चौकन्ना बालाजी, नीमच। विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का केसुन्दा से चौकन्ना बालाजी, नीमच में मंगल पदार्पण के साथ ही सभी की कल्पना साकार हुई। सबके मन में अपार हर्ष के साथ जयनाद हुआ कि **''राम गुरु पधारे है, नई चेतना लाए हैं।''**

''कठिन क्रिया की जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार'' आदि नारों से सम्पूर्ण मार्ग को गूँजायमान करते हुए अपार जनमेदिनी अपने आराध्यदेव के नीमच प्रवेश में उपस्थित हो गद्‌गद् हो गई। गुरु-भगवन्तों आदि ठाणा का शेखरजी अक्षिलजी बम्ब के स्टेशन रोड स्थित निवास में मंगलमय पदार्पण हुआ। नीमच व मालवा क्षेत्रवासियों में अपार हर्ष और प्रसन्नता का वातावरण देखने को मिला।

विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी ओजस्वी, तेजस्वी अमृतवाणी में फरमाया कि **''गुरु दृष्टि प्रदाता है। अपने लक्ष्य को ऊँचा बनाओ, यदि कुछ महत्त्वपूर्ण पाना हो तो उसी अनुरूप लक्ष्य को निर्धारित कर उद्देश्य का निर्माण जरूरी है तथा उसी अनुसार पुरुषार्थ भी अतिआवश्यक है। ऊर्जा जागरण के लिए अपने लक्ष्य पर सदैव सतत् जागृति रखो। अपने लक्ष्य को समाज की सोच से मत तौलो। वही देखो जो स्वयं देखना चाहते हो। आकर्षणों में मत उलझो। अपनी दृष्टि, सोच एवं लक्ष्य को उच्च स्तरीय बनाओ एवं एकरूपता रखो।''**

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संघ के सरताज आचार्य भगवन् एवं ज्ञाननिधि उपाध्याय प्रवर आज नीमच पधारे हैं। इस स्वर्णिम अवसर पर भरपूर लाभ लेना है। यह अवसर जाते देर नहीं लगेगी। समय कैसे

निकलेगा पता ही नहीं चलेगा। संयम साधना को जीवन में आगे बढ़ाएँ। जीवन में बदलाव लाने का प्रयास करें। साध्वी श्री प्रभावनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मण्डल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। संघ मंत्री ने आचार्य भगवन् के आगमन को अनन्त पुण्यवानी का उदय बताया। भोजन करते समय टी.वी. व मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का संकल्प कई भाई-बहिनों ने लिया। श्री गगनमुनिजी म.सा. ने लोगों के प्रश्नों का सटीक समाधान दिया।

अपने अन्तर्मन का सतत् अवलोकन करें। -उपाध्याय प्रवर

24 जून 2023, वर्धमान जैन स्थानक, नीमच सिटी, जैन दिवाकर स्वाध्याय भवन। साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का स्टेशन रोड नीमच से वर्धमान जैन स्थानक, नीमच सिटी में जय-जयकारों के साथ भव्यातिभव्य मंगल पदार्पण हुआ। सभी सम्प्रदाय के लोग अगवानी हेतु लालायित दिखे। जैन मांगलिक भवन में आयोजित विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपने ओजस्वी प्रवचन में फरमाया कि अशांति का कारण है काम को अधूरा रखना, साधना में आनंद अहोभाव रहना चाहिए। तल्लीनता भी होनी चाहिए। साधना का उद्देश्य मन की पवित्रता हो। किसी के प्रति आसक्ति नहीं होनी चाहिए। सम-विषम न होकर समभाव रखे। उपेक्षा को सहना सीखें। लोग पूछें या नहीं पूछें, फिर भी प्रसन्न रहें। धर्माराधना का भाव होना चाहिए। अपनी अंतरंग की भावना की परीक्षा करें, क्योंकि यही सच्चाई का बोध कराने वाला है। तपस्या में भावना होनी चाहिए कि शरीर के प्रति आसक्ति, मोह घटे। दान, शील, तप की कीमत तब है जब उसके साथ पवित्र भावना का सम्बल हो। हमारी अंतर भावना जीवन को बदलने वाली है। धर्म क्रिया करने का उद्देश्य क्षमा बढ़े अभिमान घटे एवं समभाव में वृद्धि हो, होना चाहिए। अपनी अर्न्तआत्मा को शुद्ध बनावें।

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि मन की गन्दगी को दूर कर मन की पवित्रता बनाए रखें। कल दया करने का लक्ष्य रखें, जिसमें प्रत्येक परिवार की सहभागिता जरूरी है। साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रियाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने *''गुरुवर पधारो, हृदय में विराजो''* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती स्वाति गौरवजी चौपड़ा ने कहा कि गुरु-भगवंतों के पधारने से नीमच की धरती पावन हो गई है। भाजपा जिलाध्यक्ष पवनजी पाटीदार ने कहा कि पाँच माह पूज्य गुरुदेव का सतत् सान्निध्य एवं मार्गदर्शन पाकर जन-जन का जीवन नैतिकता से ओत-प्रोत होगा। स्थानीय मंत्री ने आचार्य भगवन् को अलौकिक शक्ति सम्पन्न निरूपित किया। अध्यक्ष एवं वीर दादा श्री नाहरसिंहजी राठौर ने गुरुदेव के चरणों में विनती रखी कि नीमच चातुर्मास पश्चात् पुन: नीमच सिटी पधारें। कई भाई-बहिनों ने 12 एकासन, 12 आयम्बिल, 12 उपवास व 10 मिनट प्रतिदिन नवकार महामंत्र जाप करने का संकल्प लिया।

दोपहर में उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि हुए। बाहर के दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा। वर्धमान जैन स्थानकवासी श्रावक संघ, नीमच सिटी की धर्मनिष्ठा एवं सेवा-भक्ति प्रशंसनीय रही।

25 जून 2023, सुन्दरम् टॉकीज, नीमच सिटी। आराध्यदेव आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का वर्धमान जैन स्थानक में जय-जयकारों के साथ सुन्दरम् टॉकीज, मनोजजी खिंदावत का निवास, नीमच सिटी पधारना हुआ। रविवारीय समता शाखा में समता आराधना करने हेतु अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। विशाल धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए आगम मर्मज्ञ, सिरीवाल प्रतिबोधक आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म मेरा है, मैं ही धर्म हूँ। अपने मन की परीक्षा करो। मन ही शांति एवं अशांति दिलाने वाला है। वही बात सुनो जिससे मन में संवेग आए। आवेश एवं उद्वेग की बात को वहीं रोक दो। अपनी समझ को विकसित करें। गलत बात संस्कारों की होती है, मन की नहीं। जिसकी सहनशक्ति कम होती है, उसी को क्रोध आता है। अपने आपको तौलो कि मेरा मन कितना सधा हुआ है। किसी के कहने से बुरा लगता है तो यह हमारी कमी का परिचायक है। मन को क्रोध अग्नि का ईंधन मत बनाओ। कैसी भी विपरीत बातें एवं परिस्थिति आ जाए, मन उद्वेलित नहीं होने देना है। यही आध्यात्मिक साधना है।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेशमुनिजी म.सा. ने अपनी अमृतमयी वाणी में फरमाया कि **''सफलता केवल लक्ष्य का प्राप्त हो जाना नहीं है। यह केवल एक आम परिभाषा है, जो सत्य नहीं है। सफलता अपने पुरुषार्थ का शत-प्रतिशत शुद्ध भावना के साथ देना है। सफलता-असफलता का मापदण्ड भीतर के पुरुषार्थ पर आधारित है। कार्य-पद्धति हमारी सद्भावना एवं लक्ष्य के अनुरूप ही होनी चाहिए। सफलता अंतिम छोर नहीं, पड़ाव मात्र है। यह सुकून एवं शांति देने वाला तथा पूर्णता का बोधक है। पुरुषार्थ की परिपूर्णता ही सफलता का पहला पड़ाव है। यह आगे बढ़ने के लिए नई ताकत देने वाला है। लक्ष्य हमारी ताकत से सदैव ऊँचा रहना चाहिए ताकि इन दोनों में एक खिंचाव रहे, जिससे हमारी ताकत बढ़ सके एवं एक प्रेरणा का कार्य करे। पुरुषार्थ यथार्थ होता है। उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए जमीनी स्तर (यथार्थ) पर कार्य करें। सिर्फ कल्पना के सागर में न जीएँ। शुद्ध दर्पण में अपने आपको देखने की आवश्यकता है कि क्या मेरा मन शुद्ध है या किसी के प्रति द्वेष की भावना है।''**

श्री गगनमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि श्रद्धा अटूट होनी चाहिए। प्रदर्शन आत्मदर्शन में बाधक है। कल्पना में जीने के बजाय यथार्थ में जीना चाहिए। सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र होंगे तब ही मोक्ष संभव है। मोक्ष बंध को काटते ही मोक्ष यहीं पर है। संकल्प करो, सुखी रहना सीखो। वर्तमान में सुख, शांति एवं समभाव में जीना जरूरी है। ज्ञान के अभाव में अर्थ का अनर्थ हो सकता है। ज्ञान नवतत्त्व का बोध कराने वाला है।

साध्वी मण्डल द्वारा गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया गया। संघ मंत्री ने त्याग-तपस्या से जुड़ने की अपील की। कई भाई-बहिनों ने पौरसी, डेढ़ पौरसी, दो पौरसी, आयम्बिल, एकासन, बियासन, उपवास आदि के प्रत्याख्यान आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से ग्रहण किये। सामूहिक दया दिवस के आयोजन में 300 दया सम्पन्न हुई, जिसमें बच्चों से लेकर युवा, महिलाओं एवं बुजुर्गों आदि ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा. ने समीक्षण ध्यान प्रयोग विधि कराने के पश्चात् श्रावक के 14 नियम की विस्तृत व्याख्या की। श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने दया की विधि का विवेचन किया। दोपहर में कौन बनेगा धर्मवीर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्री नीरजमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा आदि हुए। 21 घण्टे के दया के आयोजन में भाई-बहिनों ने अपूर्व धर्माराधना की।

समझ में सुधार की जरूरत है

26 जून 2023, समता भवन, जवाहर नगर, नीमच। प्रातः मंगलमय प्रार्थना के बाद आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''पुण्य आत्माओं के लिए धर्म ही राह है और धर्म ही चाह है, क्योंकि अन्य उसने जो कुछ भी प्राप्त किया उससे उसको शांति नहीं मिली। बहुत पैसे कमा लिये, बिल्डिंग बना ली, बहुत बड़ा बंगला बना लिया, फिर भी शांति नहीं है। व्यक्ति दौड़ता है कि जितना कमाया उससे और ज्यादा कमा लूँ। भारत तो ऋषि-मुनियों की भूमि है। शांति यहाँ का प्राण है, किन्तु बीच के युग में हमने अपनी संस्कृति को भुला दिया और आज भी भुला रहे हैं। आज पाश्चात्य संस्कृति हावी हो रही है। आज दिमाग पर सिर्फ पैसों का अधिकार है। आदमी के पास कितने ही पैसे हो जाएँ, किन्तु तृप्ति नहीं होती। हमने अपनी संस्कृति को भुलाकर अशांति को प्राप्त किया। हमारी समझ में सुधार की जरूरत है।''**

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हम जगत् की चिंता छोड़ें और स्वयं की ओर ध्यान दें। हमें समस्या की लिस्ट नहीं साधना की लिस्ट बनानी है। बाल सफेद हैं उनकी चिन्ता है, पर मन काला है उसकी चिंता नहीं है।

साध्वी श्री चंदनाश्रीजी म.सा., साध्वी अर्पनाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री रश्मिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अनुरागश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने ***''तूं कितना प्यारा है, जग उजियारा है''*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा में उपस्थित कई भाई-बहिनों ने एक गिलास प्रतिदिन अचित्त पानी पीने का संकल्प लिया। दोपहर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तर आदि हुए।

देवी-देवताओं के पीछे दौड़ने की जरूरत नहीं

27 जून 2023। प्रातः मंगलमय प्रार्थना की मधुर स्वर लहरियों से सम्पूर्ण माहौल धर्ममय बन गया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''मनुष्य जीवन में आत्मा से परमात्मा बनने का सामर्थ्य है। सृष्टि में सबसे उत्तम प्राणी मनुष्य है। जिनका मन सदा धर्म में लगा रहता है उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म में अपना मन लगा लें तो देवी-देवताओं के पीछे दौड़ने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। भगवान महावीर के सिद्धान्तों को जिसने जान लिया वह जानता है कि देवता किसी को कुछ नहीं दे सकते। हमारा पुण्य योग ही हमारे काम आएगा। हमारा पुण्य योग नहीं होगा तो हम कुछ भी प्राप्त करने वाले नहीं है। हम कितनी भी अपेक्षाएँ करें, किन्तु कुछ भी मिलेगा नहीं। धर्म एक ऐसा कल्पवृक्ष है जिसकी आराधना करने से कोई अभाव नहीं रहेगा। आपके मन में आकांक्षा, अपेक्षा धर्म पैदा नहीं करता। धर्म करने से सुविधा न भी मिले तो भी मन में पीड़ा नहीं होती।''**

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिसकी जैसी रुचि हो उसको अपना योग पकड़ना चाहिए, योग को

साधना चाहिए और उसमें आगे बढ़ना चाहिए। दूसरी चीजों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें कोई दूसरा नहीं बल्कि हम स्वयं ही गुणवान बना सकते हैं। जिनशासन सर्वकल्याण चाहता है, इसलिए वह बहुत सारे रास्ते बताता है।

स्वयं का अध्ययन करना स्वाध्याय है

28 जून 2023। मंगलमय प्रार्थना से दिन का आगाज हुआ। तत्पश्चात् सदैव ही भाँति आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ फरमाया।

धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को अमृतवाणी का श्रवण कराते हुए तरुण तपस्वी आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''मात्र पुस्तक पढ़ना स्वाध्याय नहीं है। स्वयं का अध्ययन करना स्वाध्याय है। स्वयं का चेहरा हमें दिखता नहीं है, उसको देखने के लिए दर्पण के सामने जाते हैं। जैसे दर्पण हमें अपना चेहरा दिखा देता है वैसे ही स्वाध्याय जीवन का दर्पण है। ज्ञान उपार्जन में अहंकार बाधक है। ज्ञान में ज्ञानावरणीय के उदय से बाधा होती है और मोहकर्म के उदय से अहंकार होता है। अहंकार नहीं होगा तो सत्य को समझने की कोशिश होगी।''**

श्री हर्षितमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारा लक्ष्य रहना चाहिए कि हर चीज, हर त्याग, हर योग में हम सूक्ष्म की ओर जाएँ, क्योंकि सूक्ष्म में निर्जरा होती है, आनंद आता है। जिसका लक्ष्य सूक्ष्मता का होगा वह हर समय समभाव में रहेगा।

साध्वी श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. आदि ने ***''आया आया रे नीमच शहर नाथ, गुरु रामलालजी''*** गुरुभक्ति भजन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा से शासन दीपक श्री निर्वाणमुनिजी म.सा. का मण्डिया (कर्नाटक) से 2100 किमी. तथा श्री सुमितमुनिजी म.सा. का रतलाम से 135 किमी. का विहार करते हुए गुरुचरणों में जय-जयकारों के साथ पधारना हुआ। नीमच, मालवा क्षेत्र में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई।

चातुर्मासिक काल में बाल डाई नहीं कराने का संकल्प

29 जून 2023। प्रातः मंगलमय प्रार्थना एवं आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से मंगलपाठ श्रवण कर उपस्थित श्रद्धालु भाव-विभोर हो गए। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में भगवान महावीर के अमृतवचनों से सभी को तृप्त करते प्रशान्तमना आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''जीवन में कुछ प्रकट करने योग्य है, कुछ प्राप्त करने योग्य है तो वह धर्मभाव है। हवा का झोंका आने से पहले हम अपने आपको सावधान बना लें। अपने आपको त्याग, वैराग्य एवं संयम से जोड़ लें। बहुत सारे साधन जीवन में प्राप्त हो जाते हैं, किन्तु जीवन में धर्म प्राप्त होना बहुत कठिन है। मनुष्य जन्म की सार्थकता तब है जब हमें सुनने का अवसर हो, क्योंकि बिना सुने धर्म को नहीं जाना जा सकता। हम धर्मतत्त्व को नहीं जानेंगे तो पाप को ही आचार मान लेंगे और यह बहुत बार होता है। यदि प्रसन्नता का भाव हमारे मन में आता है तो उससे हमारे कर्मों का बंध होता है।''**

श्री निर्वाणमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि हमारा मन धर्म कार्य में अधिक लगता है या पाप कार्य में? इसका आत्मचिन्तन करें। आपश्रीजी ने धर्म क्रिया की शुद्ध विधि की जानकारी प्रदान की। कई भाई-बहिनों ने

चातुर्मास काल में बाल डाई नहीं कराने का संकल्प लिया। साध्वी श्री किरणप्रभाश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। अनुकम्पा दिवस के रूप में नवकार जाप एवं सामायिक करने एवं अधिक से अधिक धर्माराधना करने का संकल्प अनेक लोगों ने लिया।

युगनिर्माता आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का चातुर्मासार्थ जैन स्थानक भवन में सादगीपूर्ण रूप से मंगल प्रवेश

30 जून 2023। प्रातः समता भवन, जवाहर नगर में मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् त्रि-दिवसीय स्वाध्यायी शिविर का आगाज हुआ। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में परम प्रतापी आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''सामायिक स्थिरता रूपं हमारी स्थिरता बहुत जरूरी है। स्थिरता नहीं बढ़ेगी तो सामायिक का लाभ नहीं मिलेगा। यदि हमारे भीतर स्थिरता नहीं है, चंचलता-चपलता है तो शांति का स्वरूप मिलना मुश्किल है। हमारे मन में भय होता है और भय के कारण हमारा मन चंचल हो जाता है। जैसा तुम्हारा आंतरिक रूप है वैसा ही बाहर का रूप होना चाहिए और जैसा बाहर का रूप है वैसा ही अंदर का रूप होना चाहिए। जब अंदर-बाहर एक ही रूप है तो हमें कोई चिंता नहीं सताएगी। शरीर कई बार सजा दिया, पर इससे आत्मा का सौंदर्य नहीं निखरेगा। जितना दिखावे में जाएँगे उतना ही भय हमारे भीतर पनपेगा। आज हम शरीर और धन को महत्त्व देते हैं या धर्म को? आत्मचिंतन करें।''**

श्री निर्वाणमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि पाँच इन्द्रियों में आसक्त बनना नहीं है अपितु इनसे निर्लिप्त रहना है। साध्वी श्री किरणप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने ***''पलकों में मेरे हर पल गुरु राम ही समाए हैं''*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत कर सम्पूर्ण माहौल को राममय बना दिया। सभा में उपस्थित भाई-बहिनों ने 15 मिनट प्रतिदिन स्वाध्याय करने का नियम लिया। बाहर के दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

स्वाध्यायी शिविर में साध्वी श्री अर्पणाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री स्तुतिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुरुचिश्रीजी म.सा., साध्वी श्री सुभगश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने जैन सिद्धान्तों, आगमिक धारणाओं व शुद्ध धार्मिक क्रियाविधियों की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। दोपहर में आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आगम वांचनी, ज्ञानचर्चा एवं प्रश्नोत्तरी आदि कार्यक्रम हुए।

दोपहर में मंगलपाठ प्रदान करने के पश्चात् सायं लगभग 4:05 बजे बाद युगपुरुष आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-8 का बिना पूर्व घोषणा के अत्यंत सादगीपूर्ण रूप से जैन स्थानक, जैन कॉलोनी, राठौड़ परिसर के पास भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश हुआ। **''भले पधारो आगमज्ञाता, हम सब पूछे सुख और साता''**, **''संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त है''** आदि नारों से सम्पूर्ण मार्ग गूँज रहा था। सम्पूर्ण मार्ग में आचार्य भगवन् की एक झलक पाने को जनता उमड़ रही थी। जैन स्थानक भवन में मंगल प्रवेश के पश्चात् सम्पूर्ण प्रवेश यात्रा धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने सिद्ध स्तुति करते हुए अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''चातुर्मास प्रसंग नजदीक है। जितना हो सके त्याग, तपस्या, धर्माराधना करें, किन्तु जीवन में भगवान महावीर के इस सूत्र को आत्मसात् करें- प्राणी मात्र के साथ हमारा मैत्रीभाव हो। सभी आत्माओं को**

अपनी आत्मा के समान समझें। सामने वाले के दोष एवं गुणों को स्वीकार कर लेना। भाई-भाई का बँटवारा हो सकता है, लेकिन मित्रता का बँटवारा नहीं हो सकता।''

मंगलपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई। इस अवसर पर शासन दीपिका साध्वी श्री जयश्रीजी म.सा. आदि साध्वीवर्याएँ सभा में सुशोभित थी।

वर्षों की तमन्ना पूर्ण हुई, नीमच की माटी धन्य हुई।

इतने महान अलौकिक महापुरुष के इतने सादगीपूर्ण चातुर्मासिक मंगल प्रवेश को देखकर जनता अभिभूत हो गई।

बीकानेर, पिपलिया कलां, नीमच, बड़ीसादड़ी, डूंगला, राजनांदगाँव, रतलाम, बाभुलगाँव, इन्दौर, निम्बाहेड़ा, हैदराबाद, जावरा, बेंगलुरु, मैसूर, अमेरिका, केसुन्दा, जावद, छोटीसादड़ी, गणेशपुरा, ब्यावर, चेन्नई, भीलवाड़ा, मंदसौर, दुर्ग, नाराणी, जलोदिया, केलुखेड़ा, चित्तौड़गढ़, सूबी आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने गुरु दर्शन सेवा का लाभ लिया।

तपस्या सूची	
आजीवन शीलव्रत	श्रीलालजी जशोदाबाई आँजना, अनिताजी मुणोत-ब्यावर, सुरेशजी अंगूरबालाजी गांधी-केसूंदा, सागरमलजी सहलोत-निम्बाहेड़ा, मालचंदजी शांतिदेवी लालानी-आसाम, राकेशजी राजकुमारीजी मारू, राजमलजी सहलोत-निकुंभ
पक्की पौरसी	151 - ललिताजी लोसर-भीलवाड़ा
पक्की नवकारसी	100 - शोभाजी अभाणी, दिव्याजी जैन, हेमलताजी मोगरा, संतोषजी सोनी
वर्षीतप	द्वितीय का पच्चक्खाण - स्नेहलताजी कांठेड़
उपवास	14 - सरोजदेवी आशीषजी कांठेड़ 8 - भावना अरविंदजी बया (आगे जारी) 5 - अंजना पोखरना (आगे जारी)

- महेश नाहटा

❀❀❀

:: धोवन ::

-आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

मैं कह दूँ घी के बजाय आज पानी महंगा हो गया है। ऐसा है भी मैंने एक दिन विचार करते हुए संतों से कहा था कि थोड़ा पुरुषार्थ करना पड़ेगा, परीषह सहन करना पड़ेगा। जिन घरों में धोवन-पानी उपलब्ध न हो और वे भावना भावें- म.सा. गोचरी कर लो, तो टाल देना चाहिए धोवन नहीं है तो फिर गोचरी के लिए अभी अवसर कहाँ है? धोवन नहीं है तो, रोटी का क्या करें? धोवन होगा तब देखेंगे। फिर देखो स्थिति सुधर जाएगी। कई लोग त्याग रखते हैं कि कच्चा पानी नहीं पीएँगे। पर क्या करते हैं- लौंग पीस कर डाल देते हैं, त्रिफला डाल देते हैं। पर यह धोवन नहीं है। यह परम्परा शुद्ध नहीं है। जो धोने से बनता है वह धोवन है क्योंकि धोने से पूरे पानी में आलोड़न होता है, पूरे पानी का स्पर्श हो जाता है, अत: वहाँ पूर्णतया निर्जीव होने की संभावना रहती है। इस प्रकार आप स्वयं पीते हैं तो कभी सहज रूप में संतों को भी प्रतिलाभित करने का अवसर प्राप्त हो सकता हैं।

❀❀❀

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

CONTRIBUTING TOWARDS THE CANCER TREATMENT

PATIENT ROOM

RECEPTION HALL WITH PARENTS' PHOTO

RK Sipani and Daga Family donated a 390 bed charitable hospital for the poor and needy at KIDWAI Memorial Institute of Oncology.

The block was inaugurated by Shri Kumaraswamy, the honourable Chief Minister of Karnataka on 22nd Dec 2018.

We look forward to contributing to a better world with our upcoming charitable ventures.

RK Sipani Foundation

#439, 18th Main, 6th Block, Koramangala, Bangalore - 560 095
Contact: Prakash 9448733298, Sipani Office: 08041158525 | Email: sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

गौतम चन्द जैन, मुम्बई

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)
वाचनालय हेतु (केवल भारत में)	
वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में) 3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक समाचार	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
DURO RING LEAK PROOF SEAL TECHNOLOGY
Now with new M.R.O. Technology Resists high impact
LEAK PROOF
IS 15778 : 2007
CM/L NO : 2526149
ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE
cftri CERTIFIED
UV STABILIZED
LUCALOR FRANCE

FIRST TIME IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

www.shandgroup.com रक्षा जीवन भर की सुरक्षा www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।
प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक गौतम चन्द जैन के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100
प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh